

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४२



प्रबन्ध — निबन्ध — समालोचना

द्वितीय खण्ड : अनुप्रयुक्त अध्ययन

१११ मूल समीक्षा-इकाई

सम्पूर्ण आलोचनात्मक पुनर्पाठ

मूल कृतिकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४२

प्रबन्ध • निबन्ध • समालोचना

द्वितीय खण्ड : अनुप्रयुक्त समालोचना

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

अध्ययनक विधि

मूल पुस्तकक 'द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त अध्ययन' अन्तर्गत १११ समीक्षात्मक इकाईक अध्ययन एहि सम्पादकीय खण्डक विषय अछि। प्रत्येक प्रबन्धक प्रतिज्ञा, स्रोत, ऐतिहासिक साक्ष्य, आन्तरिक तर्क, आलोचनात्मक उपलब्धि आ प्रमाणगत सीमा स्वतंत्र जाँचल गेल अछि।

एहि सम्पूर्ण सम्पादकीय खण्डमे मूल अनुप्रयुक्त समालोचना १-१११क आलोचनात्मक पुनर्पाठ सुरक्षित अछि। एक सय एगारहू इकाईमे मूल लेखकक प्रतिज्ञा, ग्रन्थ-सन्दर्भ, तर्कक उपलब्धि आ सीमा अलग जाँचल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध : चारि ऐतिहासिक उपन्यासक सन्दर्भ.....	8
२. मिथिलाक बाढ़ि : धार, छहर आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व.....	10
३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति.....	12
४. मिथिलाक खोज : स्थलवृत्त, स्मृति आ अभिलेख.....	14
५. दूषण पञ्जी : वंशावलीक अभिलेख आ सामाजिक पुनर्पाठ.....	16
६. मिथिला आ संस्कृत : शास्त्रीय परम्परा, रंगमंच आ विश्वविद्यालय.....	19
७. मिथिलासँ पलायन : भूगोल, श्रम आ सामाजिक परिवर्तन.....	21
८. मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध : वंश, विवाह, दूषण आ सामाजिक स्मृति.....	22
९. 'कुसमा-सलहेस' : लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि.....	26
१०. 'अखियासल' : साहित्येतिहासक पुनर्पाठ आ समीक्षाक समीक्षा.....	28
११. 'हिआओल' : अनुमान, अभिलेख आ सामाजिक साहित्येतिहास.....	30
१२. केदारनाथ चौधरीक 'चमेली रानी' आ 'माहुर' : उपन्यास-द्वयक समीक्षाक समीक्षा.....	33
१३. सुभाषचन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' : कथा-शिल्प आ भाषा-विचारक आलोचना.....	35
१४. राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' : कविताक आवश्यकता आ प्रतिरोधक बिम्ब.....	37
१५. मुन्नाजीक 'प्रतीक' : विहनि कथाक बीआ, रूपक आ कथात्मक अर्थ.....	39
१६. सुजीतक 'जिद्दी' : संवेदना, स्त्रीक निर्णय आ कथारचनाक सीमा.....	41

१७. 'पाथरक नाव' आ 'बलानक बोनिहार ओ पल्लवी' : परिचय, पाठ-पञ्जी आ मूल्याङ्कनक अन्तर.....	43
१८. 'मैथिलीक किछु नव पोथी' : अनेक कृतिक आस्वादन आ समीक्षाक कसौटी	45
१९. 'सगर राति दीप जरय कथाक कथा' : संस्था-स्मृति आ आरोपक प्रमाण-विवेक	47
२०. डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' : लोकस्मृति, द्विभाषिक अध्ययन आ आलोचनात्मक प्रमाण.....	49
२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र : सैंतीस कृतिक अन्तर्सम्बन्ध आ बालपाठकक स्वाधीनता.....	52
२२. संस्कृतसँ मैथिली अनूदित तेरह पुस्तक : तुलनात्मक कसौटी आ अनुवादक प्रमाण.....	54
२३. जगदानन्द झा 'मनु'क 'माटिक बासन' : कारीगरी, पीढ़ीक संवाद आ कथाक अपूर्ण सामाजिक प्रश्न.....	56
२४. 'पाठक हमर पोथी किए पढ़थि' : आत्मप्रतिवेदन, पाठक-वितरण आ प्रमाणक प्रश्न.....	57
२५. 'सझिया रोपनि' : ४३ लेखकक ८६ विहनि कथा आ सम्पादनक कसौटी.....	59
२६. जगदानन्द झा 'मनु'क 'माटिक बासन' : दोसर आलोचनात्मक टिप्पणीक पुनर्परीक्षण.....	60
२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला : मिथिला चित्रकला, अनुवाद आ सामाजिक शिक्षाक कृतित्व.....	62
२८. पं. बाल गोविन्द 'आर्य' : वर्ण-प्रकरण आ स्वाधीन मैथिली व्याकरणक प्रश्न.....	64
२९. रमेशक 'कथा-समय' : विखण्डन, द्वन्द्व आ कथागत प्रमाणक समीक्षा.....	65
३०. उमेश पासवानक 'मुजरिम' : दोषारोपण, जाति-सत्ता आ लोकन्यायक प्रतिपाठ	67
३१. रा. ना. सुधाकरक 'दीयरि' : सीमा-भूगोल, स्त्री-अनुभव आ बहुपद्धतिगत आलोचना.....	69
३२. परमेश्वर कापड़िक कथा, पद्य आ नाट्य-संसार : समेकित आलोचनाक व्याप्ति आ सीमा.....	71
३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक : स्मृति, फिल्म, पुरस्कार आ साहित्यिक सार्वजनिकता.....	74
३४. केदारनाथ चौधरीक आत्मकथात्मक उपन्यासक पुनर्पाठ : फिल्मी शिल्प आ स्मृतिनिर्माण.....	76

३५. साहित्य अकादेमी युवा आ बाल पुरस्कार २०२२ : संस्थागत आलोचना आ प्रमाणक मर्यादा.....	77
३६. विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरी : भक्ति-पद, रागविधान आ पाण्डुलिपिक इतिहास.....	78
३७. 'विद्यापतिक पिआ देसाँतर' : पदावलीसँ रंगमंच धरि रूपान्तरणक समीक्षा.....	80
३८. विद्यापति सम्बन्धी प्रचलित दावाक परीक्षण : पहचान, पञ्जी आ लोकपरम्परा.....	81
३९. रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' : जनकाव्यक 'झारू' आ सार्वजनिक प्रतिरोध.....	83
४०. रामविलास साहुक 'रथक चक्का उलटि चलै बाट' : लघुपद्य, प्रकृति आ किसानक भाषा.....	84
४१. उमेश मण्डल जीक "निशुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह.....	86
४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस".....	86
४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस.....	87
४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन.....	87
४५. विदेहः लोगोः विद्यापतिः उगनाः मिथिलाः मैथिली.....	88
४६. 'बज्जिका गीत-संगीत' : समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा.....	89
४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग.....	90
४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. श्लेष बा कंक्नीट (आकार) कविता.....	90
४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरः.....	91
५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा).....	92
५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी.....	92
५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक.....	93
५३. बूच जीक कविताक माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन.....	94
५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्रीः मा प्रविश.....	94

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंगरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”.....	95
५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल.....	96
५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ.....	97
५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”.....	97
५९. नाट्य-नवग्रह.....	98
६०. मुन्नी कामतक ‘जिन्दगीक मोल’ आ ‘चुक्का’.....	98
६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण.....	99
६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाट्य-समीक्षा.....	100
६३. “बिदापत”: लोकनाट्य, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच.....	100
६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव.....	101
६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता.....	101
६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल.....	102
६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६).....	103
६८. विदेह-समानान्तर साहित्य आन्दोलन.....	103
६९. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श.....	104
७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६).....	105
७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग.....	105
७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक.....	106
७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि.....	106
७४. इन्फॉर्मेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान.....	107
७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र.....	108
७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष.....	109
७७. गङ्गेश उपाध्याय.....	109
७८. भामती (चतुःसूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन.....	110

७९. आत्मतत्त्वविवेकः एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन.....	111
८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन.....	111
८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन.....	112
८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत.....	112
८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”.....	113
८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”.....	114
८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”.....	114
८६. दूर्वाक्षत.....	115
८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”.....	115
८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४).....	116
८९. जगदीश प्रसाद मण्डल.....	116
९०. प्रेमशंकर सिंह.....	117
९१. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन.....	118
९२. मैथिलक वर्तमान समस्या.....	118
९३. विदेह सम्पादकीयसँ.....	119
९४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि ।.....	119
९५. “प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!”: स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल.....	120
९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा.....	121
९७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण.....	121
९८. केदार नाथ चौधरीक-अबारा नहितन.....	122
९९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम.....	123
१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम.....	123
१०१. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ क बहन्ने.....	124
१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह.....	124
१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा.....	125
१०४. नचिकेताक समीक्षा.....	126

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य.....	126
१०६. राम भरोस कापडि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि.....	127
१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन.....	127
१०८. रमानन्द झा 'रमण': कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा.....	128
१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" (१९११-१९९८).....	129
११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यिक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग.....	129
१११. गोपाल झा 'अभिषेक' क 'आउ स्वप्न साझी करी': साहित्यिक अनुशीलन	130

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध : चारि ऐतिहासिक उपन्यासक सन्दर्भ

प्रथम विस्तृत प्रबन्ध मायानन्द मिश्रक 'प्रथमं शैल पुत्री च', 'मंत्रपुत्र', 'पुरोहित' आ 'स्त्री-धन'क संयुक्त इतिहास-बोधक परीक्षण करैत अछि। समीक्षक पहिनहिये स्पष्ट करैत छथि जे चारू कृतिक सम्पूर्ण कथाविन्यास अथवा सामान्य साहित्यिक गुण-दोष तिनकर मुख्य विषय नहि; प्रतिपादित इतिहास-दृष्टि अध्ययनक केन्द्र अछि। एहि सीमांकनक महत्त्व अछि, कारण ऐतिहासिक उपन्यासकें इतिहासलेखनक प्रतिरूप मानि लेलासँ कल्पना, परम्परा आ प्रमाणक अन्तर बिलायल जा सकैत अछि। मूल प्रबन्धक अनुसार 'मंत्रपुत्र' पहिने मैथिलीमे रचल गेल, जखन कि आन कृतिक उपलब्ध संस्करण हिन्दीमे छल; एहि कारण भाषा-भिन्नता इतिहास-दृष्टिक तुलनामे बाधा नहि, बल्कि पाठान्तरक सम्भावित स्रोत बनैत अछि।

ग्रन्थकार द्वारा निर्मित कालानुक्रम आदिम शिकारी समाजसँ कृषि, पशुपालन, समाजक विभाजन, वैदिक जीवन आ सूत्र-स्मृतिकालीन मिथिला धरि बढ़ैत अछि। लेखक 'प्रथमं शैल पुत्री च'क भीतर अग्ना, शैला, कराली, महेश, पारवती, गणेश आ अनेक पीढ़ीक नामबोधमे इतिहासक क्रम देखैत छथि। कथा-समयक विशाल विस्तार रचनात्मक उपलब्धि होइतहुँ वास्तविक पुरातात्विक कालक्रम नहि मानल जा सकैत अछि। आरम्भिक समाजक भाषा, देव-कल्पना, कृषिक उद्भव आ गोत्र-विन्यास सम्बन्धी सन्दर्भक सत्यापन लेल पुरातत्त्व, अभिलेखशास्त्र, ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान आ तुलनात्मक लोकसाक्ष्य अनिवार्य अछि। उपन्यासक कथनक काल आ आजुक विद्वान द्वारा स्वीकृत कालयोजना भिन्न स्तरक तथ्य छथि।

'मंत्रपुत्र'मे ऋग्वेदक मण्डल-रचनाक अनुरूप आख्यान-विभाजनक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि। प्रबन्ध लेखकक अनुसार वैदिक गणसमाज, धेनु-संपत्ति, वर्ण-विभाजन, स्त्रीस्थिति आ राज्य-सत्ताक निर्माण साहित्यिक व्याख्याक माध्यम

बनैत अछि। संस्कृत पदक व्युत्पत्ति, वैदिक मंत्रक प्रसङ्ग आ ऐतिहासिक पात्रक कालानुक्रम एकसमान प्रमाण-श्रेणी नहि; वैदिक पदक साहित्यिक पुनर्रचना आ प्राचीन समाजक वास्तविक वर्णनक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही। 'पुरोहित'मे राजसत्ता आ यज्ञीय अधिकारक सम्बन्ध आ 'स्त्री-धन'मे विवाह, स्त्रीक स्वत्व आ प्रचलित विधिनियमक प्रश्न इतिहास-बोधकें सामाजिक अन्तर्विरोध दिस बढबैत अछि। मुदा प्रत्येक विधिक कथनक प्रत्यक्ष वैदिक, ब्राह्मण, धर्मसूत्र अथवा स्मृति-स्रोत जाँचला बिना निश्चित निष्कर्ष उचित नहि।

एहि प्रबन्धक उपलब्धि चारू उपन्यासकें एक व्यापक ऐतिहासिक कल्पनाशृंखलाक रूपमे पढ़बाक प्रस्ताव अछि। समीक्षकक पाश्चात्य इतिहासलेखनपर अविश्वास तिनकर वैचारिक स्थिति प्रकट करैत अछि, मुदा विद्वानक भौगोलिक उत्पत्ति अपने-आपमे कोनो निष्कर्षकें सत्य वा असत्य नहि बनबैत। आवश्यक अछि, स्रोतक गुणवत्ता, तिथि, पद्धति आ प्रतिपक्षक जाँच। साहित्यिक आलोचनाक अगिला चरणमे कथा-समय, प्रकाशन-वर्ष, मूल भाषाक संस्करण आ ऐतिहासिक दावाक चारि पृथक सारणी बनाओल जाय। तखने मायानन्द मिश्रक रचनात्मक इतिहास-निर्माण आ ऐतिहासिक प्रमाणक सीमा दुनू एक संग स्पष्ट होयत।

२. मिथिलाक बाढ़ि : धार, छहर आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

दोसर प्रबन्ध मिथिलाक बाढ़िक अनुभवकें प्राकृतिक विपत्तिक एकमात्र कथा नहि, जल-प्रबन्धन आ सार्वजनिक निर्णयक इतिहासक रूपमे देखैत अछि। कुशेश्वरस्थानक बरसाती जलजमाव, कोसी-गंडक, बाँध आ बैराजक व्यवस्था, नेपालपर दोषारोपण आ २००८क कोसी विपत्तिक प्रसङ्ग लेखकक तर्कक आधार बनैत अछि। मूल पाठमे पानि छोड़बाक संस्थागत अधिकार सम्बन्धी स्पष्ट दावे अछि; ओ दावे तात्कालिक प्रशासनिक स्थितिक सन्दर्भमे पठनीय छथि। देशसभक बीच औपचारिक समझौता, बैराजक परिचालन-नियम आ तकनीकी अभिलेखक जाँच बिना एहन अधिकार-विभाजनकें सभ काल लेल अपरिवर्तनीय तथ्य नहि मानल जाय।

लेखकक अनुभवक केन्द्र १९८७ आ २००८क बाढ़ि, कुशहा स्थल, तटबन्धक रखरखाव आ नदीमे बालू जमबाक समस्या अछि। एहिसँ प्रबन्धक एक सशक्त प्रश्न निकलैत अछि: नदीक स्वाभाविक प्रवाह, अवसाद-भार आ आबादीक सुरक्षा बीच सरकारी संरचनाक सम्बन्ध कोना निर्धारित हो? मुदा बैराजक निर्धारित 'जीवनकाल', दरारिक आकार, मरम्मतिक स्थिति आ विपत्तिक कारण-क्रम सन संख्या सम्बन्धी प्रत्येक दावे लेल अभियान्त्रिक प्रतिवेदन आ तिथियुक्त निरीक्षण आवश्यक अछि। एकटा बाढ़ि-वृत्तान्तमे स्थानीय अनुभूत सत्य आ जलविज्ञानक मापसँ निकलल निष्कर्ष समान नहि।

प्रबन्ध आपदा-घोषणाक विधि, केन्द्र-राज्यक आर्थिक उत्तरदायित्व आ डगमारा बैराज सन योजनाक इतिहास दिसो बढैत अछि। एहि अंशक उपलब्धि संरचनात्मक विफलताकें केवल 'अत्यधिक वर्षा'क परिणाम नहि मानि दीर्घकालीन नीति-निर्णयक सन्दर्भमे रखब अछि। संगहि, एक परियोजना नहि बनबाक कारण केवल राजनीतिक उदासीनता वा कोनो एक व्यक्तिक निर्णय ठहराबय सँ पहिने लागत, नदीक प्रवाह, भूमिसम्बन्धी अधिकार, तकनीकी विकल्प आ बहुदेशीय समन्वयक अभिलेख चाही। लेखकक लोकहितक आग्रह

एहि आवश्यक परीक्षणक विरोधी नहि, बल्कि ओकर उद्देश्य निर्धारित करैत अछि।

विद्यालयी अवकाश, स्थानीय आवागमन आ आपदाक अनुकूल जीवनचर्याक सिफारिशसभ बाढ़िक सामाजिक आयाम सामने अनैत अछि। नियमित जलमग्न क्षेत्रक सार्वजनिक जीवन वर्षाक सामान्य प्रशासनिक अवधारणासँ भिन्न अछि। एहि कारण बाढ़ि-समीक्षा केवल तटबन्धक पक्ष-विपक्ष नहि; लोकक आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, जलमार्ग आ स्थानीय ज्ञानक अध्ययन सेहो अछि। प्रबन्धक मुख्य महत्त्व राज्य-उत्तरदायित्व आ जनजीवनक समेकित प्रश्न उठेबामे अछि; सीमा नीति सम्बन्धी विविध तकनीकी दावाक पर्याप्त प्राथमिक साक्ष्य एकठाम नहि देल जायब अछि।

३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

तेसर प्रबन्ध लोरिक गाथाकें तिथिसहित राजवंशीय इतिहास नहि, मौखिक आख्यानक गतिशील परम्परा मानैत आरम्भ होइत अछि। ई आरम्भ आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ लोकगाथाक अनेक पाठ, स्थान-स्मृति आ गायन-परम्परा लिखित इतिहासक कठोर कालक्रमसँ भिन्न प्रकारँ अर्थ बनबैत अछि। लेखक गौरा, अगोरी, हरदीगढ़ आ अन्य स्थानक चर्चा करैत छथि आ लोरिकक विवाह, प्रेम, युद्ध आ परिवारक अनेक सूत्र गनबैत छथि। ई व्यापक कथा-संग्रह नायकक बहुक्षेत्रीय सांस्कृतिक स्मृति प्रकट करैत अछि; मुदा स्थाननाम उपस्थित रहब मात्रसँ वर्णित घटना ओहि ठाम ऐतिहासिक रूपसँ भेल, से सिद्ध नहि होइत।

मज्जरी, चनमा, जमुनी, सँवरू, भोरिक, देवसिया आ अन्य पात्रक उल्लेख गाथाक विस्तृत पात्र-जाल चिन्हबाक अवसर दैत अछि। लेखक विवाह, महुअरि आ युद्धक खण्ड अलग चिन्हैत छथि; एहि विभाजनसँ कथा मात्र वीरगाथा नहि, प्रेम, स्त्रीक इच्छा, पारिवारिक उत्तराधिकार आ सामुदायिक संघर्षक बहुविषयक आख्यान बनैत अछि। मुदा नारीक सक्रियता आ नायकक वीरत्वक सम्बन्ध सम्पूर्ण गाथामे एकरूप नहि मानब चाही। पात्रक निर्णय, गीतक कथनकर्ता, सार्वजनिक प्रदर्शनक प्रसङ्ग आ गायक समुदाय बदलला पर अर्थ सेहो बदलि सकैत अछि।

लोरिक 'लोकदेव' रूपमे पूजित होयबाक उल्लेख सामाजिक स्मृतिक विशेष आयाम अछि। लोकदेवता, जातीय गौरव, सामाजिक श्रेणीकरण आ वीरत्वक राजनीति एकरा परम्परामे अन्तर्सम्बद्ध भऽ सकैत अछि। तथापि गाथाक अन्तर्गत 'चमार', 'यादव' आ आन समुदाय सम्बन्धी पदसभक अर्थ ओहि युगक सामाजिक संरचना अनुसार जाँचब चाही; आजुक जातीय मानचित्रकें बिना परीक्षण प्राचीन आख्यानपर आरोपित करब नहि। प्रबन्धक गारि, विनोद आ

उन्मुक्त प्रेमभाव सम्बन्धी अवलोकन मौखिक काव्यक प्रदर्शन-परिप्रेक्ष्य बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

मूल पाठमे कनिंघम, गजेटियर आ ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'क उल्लेख लोकपरम्पराक लिखित साक्ष्य खोजबाक प्रयत्न देखबैत अछि। एहि स्रोतसभसँ प्राप्त कथनक वास्तविक पृष्ठ, तिथि, भाषा आ पाठान्तर मिलेला पर लोकगाथाक ऐतिहासिक प्रसारक तर्क विकसित होयत। एहि प्रबन्धक ठोस उपलब्धि मौखिकता, समाज आ सांस्कृतिक परिवर्तनकै लोरिक आख्यानक केन्द्रमे राखब अछि; सीमा विविध पारम्परिक रूपक पाठालोचनात्मक भेद पर्याप्त चिन्हित नहि होयब अछि।

४. मिथिलाक खोज : स्थलवृत्त, स्मृति आ अभिलेख

चारिम प्रबन्ध दश वर्षसँ अधिक कालक यात्राक आधारपर मिथिलाक अनेक स्थल, मूर्ति, अभिलेख, गढ़, मजार आ स्थानीय स्मृतिस्थानक सूत्र-वृत्तान्त प्रस्तुत करैत अछि। लेखक स्थानीय निवासी, मार्गदर्शक आ वाहनचालक लोकनिक सहयोग स्पष्ट रूपसँ स्वीकार करैत छथि। एहि स्वीकारक शोधगत मूल्य अछि, कारण स्थानीय स्मृति बिना बहुतो अलिखित स्थल एकटा औपचारिक सूचीमे प्रवेशो नहि करि पाबैत अछि। संगहि प्रत्यक्ष स्थल-दर्शन आ स्थानीय कथनकें पुरातात्विक निष्कर्षक समान दर्जा नहि देल जा सकैत अछि। मौखिक जानकारी स्थल-अध्ययनक दिशा दैत अछि; पत्थरक अभिलेख, मूर्तिक शिल्प आ स्तरीकृत उत्खनन अलग प्रमाण छथि।

गौरी-शंकर स्थान, भीठ-भगवानपुरक अभिलेख, हुलासपट्टी आ पिपराहीक मूर्ति, अन्धराटाढीक संग्रहालय, कमलादित्य स्थान, रखवारी आ पजेबागढ़ सन प्रविष्टिसभ रचनाक भौगोलिक विविधता देखबैत अछि। कतेको जगह वस्तुक वर्तमान अवस्थितिपर अनिश्चितता स्पष्ट रूपसँ दर्ज अछि, उदाहरणतः पजेबागढ़क बुद्ध-मूर्तिक बादक पता नहि भेटबाक टिप्पणी। एहन अपूर्णता इतिहास-लेखनक कमजोरी मात्र नहि; बिना प्रमाण भेटल वस्तुकें निश्चित वर्तमान संग्रहमे स्थापित करबाक बदला अनिश्चित मानव वैज्ञानिक सावधानी अछि। प्रत्येक स्थल लेल पुरातत्त्व विभागक पंजी, वस्तुक फोटो, अभिलेखक प्रतिलेख आ स्थाननिर्धारणक ठोस समन्वयक आवश्यकता अछि।

नन्दनगढ़, मंगलगढ़, कमला तट, जनकपुर क्षेत्र आ दरभंगाक साझा धार्मिक स्थलसभक प्रस्तुति मिथिलाक इतिहासकें एक धर्म वा एक शासकक वंशावली धरि सीमित नहि रखैत अछि। तथापि 'पालवंशीय', 'गांधारशैली' अथवा 'बौद्धकालीन' सन वर्गीकरणक निर्णायक प्रमाण बिना शब्दसभ अनुमानक श्रेणीमे रहत। स्थानीय मार्गदर्शकक उद्धरण, पुरातात्विक माप, कथित दन्तकथा आ ऐतिहासिक शिलालेखकें अलग स्रोतस्तम्भमे राखब अधिक उपयोगी होयत।

एहि यात्रा-संकलनक उपलब्धि भूगोल, लोकस्मृति आ मूर्त-अवशेषक बीच शोधक प्राथमिक स्थल-पञ्जी तैयार करब अछि। ओकर विकसित संस्करणमे प्रत्येक प्रविष्टि लेल स्थलनामक रूपभेद, वर्तमान प्रशासकीय क्षेत्र, स्थल-निर्देशांक, दर्शन-तिथि, छविक पहचान, तिथिक प्रमाण आ संरक्षण-स्थिति जोड़ल जाय। मूल पाठक तात्कालिक वेब-पता आ चित्र-संदर्भकेँ तत्कालीन अभिलेख मानब चाही, वर्तमान सुलभताक गारण्टी नहि। एहि सावधानीसँ 'मिथिलाक खोज' एक यात्रा-वृत्तान्तसँ वैज्ञानिक सांस्कृतिक मानचित्रणक आधार बनि सकैत अछि।

५. दूषण पञ्जी : वंशावलीक अभिलेख आ सामाजिक पुनर्पाठ

पाँचम प्रबन्ध दूषण पञ्जीक डिजिटल प्रति उपलब्ध करएबाक सामाजिक प्रतिक्रिया आ ताडपत्र अभिलेखक सूचना प्रस्तुत करैत अछि। लेखक पञ्जीक अनेक छवि उपलब्ध होयबाक दाबी करैत छथि आ मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे शब्दशः लिप्यन्तरणक उल्लेख करैत छथि। एहि कथनक महत्व अछि, कारण पञ्जीकै केवल विवाहक प्रशासनिक सूची नहि, सामाजिक स्मृतिक लिखित दस्तावेजक रूपमे पढ़बाक सम्भावना खुलैत अछि। तथापि ‘११ हजार तालपत्र छवि’ सन संख्या वास्तविक फाइल-पञ्जी, प्रतिकृति-दोहराव आ स्वतंत्र गणना सँ पुष्ट करब आवश्यक अछि। एक ही तालपत्रक अनेक छवि होयब आ स्वतंत्र अभिलेखक संख्या एक नहि।

मूल लेखक दूषण पञ्जीमे अन्तरजातीय विवाह, विधवाविवाह आ सामाजिक रूपसँ विवादित सम्बन्धक लिखित संकेत भेटबाक दावा करैत छथि। ई संकेत मिथिलाक विवाह-व्यवहारक एकरूपी ऐतिहासिक चित्रपर प्रश्न उठाबि सकैत अछि। मुदा मूल पाण्डुलिपिक अक्षर, तिथिक पद्धति, लिपिक त्रुटि, प्रतिलिपिक काल आ व्यक्तिक पहचान सत्यापित केलाक बादहि निश्चित वंशगत निष्कर्ष लिखल जाय। ‘दूषण’ स्वयं अभिलेखक ऐतिहासिक सामाजिक मूल्याङ्कनक पद होयब सम्भव अछि; आधुनिक शोधक लेल ओ शब्दक उपस्थिति दर्ज करब आ ओहि मूल्य-निर्णयकै स्वीकार करब अलग बात अछि।

प्रबन्धमे शाखा पञ्जी, मूलग्राम पञ्जी, पत्र-पञ्जी, उतेढ़ पञ्जी आ दरभंगा राजक आदेश सम्बन्धी अनेक डिजिटल स्रोतक सूची अछि। एहि सूचीकै अभिलेखीय शोधक दिशा-सूचक मानब फलदायी अछि; मुदा पुरान वेब-पता खुलि रहल अछि वा नहि, मूल प्रति कतऽ राखल अछि, तकरा लेल नया जाँच आवश्यक अछि। एकर आदर्श सम्पादनमे छवि-संकेतांक, पृष्ठ/तालपत्र क्रम, मूल मिथिलाक्षर प्रतिलेख, सन्देहास्पद अक्षरक चिह्न, देवनागरी लिप्यन्तरण, अर्थक टिप्पणी आ पाठान्तर सभ एक संग राखल जाय।

सामाजिक प्रतिक्रिया सम्बन्धी लेखकक व्यक्तिगत अनुभव मूल पाठक प्रमुख अंश अछि, मुदा विरोध करनिहार व्यक्तिक पहचान अथवा उद्देश्यक सम्बन्धमे एहि एकल विवरणकेँ सम्पूर्ण निष्कर्ष नहि मानल जाय। अभिलेखक प्रकाशन नागरिक-सुलभ ज्ञानक दिशा खोलैत अछि; संगहि ऐतिहासिक व्यक्तिक गौरव-अवमानना सम्बन्धी संवेदनशील वंश-दावासभक निष्पक्ष जाँचक जिम्मेदारी बढबैत अछि। एहि प्रबन्धक मूल्य पारम्परिक पञ्जी-सामग्रीपर स्वतन्त्र सार्वजनिक शोधक आग्रहमे अछि।

आरम्भिक पाँच समालोचनाक अन्तर्सम्बन्ध

पहिल पाँच प्रबन्ध मिथिलाक इतिहासक पाँच अलग प्रमाण-क्षेत्र खोलैत अछि: ऐतिहासिक उपन्यासक कल्पनाशील कालक्रम, बाढ़िक तकनीकी-प्रशासनिक इतिहास, लोरिकक मौखिक सामुदायिक स्मृति, यात्रा-आधारित स्थल-पञ्जी आ पञ्जी-प्रबन्धक हस्तलिखित अभिलेख। एहि सभक बीच एक सामान्य आग्रह अछि—प्रतिष्ठित इतिहासक बाहर रहल लोकज्ञान, स्थानीय अनुभव आ उपेक्षित वस्तु-पाठक सार्वजनिक अध्ययनमे लाएब। मुदा ओकर प्रमाण-विधि एक नहि: उपन्यासक दृश्य, अभियान्त्रिक प्रतिवेदन, गाथाक गायन, मूर्तिक प्रत्यक्ष अवलोकन आ ताड़पत्रक लेख अलग जाँचक माँग करैत अछि।

एहि बैचक समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि जे समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति कथित मुख्यधाराक प्रतिवाद मात्र नहि, साक्ष्यक श्रेणी, पाठान्तर आ अनिश्चितताक पारदर्शी प्रस्तुति बनबाक चाही। आलोचकक सामाजिक प्रतिबद्धता शोधक प्रयोजन बतबैत अछि; स्रोत, तिथि आ तर्कक जाँच ओकर विश्वसनीयता निर्धारित करैत अछि।

६. मिथिला आ संस्कृत : शास्त्रीय परम्परा, रंगमंच आ विश्वविद्यालय

छठम प्रबन्ध संस्कृतक संग मिथिलाक दीर्घ सम्बन्धकें जीवित शिक्षण-परम्परा आ संस्थागत उत्तरदायित्वक कसौटीपर देखैत अछि। आरम्भमे लेखक वाजसनेयी आ छान्दोग्य शाखाक नाम विवाहक अनुष्ठानमे बाँचल रहबाक उदाहरण दैत छथि। एहि अवलोकनसँ एक महत्त्वपूर्ण अन्तर खुलैत अछि: धार्मिक-सामाजिक पहचानक रूपमे परम्पराक नाम सुरक्षित रहि सकैत अछि, मुदा सम्बद्ध ग्रन्थक अध्ययन, उच्चारण आ दार्शनिक सन्दर्भ समुदायमे अल्प परिचित भऽ सकैत अछि। एहि अन्तरकें पाठ्य विश्वविद्यालयक एक शैक्षिक उत्तरदायित्व अछि; यद्यपि कोनो क्षेत्रमे शाखाक पूर्ण अध्ययन नहि होयबाक सामान्य निष्कर्ष व्यवस्थित क्षेत्र-सर्वेक्षणक बिना नहि निकालनाय उचित।

लेखक कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक भूमिका पर प्रश्न उठबैत छथि आ रामटेक स्थित संस्कृत विश्वविद्यालयक गतिविधिक तुलनात्मक उल्लेख करैत छथि। तुलना शिक्षण, प्रकाशन, पाठ-संस्करण आ जनसुलभ कार्यक्रमक संस्थागत मापदण्ड स्थापित करबाक अवसर दैत अछि। तथापि 'फलाँ विश्वविद्यालय काज कम करैत अछि' सन निष्कर्षक लेल समयसीमासहित पाठ्यक्रम, शोधप्रकाशन, शिक्षक-संख्या, पाण्डुलिपि सम्पादन, सार्वजनिक प्रशिक्षण आ आर्थिक संसाधनक अभिलेखक मिलान चाही। विभिन्न संस्थाक स्थापना-काल, विभागीय कार्यादेश आ वित्तीय क्षमता भिन्न रहि सकैत अछि। आलोचनाक वैधता तखने बढ़त जखन मूल्यगत अपेक्षा आ सत्यापित संस्थागत उत्पादनकें अलग दर्ज कएल जाय।

प्रबन्धक सबसे साहित्यिक रूपसँ समृद्ध प्रसङ्ग ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम' अछि। लेखक संस्कृत प्रहसनमे मैथिली गीतक उपस्थितिपर बल दैत छथि आ गुरु-शिष्य, अनंगसेना, असज्जाति मिश्र आ अन्य पात्रक कपटपूर्ण व्यवहारक संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत करैत छथि। एहि वर्णनमे संस्कृत नाटकक भीतर स्थानीय भाषिक गीतक प्रयोग सामाजिक व्यंग्य आ रंगमंचीय प्रभावक महत्त्वपूर्ण घटक बनैत अछि। मुदा गीतक वास्तविक भाषा, काव्यपाठ, अभिनय-

परम्परा आ सुरक्षित पाण्डुलिपिक पाठभेद देखला बिना 'प्रथम' अथवा 'विशिष्ट' सन ऐतिहासिक दावा निर्णयात्मक नहि होयत। व्यंग्यक शिल्प मंचगत अन्तरक्रिया, पात्रक स्वार्थ आ निर्णयक विडम्बनासँ निर्मित होइत अछि; केवल कथासार ओहि कलात्मक युक्तिक सम्पूर्ण प्रमाण नहि।

लेखक संस्कृत नाट्य-संस्करण, मैथिली-संस्कृत मिश्र पाठ, विश्वविद्यालयक पत्रिका आ परम्परागत नाटकक संग्रहक उल्लेख करैत छथि। एहि सामग्रीक वास्तविक सामर्थ्य पाण्डुलिपिक संरक्षणसँ आधुनिक पाठक धरि ज्ञानक प्रवाह देखबमे अछि। प्रबन्धक उपलब्धि मिथिलाक संस्कृत अध्ययनकें मृत प्रतिष्ठाक प्रश्न नहि, सक्रिय सम्पादन-शिक्षणक कार्य मानब अछि। सीमा पूर्ववर्ती प्रकाशनक वास्तविक संख्या, पाठनिष्ठा आ सम्पादकीय उपलब्धिक स्वतंत्र मूल्याङ्कन अपेक्षाकृत कम होयब अछि।

७. मिथिलासँ पलायन : भूगोल, श्रम आ सामाजिक परिवर्तन

सातम प्रबन्ध मिथिलासँ पलायनकेँ आधुनिक बेरोजगारीक एकल परिणाम नहि, दीर्घकालीन भौगोलिक आ राजनीतिक प्रक्रियाक रूपमे देखैत अछि। लेखक बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ बाहर गमनक परम्परा स्वीकार करैत छथि, मुदा नवीन कालमे गामक जनजीवनपर बढ़ल असरकेँ अलग पहिचान दैत छथि। सड़क, पुल आ परिवहनक विस्तारक उल्लेखसँ एक विचित्र द्वैध सामने अबैत अछि: संपर्क-सुविधा क्षेत्रक भीतर आर्थिक अवसर बढ़ाबि सकैत अछि, मुदा स्थानीय अवसर कम रहला पर ओ बाहरी श्रमबाजार धरि पहुँचब सेहो सरल बना दैत अछि। परिवहनक विकासकेँ पलायनक एकल कारण मानब एहि जटिल अर्थव्यवस्थाक सरलीकरण होयत।

प्रबन्ध मोरंग, कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली आ पंजाब-हरियाणाक बदलैत प्रवास-परिदृश्यक चर्चा करैत अछि। एहि क्रममे सीमा-पार आवागमन, उद्योगक भौगोलिक विस्तार, शिक्षाक अवसर आ श्रमिकक मांग सभक प्रभाव देखल जाइत अछि। लेखक स्वतंत्रताक बाद बिहार-नेपालक मैथिलीभाषी क्षेत्रक राजनीतिक विभाजन सेहो रेखांकित करैत छथि। मुदा प्रवासी लोकनिक संख्या, काल, आयु, जातीय वा पेशागत समूह आ घर-गामपर आर्थिक प्रभावक जाँच बिना 'गाम खाली भऽ गेल' सन कथनकेँ मात्र अनुभवजन्य सामान्यीकरण मानब पड़त। प्रवासक इतिहास लेल जनगणना, श्रम-अध्ययन, धन-प्रेषणक आकड़ा आ स्थानीय मौखिक साक्षात्कार एकसंग उपयोगी छथि।

प्रबन्धक उपलब्धि पलायनक प्रश्नकेँ भाषा, संस्कृति, शिक्षा आ क्षेत्रीय संसाधनक बहुआयामी सन्दर्भमे रखब अछि। गामसँ दूर गेल लोकक साहित्यिक उपस्थिति, परिवारक देखभाल, स्त्रीक श्रमक बढ़ल जिम्मेदारी आ प्रवासी पीढ़ीक भाषा-सम्बन्ध सन प्रश्न पर अधिक विस्तार सम्भव अछि। पलायनकेँ केवल हानि मानब ओकर आर्थिक अवसरक पक्ष बिसरब होयत; एकरा केवल आधुनिक उन्नति मानब स्थानीय सामाजिक विघटनक मूल्य बिसरब होयत। एहि द्वैधकेँ स्वीकार करवाक प्रस्ताव प्रबन्धक तर्ककेँ अधिक संतुलित बनबैत अछि।

८. मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध : वंश, विवाह, दूषण आ सामाजिक स्मृति

आठम मूल समालोचना विस्तृत समेकित शोध-आलेखक रूपमे प्रस्तुत अछि। एहि लेखनमे पञ्जी-व्यवस्था केँ मात्र वंशजक नामक अनुक्रम नहि, विवाह-सम्बन्ध जाँच, गोत्र-प्रवर, मूलग्राम, स्थानान्तर, सामाजिक श्रेणीकरण आ अभिलेखीय स्मृतिक संयोजित प्रणाली मानल गेल अछि। लेखक स्रोतसभमे प्रयुक्त 'मानव डेटाबेस', 'वंश-स्मृति' आ 'सामाजिक तकनीक' सन अवधारणासभक अन्तर देखैत छथि। एहि पद्धतिगत आरम्भक विशेष गुण ई अछि जे पञ्जीक प्रशासनिक उपयोग आ ओकर सामाजिक अर्थ एकमात्र सिद्धान्तमे सीमित नहि होइत। मुदा आजुक 'डेटाबेस'क रूपककेँ पुरान हस्तलिखित पञ्जीपर शब्दशः आरोपित करब उचित नहि; अभिलेखक संरचना, लेखनक उद्देश्य आ सूचना-संग्रहक नियम समयक अनुसार बदलैत अछि।

मूल प्रबन्ध संस्थानीकरणक विभिन्न तिथि आ राजा-विद्वान सम्बन्धी आख्यानसभक परस्पर विरोध चिन्हैत अछि। हरिनाथ उपाध्यायक कथा, राजकीय सम्मेलन आ शाका-ईस्वी कालगणनाक अन्तरक चर्चा एहि सावधानीक उदाहरण अछि। स्रोतक दू तिथिमे एक वर्षक अन्तर भेटला पर ओकरा आदेश, सर्वेक्षण आ सम्मेलनक भिन्न चरण मानि लेब सम्भावित व्याख्या भऽ सकैत अछि, प्रमाणित समाधान नहि। मूल राजकीय लेख, प्रामाणिक पाण्डुलिपि आ समकालीन उल्लेख उपलब्ध भेला परहँ कालक्रमक दुविधा घटत। युग-निर्धारणक काल्पनिक सुसंगति इतिहासक प्रमाणक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

पञ्जीक गोत्र, प्रवर, मूल आ विवाह-जाँचक विन्यासक चर्चा सामाजिक इतिहास लेल समृद्ध सामग्री दैत अछि। मुदा 'उटेढ', 'बत्तीस पूर्वज' आ 'सोलह छट्टी' सन पदसभक अर्थ स्थानीय प्रथा, पाठभेद आ विशेष पञ्जिकारक व्यवहारे बुझल जाएत। पञ्जीक श्रेणीकरणक भीतर श्रोत्रिय, योग्य, वंशधर अथवा जयवार सन सामाजिक पदक उपस्थिति ऐतिहासिक पदानुक्रमक साक्ष्य भऽ सकैत अछि; ओ

पदानुक्रमक मूल्यात्मक न्यायसंगतता सिद्ध नहि करैत। वंशगणनाक लेखकीय व्यवस्था आ मानवीय विवाह-अधिकारक आधुनिक आलोचना अलग मानकक प्रश्न छथि। लेखकक दूषण-पञ्जी सम्बन्धी चर्चा एहि व्यवस्थाक अन्तर्विरोध खोलबाक सम्भावना रखैत अछि।

विस्तृत पृष्ठ-खंडसभक पृथक अध्ययनमे गाँवक पुनरावृत्ति, मूलग्रामक नेटवर्क, विवाह-संबन्ध आ पेशागत उपाधि सभक उल्लेख अछि। करमहा, मण्डर, दरिहरा, महिषी, पवौली, नेपाल-सम्बद्ध बस्ती आ आन स्थानक नाम अनेक वर्तनीरूपमे भेटैत अछि। एहन भिन्नताकें एक आधुनिक मानक नाममे चुपचाप बदलला पर स्थानीय उच्चारण, प्रतिलिपिकारक परम्परा आ पञ्जीक पाठइतिहास मेटा सकैत अछि। बेहतर डिजिटल सम्पादनमे मूल वर्तनी, सामान्यीकृत नाम, वर्तमान भौगोलिक पहिचान, स्रोत-पृष्ठ आ अनिश्चितताक स्तर पृथक क्षेत्रमे राखल जाय। एहि रूपमे पञ्जी इतिहासक संग भाषावैज्ञानिक स्थलनाम-अध्ययनक सेहो स्रोत होइत अछि।

किछु वंशशृंखलाकें प्राचीन महान व्यक्तिसँ जोड़बाक मूल स्रोतक दावे विशेष सावधानी माँगैत अछि। नामक क्रम मिलि जाएब, समान उपाधि भेटब वा वंशक स्थानीय स्मृति रहब मात्रसँ प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तिक सीधा जैविक वंश स्थापित नहि होइत। एकर लेल प्रत्येक पीढ़ीक काल-सम्भवता, परस्पर स्वतन्त्र अभिलेख आ वंशसम्बन्धक पुनरुत्पाद्य प्रमाण चाही। एकहि प्रबन्धमे ४५० ईस्वी सँ २००९ धरि 'लगातार' वंश-पञ्जी बचल रहबाक दावापर मूल लेखकक सावधानी उल्लेखनीय अछि: प्रारम्भिक कालक परम्परा आ उपलब्ध बादक पाण्डुलिपिक तिथि समान नहि। निरन्तरता परम्पराक स्मृतिमे रहि सकैत अछि, पूर्ण प्रत्यक्ष अभिलेखमे नहि।

एहि समेकित मूल आलेखक सबसे पैघ उपलब्ध स्रोत-विरोधकें हटेबाक बदला अभिलेखित करब अछि। तथापि अनेक स्रोतक '२०/२० कवरेज' सन आन्तरिक सूचक पूर्ण स्रोत-विश्वसनीयताक प्रमाण नहि; कवरेज आ सत्यापन भिन्न माप छथि। आरंभिक पञ्जी, दूषण-पञ्जी, नगराम, विवाह-परीक्षण आ आधुनिक

जीनोम सम्बन्धी कथनसभमे ऐतिहासिक वंशावली आ आनुवंशिक साक्ष्यक अन्तर सदा स्पष्ट रहबाक चाही। पारिवारिक लेखा जैविक आनुवंशिक परीक्षणक विकल्प नहि, जेकाँ आधुनिक अनुवांशिकी सामाजिक स्मृतिक सम्पूर्ण अर्थ नहि बुझा सकैत अछि। मूल पञ्जीक पृष्ठानुसार छवि, अक्षर-पाठ, पाठान्तर, कालक्रम आ अधिकार-व्यवस्था स्पष्ट कएलासँ एहि विस्तृत प्रबन्धक शोध-मूल्य अधिक स्थायी बनत।

छठम सँ आठम समालोचनाक तुलनात्मक विवेचन

मिथिला आ संस्कृतक विश्वविद्यालयीय अध्ययन, आधुनिक पलायन आ पञ्जी-प्रबन्धक वंश-स्मृति तीनू प्रश्नमे ज्ञानक पीढ़ीगत निरन्तरता केन्द्रमे अछि। शिक्षण संस्था पुरान पाठक नव रूपमे पहुँचेबैत अछि; प्रवास समुदायक भूगोल बदलैत अछि; पञ्जी पुरनका मूलग्राम आ विवाह-संबन्धक लेखा सुरक्षित रखबाक प्रयास करैत अछि। मुदा तीनू ठामक साक्ष्य भिन्न अछि— प्रकाशन-अभिलेख, जनसंख्याक अध्ययन आ ताड़पत्रक प्रतिलिपि। एहि अन्तरक संग अपन साझा प्रश्न चिन्हब समेकित मिथिला-अध्ययनक सशक्त पद्धति बनि सकैत अछि।

१. 'कुसमा-सलहेस' : लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि

नवम मूल समालोचना 'कुसमा-सलहेस'क लोकस्रोत आ आधुनिक नाट्यरूपक विस्तृत तुलनात्मक पाठ प्रस्तुत करैत अछि। महिसौथा, मोरंग, बाघगढ, रेवा-दाह, पकड़िया आ अनेक स्थानक विस्तार सँ मूल आलोचक नाटकक महाकाव्यात्मक भूगोल चिन्हैत छथि। कुसमा, सलहेस, हिरामन सूग्गा, विपटा आ वनचर पात्रसभ सामूहिक स्मृति, प्रेमक आकांक्षा आ प्रतिरोधक अनेक स्तर खोलैत छथि। एहि अवलोकनक महत्त्व अछि जे लोकगाथाकेँ केवल लिखित नाटकक अपूर्ण पूर्वरूप नहि, अपन स्वतंत्र कथन-गायन-प्रदर्शनक पद्धति मानल गेल अछि। तथापि नाट्यरूपक वास्तविक पाठ आ सलहेस-नाचक अलग क्षेत्रीय प्रदर्शनक सम्बन्ध ऐतिहासिक रूपसँ जाँचल जाय; लोकस्रोत एक निश्चित अपरिवर्तनीय पुस्तक नहि।

मूल अध्ययन भरतक नाट्यशास्त्र, रसविचार, अधीनस्थ-वर्गीय सौन्दर्यशास्त्र आ आधुनिक रंगमंचीय सिद्धान्तकेँ एक संग रखैत अछि। लोकनाट्यक 'सुमिरन', सामूहिक गायन, विपटाक विदूषक-भूमिका आ हिरामनक कथावाहक कार्यक उल्लेख मूल प्रदर्शन-व्याकरणक सशक्त पहचान अछि। 'रस'क मूल्याङ्कनमे प्रेम, वीरता, करुणा आ हास्यक बहुस्तर देखल जा सकैत अछि; मुदा प्रत्येक दृश्यपर निश्चित रस लेबल लगायब संपूर्ण प्रदर्शनक अर्थ नहि पकड़ैत। कुसमाक आत्मनिर्णयक विवेचनमे ओकर अपन वक्तव्य, क्रिया आ निर्णायक प्रसङ्ग देखब आवश्यक अछि, ताकि स्त्रीकेँ केवल नायकक प्रेमक लक्ष्य रूपमे सीमित नहि कयल जाय।

मूल आलोचक आधुनिक सिद्धान्तसभ, जादू-यथार्थवाद आ एशियाई अथवा इजरायली रंगविचारपर सेहो विस्तृत टिप्पणी करैत छथि। एहन व्यापक तुलनाक उपयोगिता नाटकक विविध पाठसम्भावना खोलब अछि, मुदा एकहि पात्रमे विश्वक कतेको दार्शनिक समरूपता खोजबा पर ऐतिहासिक सम्बन्ध आ आलोचनात्मक उपमा बीच भेद जरूरी अछि। उदाहरणतः युद्धरत शत्रुक प्रति

सलहेसक नैतिक व्यवहारकें चीनी 'यी' अवधारणासँ पढ़ब एक आधुनिक तुलनात्मक व्याख्या भऽ सकैत अछि, कथित प्रत्यक्ष प्रभाव नहि। विशिष्ट तर्क लेल मूल नाटकक संवाद, प्रदर्शनक अभिलेख आ सन्दर्भित सिद्धान्तक वास्तविक पाठक एक-दोसरासँ मिलान अपेक्षित अछि।

एहि मूल समालोचनाक प्रमुख उपलब्धि लोकदेवता आ लोकनाट्यकें आधुनिक साहित्यिक विमर्शक पूर्ण योग्य विषय बनायब अछि। मुदा स्रोत-पद्धतिक अधिष्ठान स्पष्ट रहब चाही—लोककथा, उपलब्ध नाट्य-पटकथा, वास्तविक मंचन, आलोचकक अनुमान आ आन सांस्कृतिक तुलनाक स्तर अलग। तखन 'कुसमा-सलहेस'क सांस्कृतिक सम्मान अन्ध प्रशंसा नहि, शिल्प आ इतिहासक परीक्षणसहित आलोचनात्मक प्रतिष्ठा बनत।

१०. 'अखियासल' : साहित्येतिहासक पुनर्पाठ आ समीक्षाक समीक्षा

दसम मूल अध्ययन डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल'पर विस्तृत आलोचनात्मक विवेचन अछि। मूल लेख अनुसार पचीस निबन्धक ई संग्रह आरम्भिक मैथिली कथा-साहित्यसँ समकालीन लेखक धरि, प्रायः दू शताब्दीक साहित्यिक परिदृश्य खोलब चाहैत अछि। श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'सँ आरम्भ कऽ पत्रकारिता, गीत, गप्प, उपन्यास आ आधुनिक कथासाहित्यक अनेक विस्मृत व्यक्तिक नाम पञ्जीकृत कएल गेल अछि। एहि विस्तारक सभसँ पैघ लाभ साहित्यिक इतिहासक चुनल प्रतिष्ठित व्यक्तिसभक बाहर रहल कृतिक दृश्यता अछि। मुदा पुनरुद्धारक इच्छा आ ऐतिहासिक प्रथमत्वक दावा एक बात नहि; पाण्डुलिपि, मुद्रण-वर्ष, संस्करण आ पूर्वपरम्पराक पुनर्परीक्षण अनिवार्य अछि।

मूल समालोचना भारतीय रस-ध्वनि, लोकमङ्गल, पाश्चात्य रूपवाद, स्त्रीवादी आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ 'अखियासल'क अनेक अध्याय पढ़ैत अछि। एतय समीक्षाक पद्धतिक प्रश्न विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: विविध सिद्धान्तक नाम जोड़ि देब कृतिक स्वतन्त्र व्याख्या नहि बनबैत। रस-विवेचन लेल विशिष्ट भाषिक पाँति, समाजशास्त्रीय मूल्याङ्कन लेल सामाजिक सम्बन्ध, आ साहित्यिक इतिहास लेल प्रकाशन-अभिलेख चाही। कतेक अध्यायमे मूल ग्रन्थक पूर्ण प्रति उपलब्ध नहि होयबाक स्वीकारोक्ति सम्बन्धी मूल आलोचकक टिप्पणी एक आवश्यक आत्मसमीक्षा अछि। मूल पाठ बिना प्राप्त द्वितीयक उद्धरणक आधारपर कृतिक शिल्पक निश्चित निर्णय देब सुरक्षित नहि।

मूल लेख मैथिली साहित्यक आरम्भिक उपन्यास, स्त्रीशिक्षा, जातीय असमानता, राष्ट्रीय चेतना आ पत्र-पत्रिकाक इतिहास पर परस्पर विरोधी पूर्वनिर्णय खोजैत अछि। एहि उद्देश्यक सामर्थ्य स्थापित साहित्येतिहासक किनाराक परीक्षण अछि। तथापि पूर्ववर्ती समीक्षकक 'अपूर्णता' दर्शेबाक लेल हुनकर मूल कथन, पूरा सन्दर्भ आ सम्बद्ध कृतिक उपलब्ध पाठक सह-परीक्षण

अपेक्षित अछि। कोनो कृतिक महत्त्व ओकर 'पहिल' होयबाक प्रमाण मात्रसँ नहि; कथन-प्रविधि, पात्रक आत्मनिर्णय, भाषा आ सौन्दर्यगत गठनक विवेचन सेहो चाही। इतिहास-बोध आ कलात्मक मूल्याङ्कनक भेद एहि विस्तृत मूल अध्ययनक केन्द्रिय आलोचनात्मक कसौटी बनैत अछि।

'अखियासल'क समीक्षा विषयक ई समेकित लेखन विस्मृत लेखकक पुनर्स्थापन आ विधागत विविधताक व्यापक स्रोतपञ्जी उपलब्ध करबैत अछि। एकर सीमा स्वयं मूल ग्रन्थसँ अधिक दूर चलि जाएबाक जोखिम अछि: संदर्भित आन कृति आ आलोचनात्मक सिद्धान्तक विस्तार कतेको ठाम मुख्य पाठक रचनात्मक संक्षेप ढाकि सकैत अछि। एहि कारण विषयवार मूल पाँति, सम्बन्धित निर्णय आ प्रमाणक स्तरक स्वतंत्र सारणी एहि समालोचनाकें अधिक परिशुद्ध बनाओत।

११. 'हिआओल' : अनुमान, अभिलेख आ सामाजिक साहित्येतिहास

एगारहम मूल समालोचना डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क 'हिआओल'क अध्ययन करैत अछि। मूल लेख एहि शीर्षकक अर्थ 'थाहल' अथवा 'अन्दाजल'क रूपमे ग्रहण कऽ आलोचकक अन्वेषणात्मक विनम्रताक संकेत मानैत अछि। एतय शीर्षकक स्वयं एकटा पद्धतिगत अर्थ अछि: साहित्येतिहासक निर्णय अन्तिम आदेश नहि, नूतन साक्ष्य भेटला पर संशोधनयोग्य विवेचन अछि। मूल पुस्तककें 'अखियासल' आ आन समीक्षासंग्रहक श्रेणीमे रखल गेल अछि; ई सम्बन्ध ग्रन्थकारक दीर्घ आलोचनात्मक परियोजनाक संकेत दैत अछि। मुदा एक पुस्तकक आन्तरिक स्वरक विशिष्टता चिन्हबाक लेल समान लेखकक आन संकलनक थीम पुनरावृत्तिमात्र पर्याप्त नहि।

मूल अध्ययन इतिहास, भाषा-विज्ञान, पत्रकारिता, उपन्यास, पाठ-अधिकार, विस्मृत रचनाकार आ स्त्री-दलित-श्रमिक अनुभवक बहुस्वर रेखाङ्कित करैत अछि। एतय मैथिलीक ऐतिहासिक स्वायत्तता, तिरहुता, आरम्भिक पत्रिका आ प्रवासी सार्वजनिकताक सूचना साहित्यिक प्रतिष्ठा-विमर्शसँ जोड़ल गेल अछि। एहि प्रकारक अन्तर्विषयक विस्तार महत्त्वपूर्ण अछि, किन्तु साहित्येतिहासक आरम्भिक प्रकाशनतिथि, भाषाक पुरातन नाम, पत्रिकाक निरन्तरता आ व्यक्तिक भूमिका सन दावाक मूल अभिलेख जाँचब आवश्यक अछि। सामाजिक पक्षधरता शोधक प्रश्न चुनबाक आधार दैत अछि; कालक्रम आ दस्तावेजक सत्यता अलग स्थापित करबाक पड़ैत अछि।

मूल आलोचक 'कन्यादान'क पुनर्पाठ, प्राचीन भाषिक साक्ष्य, स्त्री-अस्मिता आ कोसीक अनुभव सन विषयक तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करैत छथि। भारतीय काव्यशास्त्र, नवइतिहासवाद, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समाजभाषिक पद्धति प्रयोग केलाक लाभ अछि कृतिक बहुस्वरूप देखब; मुदा हर सिद्धान्तक उपयोग ओकर पृथक प्रमाणपद्धति सहित होबाक चाही। एकटा नाटक अथवा उपन्यासमे पात्रक कहब-करब जतेक विशिष्ट अछि, ततेक ही कृतिक इतिहासक

घटना-निर्देश सटीक भेने अपेक्षित अछि। विरोधाभासी पूर्वआलोचनाक जांच लेल केवल निष्कर्ष-पाठ नहि, उद्धृत मूल ग्रन्थक परिच्छेद आवश्यक अछि।

मूल समीक्षामे पुनरावृत्ति, अननूदित अंग्रेजी उद्धरणक बहुलता आ लेखकक अपन कार्यक पुनःसन्दर्भक आलोचना सेहो उपस्थित अछि। ई आत्मसमीक्षात्मक गुण उल्लेखनीय अछि: साहित्यिक इतिहासक पुनर्लेखन एकरीति अधिकारपूर्ण ग्रन्थ नहि बनबाक चाही। एहि दोषसभक विवेचनमे स्रोत उद्धरण सुरक्षित रखैत आम मैथिली पाठकक पहुँच लेल समतुल्य अनुवाद आ एकहि प्रकरणक पुनरावृत्त सामग्रीक संक्षेप सहायक होयत। 'हिआओल'क समेकित आलोचना बतबैत अछि, जे समानान्तर इतिहास केवल नव लेखक जोड़बाक प्रकल्प नहि, पुरनका निर्णयक स्रोत, भाषा आ कसौटी स्वयं पुनर्जाँचबाक श्रम अछि।

नवम सँ एगारहम समालोचनाक समेकित निष्कर्ष

‘कुसमा-सलहेस’, ‘अखियासल’ आ ‘हिआओल’क समीक्षासभमे उपेक्षित सांस्कृतिक पाठक पुनर्पाठक साझा प्रयत्न अछि। पहिल मूल प्रबन्ध लोकनाटयकें शास्त्रीय रंगमंचक बराबर आलोचनात्मक सम्मान दैत अछि; दोसर आ तेसर साहित्येतिहासमे बिसरल रचना, भाषिक अभिलेख आ सामाजिक अनुभवकें स्थान देबाक आग्रह करैत अछि। मुदा तीनू प्रकारक इतिहासक स्रोत पृथक अछि—लोकमंचन, छपल साहित्यिक कृति आ प्रकाशन-अभिलेख। एहि श्रेणीसभकें स्पष्ट कयलासँ उपेक्षितक पक्षमे उठाओल तर्क अधिक सुसंगत बनैत अछि।

१२. केदारनाथ चौधरीक 'चमेली रानी' आ 'माहुर' : उपन्यास-द्वयक समीक्षाक समीक्षा

द्वादश मूल समालोचना केदारनाथ चौधरीक 'चमेली रानी' आ तकर अगिला खण्ड 'माहुर'कें मैथिली उपन्यासक सामाजिक आ राजनीतिक विस्तारक रूपमे पढ़ैत अछि। मूल आलोचक पहिल पोथीक प्रकाशन २००४, ओकर दोसर संस्करण २००७ आ 'माहुर'क प्रकाशन २००८ कहैत छथि। धीरेन्द्रनाथ मिश्रक टिप्पणी उद्धृत कऽ ओ पहिल उपन्यासक खुलल अन्त आ दोसर भागक अपेक्षाकें कथात्मक सफलता मानैत छथि। स्रोतमे जनकपुरमे पाँच सय प्रति बिकबाक दावासँ प्रकाशन-संस्कृतिक प्रश्न उठैत अछि; मुदा बिक्रीक संख्या, पाठकक माँग आ कलात्मक श्रेष्ठता एकहि प्रकारक प्रमाण नहि। बिक्रीक अभिलेख अथवा प्रकाशकीय जानकारी बिना संख्याक स्वतंत्र पुष्टि नहि मानल जा सकैत अछि।

समीक्षकक प्रमुख व्याख्या लेखकक देश-विदेश अनुभवकें पात्रक विविधता आ राजनीतिक पूर्वदृष्टिसँ जोड़ैत अछि। गुलाब मिसिरक मुख्यमन्त्री पदपर रहिते अनुपस्थित रहबाक कथात्मक स्थिति आ एक बादक वास्तविक राजनीतिक घटनाक समानता पर विशेष बल देल गेल अछि। एहि तुलनाक आलोचनात्मक मूल्य अछि—सत्ता, वैधानिक पद आ वास्तविक संचालनक बीच अन्तर चिन्हायब—मुदा बादक घटनासँ पहिनुक उपन्यासक 'भविष्यकथन' सिद्ध नहि होइत। ऐतिहासिक समानताकें रूपक, संरचनात्मक साम्य आ वास्तविक प्रत्यक्ष प्रभावसँ अलग राखब आवश्यक अछि। एही प्रकार 'द व्हाइट टाइगर'क संग सम्भावित साम्यक चर्चा कालक्रमसँ कथात्मक प्रभावक प्रमाण नहि बनि जाइत अछि।

मूल लेखमे चमेली रानी, कनही मोदियाइन, भूखन सिंह, नांगटनाथ आ राजनीतिक पात्रसभक परस्पर सम्बन्ध समाजक शक्ति-विन्यास बुझबाक ठोस अवसर दैत अछि। एहि पात्रसभक निर्णायक क्रिया, कथन-दृष्टि, दृश्य-परिवर्तन आ उपन्यास-द्वयक बीच निरन्तरताक विस्तृत तुलना करल जाय तँ 'जीवनानुभवक समृद्धि'क सामान्य प्रशंसासँ आगाँ बढ़ि कऽ शिल्पगत निर्णय स्थापित होयत। विशेष रूपसँ स्त्री पात्रक स्वाधीन निर्णय आ हुनका पर समाजक नियन्त्रणकें अलग कसौटीपर देखबाक चाही; नाममे 'रानी' रहब मात्रसँ

कथानकक सत्ता स्त्रीक हाथमे पहुँचि जाइत अछि, से नहि मानल जा सकैत अछि।

एहि मूल समालोचनाक उपलब्धि मैथिली उपन्यासक राजकीय यथार्थ, पाठकीय सार्वजनिकता आ सामाजिक अनुभवक सम्बन्धक प्रश्न उठायब अछि। एकर सीमा टिप्पणी, प्रशंसा, उपाख्यान, अनुमान आ प्रमाणित पाठ-साक्ष्यकें किछु ठाम एकहि तर्करेखामे मिला देब अछि। पुनर्मूल्याङ्कनमे पहिल आ दोसर खण्डक अध्यायक्रम, पात्रगत परिवर्तन, अन्तक कलात्मक अनिवार्यता आ स्वायत्त पाठक-अनुभवक अलग आलोचनात्मक विवरण अधिक फलप्रद होयत।

१३. सुभाषचन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' : कथा-शिल्प आ भाषा-विचारक आलोचना

तेरहम मूल समालोचना 'बनैत बिगड़ैत'क कथा सभमे घटनाप्रधान खिस्साक बदलामे एकटा केन्द्रित विषयक सहारे कथा विकसित करबाक विशिष्टता देखैत अछि। आलोचक एही कारण संग्रहकें उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानीक परम्परासँ भिन्न ठहरबैत छथि। ई एकटा महत्वपूर्ण विधागत प्रश्न अछि: कथा केवल आश्चर्यजनक घटना आ अन्तिम चमत्कारक व्यवस्थानहि, कथनक चुस्त लय, भाषा आ आन्तरिक तनावसँ सेहो बनैत अछि। मुदा 'अधिकांश कथा'क संग की समानता अछि से बतएबाक लेल प्रत्येक कथाक आरम्भिक स्थिति, परिवर्तन-बिन्दु आ समाप्तिक स्वतन्त्र उदाहरण आवश्यक अछि। सामान्य संग्रहगत निर्णयकें कथा-विशेषक साक्ष्यसँ पुष्ट करबाक काज अधूरा रहि जाय तँ विधागत निष्कर्ष व्यापक भऽ कऽ सेहो अस्थिर रहैत अछि।

मूल आलोचनाक दोसर महत्वपूर्ण केन्द्र कथाकारक देशज भाषा अछि। ओ 'बलचनमा'मे पात्रक आत्मकथात्मक वाणी आ सुभाषचन्द्र यादवक कथामे कथाकारक अपन भाषिक स्वरक अन्तर रेखाङ्कित करैत छथि। एहि अवलोकनकें आगाँ बढ़बैत भाषाक प्रश्न तीन स्तरमे देखल जा सकैत अछि— पात्रक कथन, कथावाचकक भाषा आ सम्पादकीय वर्तनी। मूल लेखक 'अछि', 'छै', 'छैक', 'ऐछ' तथा निषेधबोधक अनेक रूपक ध्वन्यात्मक आ मानकीकरण सम्बन्धी तर्क प्रस्तुत करैत छथि। एतय महत्वपूर्ण भेद ई अछि जे भाषिक विविधताक वर्णन आ एकटा बाध्यकारी मानकक आग्रह एकहि निर्णय नहि। ध्वनि-प्रयोगशालाक आवश्यकता बतायब उपयोगी प्रस्ताव अछि; मुदा वास्तविक ध्वनिक साक्ष्य, क्षेत्रीय प्रयोग आ अर्थगत अन्तर बिना कोनो एक रूपकें 'वैज्ञानिक' कहि अन्तिम ठहरायब जल्दबाजी होयत।

संग्रहकें कथा, नीतिकथा, लोकखिस्सा आ उपन्यासक तुलनासँ देखबाक प्रयास मूल समीक्षाकें व्यापक साहित्येतिहासक पृष्ठभूमि दैत अछि। तथापि तुलनात्मक परम्पराक नाम आ सामान्य कथाकथन सिद्धान्तक विस्तार वास्तविक कथासभकें ओझरायल नहि बनाबय। खास कऽ प्रत्येक कथामे

कथावाचक कतेक जानैत अछि, कथानकक केन्द्रक बाहरक सामाजिक स्थिति कोना प्रकट होइत अछि, पाठकसँ की छोड़ि देल जाइत अछि, आ देशज शब्दक ध्वनिमे की संवेदना सुरक्षित अछि—एहि प्रश्नसभसँ संग्रहक कलात्मक पहचान बेसी स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

एहि समालोचनाक उपलब्धि कथा-वाचनक रसमात्रसँ हटि कथ्यक संकेन्द्रण आ सामाजिक भाषाक सक्रिय भूमिका चिन्हायब अछि। एकर सीमा किछु स्थलपर भाषा-मानकीकरणक दीर्घ वादक कथा-केंद्रित परीक्षणसँ बेसी जगह घेरि लेब अछि। समुचित पुनर्पाठ लेल कथा-विशेषक उद्धरण, भाषिक प्रयोगक क्षेत्रीय सन्दर्भ आ शिल्पगत प्रभावकें साथ रखल जाए; एहन पद्धति कथाकारक मौलिक स्वर सुरक्षित रखैत समीक्षाक तर्ककें जाँचयोग्य बनाओत।

१४. राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' : कविताक आवश्यकता आ प्रतिरोधक बिम्ब

चौदहम मूल प्रबन्ध राजदेव मण्डलक 'अम्बरा'पर चर्चा शुरू करैत मैथिली कविताक पाठक, भाषा-संकट आ काव्यक सामाजिक उत्तरदायित्वक व्यापक प्रश्न उठबैत अछि। आलोचकक प्रारम्भिक धारणा—कविता कम पढ़ल जाइत अछि, सामाजिक संकटमे कविता लिखबाक औचित्य केहन अछि—विचारोत्तेजक अछि; मुदा पाठकीय प्रवृत्तिक एहन सर्वसाधारण निष्कर्ष लेल प्रकाशन, वाचन, पाठशाला आ मौखिक प्रसारक अलग प्रमाण चाही। कविता पुस्तकक बिक्रीसँ आगाँ सेहो लोकगायन, गोष्ठी, स्मृति आ सार्वजनिक उच्चारणमे जीवित रहैत अछि। तँ गद्य आ पद्यक भेद उपयोगिताक सरल श्रेणीमे नहि, लय, बिम्ब, कथनक संक्षिप्ति आ अनुभवक रूपान्तरमे खोजल जाए।

मूल आलोचक राजदेव मण्डलक कवितामे टपकैत रक्त-बिन्दु, चिड़ैक प्रश्न आ आगाँक अन्हार रातिक बिम्बकें विशेष रूपसँ रेखाङ्कित करैत छथि। एहि बिम्ब-शृंखलामे देहक हिंसा, प्रकृतिक साक्षी आ जातीय अस्तित्वक चिन्ता एकत्र होइत अछि। कविता सीधा राजनीतिक वक्तव्य नहि बनि, प्रश्नवाचक स्वरक माध्यमसँ भय आ भविष्यक अस्थिरता रचैत अछि। 'जाति' शब्दकें केवल एक निश्चित सामाजिक अर्थमे सीमित करबाक बदला प्रसङ्गगत रूपसँ समुदाय, प्राणी-वर्ग अथवा सांस्कृतिक अस्तित्वक अर्थस्तर जाँचब जरूरी अछि। एहि बहुअर्थिताक कारण कविताक असर तत्कालिक प्रसङ्गसँ बाहर टिकि सकैत अछि।

समीक्षक लौकिक आ पारलौकिक अनुभवक परस्पर सम्बन्धकें काव्यक संवेदना मापबाक कसौटी बनबैत छथि। ई प्रश्न सार्थक अछि, मुदा एहि आधारपर सम्पूर्ण समकालीन मैथिली कविताकें सतही घोषित करब, अथवा विशिष्ट कविक श्रेष्ठता निर्विवाद ठहरायब, पर्याप्त पाठ-तुलना बिना कठिन अछि। आलोचनाक ठोस शक्ति उद्धृत पाँतिक ध्वनि, पुनरावृत्ति, छवि आ प्रश्नक

नाटकीय परिणतिक पाठमे निहित अछि। एहि सूक्ष्म पठनकेँ संकलनक आन कवितासभ पर समान रूपसँ लागू कयल जाय तँ संग्रहक भीतरक वैचारिक विविधता आ शिल्पगत असमानता दुनू स्पष्ट होयत।

ई समालोचना संकटकालमे कविताक सांस्कृतिक कार्यकेँ पुनः केन्द्रमे अनैत अछि। एकर प्रमाणगत सीमा कविता-विरोधी सार्वजनिक धारणाक व्यापक सामान्यीकरण अछि। 'अम्बरा'क ऐतिहासिक महत्त्व आ काव्यात्मक मूल्यांकनकेँ पृथक लेकिन सम्बद्ध रूपसँ स्थापित करब अधिक परिशुद्ध दृष्टि होयत।

१५. मुन्नाजीक 'प्रतीक' : विहनि कथाक बीआ, रूपक आ कथात्मक अर्थ

पन्द्रहम मूल समालोचना मुन्नाजीक विहनि-कथा संग्रह 'प्रतीक'क चर्चा खेतीक विस्तृत रूपकसँ करैत अछि। धानक बीआ, बिराड, उपाडब आ रोपबाक प्रक्रियासँ आलोचक ई बुझबैत छथि जे छोट आकार अपनेमे विहनि कथा नहि: भीतरक अर्थ सम्भावनाक परिपक्वता चाही। हास्य-कणिका, चुटकी आ विहनि कथाक बीच भेद करबाक ई प्रयास साहित्यिक रूपकें लोकजीवनक परिचित कार्यसँ जोड़बाक मूल्यवान उदाहरण अछि। एकर संगहि सावधानी आवश्यक अछि—धानक खेतीक प्रक्रिया साहित्यिक विधाक परीक्षण लेल बोधगम्य उपमा थिक, शाब्दिक वैज्ञानिक प्रमेय नहि। उपन्यासक 'सफलताक प्रतिशत' अधिक होयबाक मूल दावाक लेल स्पष्ट गणना वा निर्धारित कसौटी मूल लेखमे प्रस्तुत नहि अछि।

प्रतीकात्मकताक कथागत परिणाम देखबाक लेल मूल आलोचक 'रेवाज' सन विशिष्ट विहनि कथाक उल्लेख करैत छथि। एक स्त्री अपन मृत पतिक अन्त्येष्टिक अधिकार पुत्रीक पक्षमे रखैत अछि, आ घरक प्रचलित रीतिक विरुद्ध नव नैतिक निर्णयक द्वार खोलैत अछि। कथा प्रभावशाली केवल विषयक कारण नहि; रूढ़ व्यवस्था, स्त्रीक वाणी आ अन्तिम क्रियाक बीच कथात्मक दूरी कतेक अल्प छैक, ई निर्णायक शिल्पगत प्रश्न अछि। यदि आलोचना ई देखाबय जे कथामे ककरा आवाज भेटैत अछि, ककरा मौन रहबाक पडैत अछि आ पाठक कोन अन्तिम स्थिति स्वयं पूरा करैत अछि, तँ प्रतीकात्मकताक विवेचन अधिक पाठाधारित होयत।

'कमरुनिसा'क उल्लेख आ आन उदाहरण संग्रहमे धार्मिक-सामाजिक विविधताक सम्भावना देखबैत अछि, किन्तु कथाक पूर्ण पाठ बिना ओकर समस्त चरित्र-विकास अथवा निर्णायक अर्थ घोषित नहि करबाक चाही। मूल आलोचकक खेती-सम्बन्धी व्याख्या स्थानीय शब्द-भण्डार आ लोकबुद्धिक सौन्दर्य खोलैत अछि, मुदा विहनि कथा कें केवल 'बड कथा बनबाक बीआ'

मानल जाय तँ ओकर अपन कलात्मक स्वायत्तता दबि सकैत अछि। छोट कथा स्वतन्त्र रूपेँ परिपूर्ण भऽ सकैत अछि; ओकर लक्ष्य अनिवार्यतः उपन्यासमे विकसित होयब नहि।

एहि समालोचनाक विशिष्ट उपलब्धि विहनि कथा पढ़बाक लेल रूपकात्मक, सामाजिक आ भाषिक तीनू द्वार खोलब अछि। अधिक कठोर समीक्षा लेल कथा-विशेषक चरित्र, वाक्य-संरचना, अन्तिम विराम आ प्रतीकक पुनरागमनक क्रम परखब चाही। उपमाक रसमयता तखने प्रमाणमूलक आलोचनाक संग मिलत।

१६. सुजीतक 'जिद्दी' : संवेदना, स्त्रीक निर्णय आ कथारचनाक सीमा

सोलहम मूल समालोचना सुजीतक कथा-संग्रह 'सम्बेदना'क प्रसङ्गमे 'जिद्दी' सहित कतेको कथाक परीक्षण करैत अछि। 'आदर्श'मे नगरक परिवेशसँ आयल स्त्रीक प्रथम पुरुष वाणी आ ओकर सासुक अन्धविश्वासक प्रति प्रश्नक उल्लेख अछि। पतिक आयु बढ़ेबाक घरेलू नियमक विरोधमे विधवा सासुक जीवनक स्वयं उपस्थित प्रमाणकै कथावाचिका प्रश्न बनबैत अछि। एहि विरोधाभासक आलोचनात्मक महत्त्व स्त्रीक तर्कबुद्धि आ घरक सामूहिक दबावक संघर्षमे अछि; कथाकै केवल अन्धविश्वासक उपहास मानल जाय तँ विवाह, आश्रय आ भावनात्मक सत्ता-सम्बन्धक जटिलता छूटि सकैत अछि।

'जिद्दी'मे शारदाक अधूरा नृत्य-अभिनय जीवन, पुत्र जयन्तक दूरी आ पुत्री गिन्नीक निरन्तरता मूल समीक्षकक ध्यानाकर्षण करैत अछि। आलोचक ई संकेत दैत छथि जे आरम्भिक कलात्मक आकांक्षा परवर्ती कथामे मद्यपान, धूम्रपान आ नैतिक सम्बन्धक टिप्पणीसभमे ओझराइत अछि। ई आरोप कथागत एकता जाँचबाक लेल सार्थक अछि: ककर निर्णय कथा घुमबैत अछि, शारदाक कला प्रति जिद्द स्वयं कोन कार्य करैत अछि, आ गिन्नीक उपलब्धि माएक इच्छा दोहरबैत अछि कि अपन स्वतन्त्र जीवन-चयन रचैत अछि? यदि ई भेद स्पष्ट हो, तँ कथाक सम्भावित विचलनक प्रमाण सेहो दृढ़ होयत।

'केहन सजाय'मे दत्तक बेटीकै जैविक सन्तान भेलापर परिवार द्वारा परित्यक्त करबाक स्थिति कठोर सामाजिक आलोचनाक आधार बनैत अछि। मूल आलोचक रितेश आ चमेलीक सम्बन्धक अपर्याप्त विस्तार पर प्रश्न उठबैत छथि। एतय पाठककै कथाकारक छोट आकार आ अधूरा मनोवैज्ञानिक गठन बीच अन्तर समझबाक अछि: सब जानकारी नहि देब एक सर्जनात्मक निर्णय भऽ सकैत अछि, मुदा आवश्यक कारण-सम्बन्धक अनुपस्थिति कथाक असंगति सेहो बनि सकैत अछि। 'फूल फुलाइएकऽ रहल'मे रूप-रंगक विवाह-बाजार आ स्त्रीक मानसिक स्वीकृतिक प्रश्न एहि समीक्षा-परिसरकै बढ़बैत अछि।

मूल समालोचनाक उपलब्धि नूतन कथाकारक सम्भावनाक संग शिल्पगत दोषकें चिह्नित करबाक साहस अछि। समीक्षा अपन निष्कर्षमे कथा कहब आ कथा रचबक अन्तर पर बल दैत अछि; एहि कसौटीकें फलदायी बनाबय लेल दृश्य-क्रम, दृष्टिबिन्दु, संवाद आ अन्तक अनुपातक ठोस विश्लेषण अपेक्षित अछि। स्त्री-विमर्शमे पात्रक नैतिक मूल्याङ्कनसँ पहिने ओकर निर्णयक वास्तविक परिस्थिति देखब आवश्यक अछि।

१७. 'पाथरक नाव' आ 'बलानक बोनिहार ओ पल्लवी' : परिचय, पाठ-पञ्जी आ मूल्याङ्कनक अन्तर

सत्रहम मूल लेख रमेश नारायणक 'पाथरक नाव' आ विनोद बिहारी वर्माक 'बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)'क तुलनात्मक प्रसङ्ग उठबैत अछि। मूल लेख अनुसार पहिल संग्रह १९७२ मे उपासना प्रकाशन, पटना सँ आ दोसर १९९४ मे मैथिली प्रतिभा, भुवनेश्वर सँ प्रकाशित भेल। रमेश नारायणक संग्रहक अनेक कथा आकाशवाणी पटना सँ प्रसारित भेल होयबाक उल्लेख, आ विनोद बिहारी वर्माक चौदह कथामे तीनक 'मिथिला मिहिर' तथा एगारहक 'वैदेही'मे पूर्वप्रकाशनक सूचना—ई विवरण मैथिली कथा-पत्रकारिता आ रेडियो प्रसारक इतिहास लेल उपयोगी पुस्तक-पञ्जी तैयार करैत अछि।

दुनू संग्रहक समर्पण-पाठ आ रचनासूची प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'पाथरक नाव'क समर्पणमे गामक थाल-कादो, झलकि रहल पानि आ रक्तकमलक आकांक्षा निर्वासन-स्मृति-रचनात्मक उम्मीदक भावभूमि बनबैत अछि; किन्तु समर्पण-पाठसँ संग्रहक सभ कथाक कलात्मक विशेषता स्वतः प्रमाणित नहि होइत। दोसर संग्रहक 'बलानक बोनिहार ओ पल्लवी', 'कुन्ती, कर्ण ओ परशुराम', 'माछक पिकनिक' आ 'आकाश-फूल' सन शीर्षक कथात्मक विविधताक संकेत अवश्य दैत अछि, मुदा प्रत्येक कथाक शिल्पक निष्कर्ष लेल स्वतंत्र पाठ चाही।

मूल आलेख ई दुनू संग्रह 'विशिष्ट' कहैत अछि, मुदा एकर मुख्य सामग्री प्रकाशन-विवरण आ अनुक्रम अछि; पात्र-विकास, संवाद, कथनक स्थिति, सामाजिक दृष्टि अथवा कथात्मक अन्तक व्यवस्थित विवेचन उपलब्ध नहि। एही कारण एहि आलेखकें कृति-समीक्षाक पहिल चरण—प्रलेखन आ परिचय—क रूपमे पढ़ब अधिक उचित अछि। एकरा संपूर्ण कथात्मक मूल्याङ्कन कहब मूल स्रोतक वास्तविक परिमाणसँ आगाँ बढ़ल दावा होयत।

संग्रहसभक पाठ उपलब्ध भेला पर रेडियो प्रसारण लेल चुनल कथाक भाषिक रचना आ मुद्रित पाठक अन्तर, १९७०-९० दशकक क्षेत्रीय सामाजिक परिवेश आ लेखकसभक स्वतंत्र कथाभाषाक तुलना सम्भव अछि। एखन मूल समीक्षा जे निश्चित करैत अछि, से अछि दू संग्रहक अस्तित्व, प्रकाशन-सन्दर्भ, समर्पण-रुचि आ रचनापञ्जी; एही सीमा स्वीकारब शोधक विश्वसनीयता अछि।

१८. 'मैथिलीक किछु नव पोथी' : अनेक कृतिक आस्वादन आ समीक्षाक कसौटी

अठारहम मूल प्रबन्ध एकटा पोथीक समालोचना नहि, समकालीन मैथिली पुस्तकसभक बहुआयामी परिचय आ प्रतिक्रिया अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक 'शम्भुदास' पर आलोचक कलाकारक जीविका आ दरबारी आश्रयक विडम्बनाकें केन्द्रमे अनैत छथि। शम्भुआ सँ शम्भु आ शम्भुदास बनबाक क्रममे नामक परिवर्तन स्वयं सामाजिक स्थितिक संकेत बनैत अछि। ई व्याख्या पात्रक कलात्मक प्रतिभा आ आर्थिक विवशताकें जोड़ैत अछि, मुदा कलाकारक 'हार' अथवा लेखकक वैचारिक परिवर्तनक निष्कर्ष लेल मूल कृतिक निर्णायक प्रसङ्ग देखब आवश्यक अछि। पात्रक संघर्षक परिणति लेखकक व्यक्तिगत पराजयक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि।

'बजन्ता-बुझन्ता'क सुग्गा, 'चौकीदारी'क श्रमिक अनुभव आ 'पटोर'क संक्षिप्त अन्हार-साँप बिम्बपर आलोचकक ध्यान विहनि कथाक भाषा-घनत्व चिन्हबैत अछि। 'तरेगन'क बालकथामे बिम्ब आ अन्तिम चुटकीक सम्बन्ध अलग ढंगसँ परखल गेल अछि। बच्चाक लेल कथा रचबाक अर्थ वयस्क विहनि कथाक सरल संक्षेप नहि; बालकक जिज्ञासा, दृश्यात्मक भाषा आ स्वतन्त्र आश्चर्यक क्रम केन्द्रमे रहबाक चाही। मूल लेख एहि विधाभेदकें चिन्हबाक दिशा दैत अछि।

एहि प्रबन्धमे अन्य कथा, कविता आ गीतक पोथीक चर्चा विस्तार पबैत अछि। आलोचनाक प्रवाह त्वरित प्रतिक्रिया, उद्धरण, आस्वादन आ साहित्यिक सार्वजनिकताक टिप्पणी बीच बदलैत रहैत अछि। एकर लाभ अछि समकालीन छोट प्रकाशनक तात्कालिक पञ्जी आ पाठकीय प्रतिक्रियाक संरक्षण; सीमा ई जे सभ कृतिक समान आकारमे विवेचन नहि होइत। कोनो कृतिपर दू पाँतिक प्रशंसा आ दोसरापर लम्बा वैचारिक प्रतिपादनकें समान गहनताक समीक्षा नहि मानबाक चाही।

एहि लेखनकें स्वतंत्र पुस्तकवार समीक्षा-मालाक प्रवेशद्वारक रूपमे व्यवस्थित करल जाय। प्रत्येक शीर्षकक प्रकाशन-विवरण, विधा, प्रमाणित उद्धरण, कथ्य, भाषा आ विशिष्ट सीमा अलग रेखाङ्कित हो; तखन 'नव पोथी'क सामूहिक

परिचय आधुनिक मैथिली साहित्यिक जीवनक विश्वसनीय अभिलेख सेहो बनि सकत। एहि प्रबन्धक प्रमुख उपलब्धि मुख्यधारासँ बाहरक साहित्यिक श्रमकें दृश्य बनायब अछि।

११. 'सगर राति दीप जरय कथाक कथा' : संस्था-स्मृति आ आरोपक प्रमाण-विवेक

उनैसम मूल प्रबन्ध 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक प्रारम्भ, आयोजनक्रम, संयोजन आ इतिहास-लेखनक विवादक चर्चा करैत अछि। मूल लेखक रमानन्द झा 'रमण' द्वारा प्रस्तुत विवरणपर प्रश्न उठबैत छथि आ अनेक व्यक्तिक योगदानक उल्लेख घटाओल वा बढ़ाओल गेल होयबाक आरोप करैत छथि। संस्था स्वायत्त रहल कि आन संगठनक प्रभावमे, गोष्ठीक रजिस्टरक स्थिति की रहल, आ क्रमाङ्कित आयोजनक अभिलेख कोन स्रोतसँ बनल—ई प्रश्न साहित्यिक सार्वजनिकताक इतिहास लेल प्रासंगिक अछि। मुदा मूल लेखमे व्यक्तिसभपर देल आरोपकें स्वतंत्र अभिलेखक पुष्टि बिना स्थापित घटना कहि दोहरायब उचित नहि।

रजिस्टर, ओकर सम्भावित प्रतिलिपि, गोष्ठीक निमन्त्रण, प्रकाशन-सूचना, समाचार-वृत्तान्त आ कार्यक्रम-पश्चात् लिखित विवरणकें प्राथमिक साक्ष्यक पृथक स्तरमे चिन्हित करब चाही। मूल लेख किछु व्यक्तिक कथित बयान तथा छायाप्रतिक अस्तित्वक संकेत दैत अछि; परन्तु वास्तविक प्रतिलिपि, हस्ताक्षर, मूल-पृष्ठक्रम आ सुरक्षित संग्रहस्थान बिना ओकर ऐतिहासिक स्थिति निश्चित नहि होइत। गोष्ठीक आयोजनतिथि, स्थल, संयोजक, पाठित रचना आ उपस्थित लेखकसभक एक समरूप कालक्रम बनला पर अलग स्रोतक विरोध स्पष्ट देखल जा सकैत अछि।

मूल आलोचनामे जाति, संस्थागत पक्षधरता आ पुरस्कार-वितरणक सम्बन्धपर अनेक तीक्ष्ण टिप्पणी अछि। सामाजिक प्रतिनिधित्वक अध्ययन निश्चय आवश्यक अछि, किन्तु कोनो विशिष्ट व्यक्ति द्वारा पक्षपात, प्रतिबन्ध अथवा रजिस्टर नष्ट करबाक आरोप तथ्यरूपेँ स्वीकार करबाक लेल सम्बन्धित पक्षक दस्तावेज आ प्रतिवेदन जाँचब आवश्यक अछि। साहित्यिक आन्दोलनक वैचारिक इतिहास आ विवादक व्यक्तिगत कथन बीच स्पष्ट अन्तर राखलासँ गंभीर संस्थागत आलोचना अधिक विश्वसनीय बनैत अछि; तीक्ष्ण विशेषण स्वयं साक्ष्य नहि।

मूल प्रबन्धक मूल्य साहित्यिक गोष्ठीक संस्थागत स्मृति पर सार्वजनिक प्रश्न उठायब अछि। एकर सीमा अनेक आरोप आ भविष्यकालीन घोषणाक प्रमाणित कालक्रमक अभाव अछि। शोधमूलक समालोचनाक अगिला चरणमे कार्यक्रम-अभिलेख, प्रकाशित प्रतिवेदन, सम्पादकीय संवाद आ सहभागीसभक भिन्न स्मृतिसँ सन्दर्भित निष्पक्ष आयोजन-पञ्जी तैयार करल जाय। तँ 'सगर राति दीप जरय'क इतिहासकें ककरो निजी प्रतिष्ठाक समर्थन अथवा खण्डन नहि, लेखन आ वाचनक सामाजिक इतिहासक रूपमे पढल जा सकत।

कथा, उपन्यास आ साहित्यिक सार्वजनिकताक समेकित निर्णय : समीक्षा १२-१९

द्वादश सँ उनैसम मूल समालोचना धरि आलोचकक रुचि मैथिली कथासाहित्यक अनेक स्तर खोलैत अछि—द्विखण्डी उपन्यासक राजनीतिक कथन, संक्षिप्त कथा आ देशज भाषा, कविता द्वारा संकट-बोध, विहनि कथाक स्वायत्तता, स्त्रीकेन्द्रित कथासंरचना, पुरान कथा-संग्रहक पुस्तक-पञ्जी, नव पोथीक तात्कालिक आस्वादन आ साहित्यिक गोष्ठीक संस्थागत इतिहास। एहि विविधताक कारण सभ लेखपर एकहि समालोचनात्मक मापदण्ड थोपब उचित नहि। रचनाक कलात्मक मूल्य लेल निर्णायक दृश्य आ भाषाक पाठ; प्रकाशन-इतिहास लेल मूल संस्करण; आ संस्था-विवाद लेल विश्वसनीय, परस्पर जाँचयोग्य अभिलेख चाही।

एहि समूहक एकटा दोहराइत गुण अल्पप्रतिष्ठित लेखकसभक कृतित्वकें आलोचनाक केन्द्रमे आनब अछि। संगे दोहराइत सावधानी एहो अछि जे समानान्तर साहित्यक पक्षधरता अपन तर्कक प्रमाणक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। स्रोत-उद्धरणक शुद्धता, प्रथम-द्वितीयक साक्ष्यक भेद, कथासभक विशिष्ट शिल्पगत अभिलेखन आ असहमतिक न्यायपूर्ण प्रस्तुति एही समूहक समीक्षाक समीक्षाकें स्थायी शोधोपयोगी बनबैत अछि।

२०. डॉ. अमरेन्द्रक ‘अंगिका बाल-साहित्य’ : लोकस्मृति, द्विभाषिक अध्ययन आ आलोचनात्मक प्रमाण

डॉ. अमरेन्द्रक ‘अंगिका बाल-साहित्य’ सम्बन्धी एहि मूल समालोचनाक आरम्भहि सँ एकटा स्पष्ट निर्णय अछि: बाल-साहित्यक इतिहास केवल छपल पुस्तकक इतिहास नहि। लोरी, बुझौवल, तुक्तक, खेलगीत आ बाल-लोककथा सँ बालक जे सांस्कृतिक संसार पबैत अछि, से आधुनिक कविताक अथवा कथाक पाछाँ सक्रिय रहैत अछि। समालोचना एहि निरन्तरताकें सांस्कृतिक वंशावलीक रूपमे पढ़ैत अछि। ‘लोक’ कें केवल पुरान अथवा ‘आधुनिक’ कें केवल नव मानबाक बदला दुनूक पारस्परिक लेन-देनपर ध्यान देब एकर विचारणीय

उपलब्धि अछि। मुदा इतिहासक ई निरन्तरता स्थापित करबाक लेल रूपगत समानता आ वास्तविक प्रसार-सम्बन्धक साक्ष्य अलग-अलग देखायब आवश्यक अछि।

समीक्ष्य आलेखमे डॉ. अमरेन्द्रक पोथीक पहिल विभागकें 'अंगिका-बाल-लोकसाहित्य' आ दोसराकें 'आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य' कहल गेल अछि। स्रोतक भीतर पहिल विभागक पृष्ठ ८-४२ आ दोसराक ४३-११२क संकेत अछि; आन ठाम ग्रन्थक पृष्ठ-संख्याक उल्लेखमे भिन्नता सेहो अछि। सम्पादकीय दृष्टिँ एहि संख्यासभकें मूल पोथीक सत्यापित मुद्रित अनुक्रमणिका नहि मानि, प्रस्तुत समालोचनामे दर्ज विवरण मानब उचित अछि। यथार्थ अध्याय-सीमा मिलेनाइ इतिहास-निर्माणक प्रारम्भिक प्रमाण-कार्य थिक, मात्र मुद्रण-सुधार नहि।

एहि समालोचनाक विशिष्ट विन्यास दू भाषामे समानान्तर प्रस्तुति थिक: मैथिलीक विवेचनक बाद ठेठी-अंगिकाक पृथक रूप देल गेल अछि। एहन रचना केवल अनुवाद नहि, क्षेत्रीय भाषामे आलोचनाक पदावली गढ़बाक प्रयोग सेहो अछि। 'बुझौवल', 'लोरी', 'खेलगीत' आ 'बालमन' सन संकल्पनाक भाषिक रूपान्तरमे केहन प्राकृतिक प्रवाह अछि, ओकरा सूक्ष्म रूपेँ परखल जाय। एकहि विचारक दोहराव पाठककें तुलना करबाक अवसर दैत अछि, मुदा जँ भाषिक जोड़ी लेल मात्र समान सामग्री दोहरायल जाए, तँ समग्र आलेख अत्यधिक विस्तारो पाबि सकैत अछि। एहि कारणेँ द्विभाषिकता एकर उपलब्धि आ संरचनात्मक चुनौती दुनू थिक।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्तिक आलोकमे लोरीक श्रुतिलय, बुझौवलक अर्थ-उलटफेर आ लोककथाक विस्मयकें पढ़बाक प्रयास समालोचनाक सैद्धान्तिक बल अछि। पाश्चात्य बालसाहित्य-विचारकें जोड़ि ई पूछल गेल अछि जे बालकक कल्पना, सामाजिककरण आ स्वतन्त्र अनुभवक स्थान कतेक अछि। नव्य न्यायिक स्तरपर बुझौवलक समाधानकें ज्ञानक क्षण मानबाक प्रस्ताव सेहो उपस्थित अछि। मुदा एकटा सुन्दर रूपकक सफल व्याख्या आ प्रमाणित बालमनोवैज्ञानिक प्रभाव एक वस्तु नहि: वास्तविक बालपाठकक प्रतिक्रिया

बिना रस अथवा 'प्रमा'क दावा आलोचकक तर्क रहत, अनुभवजन्य निष्कर्ष नहि।

लोकपरम्पराक प्रलेखनक पक्षमे स्रोतक तर्क प्रभावी अछि। दुर्लभ पत्रिका, गीत आ निजी स्मृतिमे विखरल सामग्री एकटा साहित्यिक इतिहासमे नाम पबैत अछि। बाल-कहानीक तुलनात्मक अल्पविकास, नाटकक सम्भावना आ बालिका-शिक्षाक प्रश्नक उल्लेख इतिहासकें केवल प्रशस्तिपत्र होएबाक जोखिमसँ बचबैत अछि। एतहि एकटा उलटा प्रश्न सेहो ठाढ़ होइत अछि: इतिहासकार स्वयं बाल-गीतक रचयिता होथि तँ भीतरक परिचय लाभ थिक, मुदा आत्म-चयन, अनुपलब्ध लेखक अथवा साहित्यिक परम्पराक असमान प्रतिनिधित्वकें के नियंत्रित करत? स्वतंत्र ग्रन्थ-पञ्जी आ अन्य संग्रहक मिलान एहि प्रश्नक उत्तर दऽ सकैत अछि।

आलेखक सीमा स्रोत-सन्दर्भक असमानता आ पाठालोचनाक असन्तुलनमे अछि। नाटकक पात्र-सम्बन्ध, संवाद आ सामाजिक तनावक आलोचना जतेक विस्तारसँ भेल अछि, ततेक सूक्ष्मता सभ गीत अथवा कथाक परीक्षणमे समान रूपेँ नहि आयल। दोसर दिस सूचीकरणक बिना क्षेत्रीय बालसाहित्यक अगिला इतिहास तैयार करब कठिन रहितय। अतएव 'सूची' कें स्वतः अवैज्ञानिक नहि, बल्कि सूचीसँ विश्लेषण धरि बढ़बाक आवश्यकता बुझल जाय। संस्करण, रचनाकार, प्रकाशन-वर्ष, पत्रिका आ पाठ-साक्ष्यक एकरूप अभिलेख एहि पोथीक समालोचनात्मक उपयोगिता बढ़ाओत।

अन्तिम निर्णयमे एहि आलेखक प्रमुख उपलब्धि ठेठी-अंगिका बालसाहित्यकें अलग साहित्यिक अध्ययनक योग्य विषय बनायब आ ओहि अभ्यासक लेल मैथिली-अंगिका समानान्तर आलोचनात्मक भाषा विकसित करब अछि। एकर सीमा ई जे संभावित बालपाठकक वास्तविक वाचन, आयुवर्ग, सामाजिक स्थिति आ प्रतिक्रिया प्रायः अनुमानक विषय रहैत अछि। आगामी अनुसन्धानमे विद्यालयीय पाठ-सत्र, लोरी-गीतक ध्वनिलेखन, उपलब्ध संस्करणक छवि आ स्वतंत्र पाठक-प्रतिक्रियाक संग एहि समीक्षाक दावाक सामना करायल जाय; तखने साहित्यिक सौन्दर्य, लोकइतिहास आ बालमनोविज्ञानक त्रिकोण अधिक विश्वसनीय बनत।

२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र : सैंतीस कृतिक अन्तर्सम्बन्ध आ बालपाठकक स्वाधीनता

‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ शीर्षकक मूल आलेख गजेन्द्र ठाकुरक सैंतीस बाल-उपन्यासक समीक्षा एकहि साहित्यिक वाङ्मयक रूपमे पढ़बाक प्रस्ताव रखैत अछि। आलेख स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे ई सैंतीस कृति केवल एकठाम जमा पोथी नहि, बरु मौलिक कल्पनाकथा, पशुकथा, लोकवीरगाथा, प्रेमकथा, भक्तिकथा, लोकनाट्य आ संगीत-आख्यानक विस्तृत संसार अछि। एतय समीक्षाक पहिल प्रश्न प्रत्येक अलग कथाक नीक अथवा खराब होयब नहि, एहि अनेक विधामे बालपाठकक अनुभव कतेक एकरेखा अथवा विविध बनैत अछि, से अछि। मुदा सैंतीसक संख्या आ पुस्तक-पहिचान मूल आलेखक दावा थिक; सम्पूर्ण अलग-अलग मूल संस्करणक पुनःपरीक्षण एहि वर्तमान समीक्षा-इकाइक सीमा सँ बाहर अछि।

समालोचनामे भारतीय रस, ध्वनि आ औचित्यक संग पाश्चात्य बाल-साहित्यक अवधारणाकें पूरक कसौटी बनाओल गेल अछि। वीररस लेल दीना-भदरी वा छेछनक गाथा, करुणा लेल महुआघटवारिन, लोकविश्वास लेल उगना, आ स्त्रीक सामुदायिक कलात्मक भूमिकाक लेल जट-जटिन सन प्रसङ्ग आवैत अछि। एतय विधानक वास्तविक परीक्षा ई थिक जे रस केवल आलोचकक श्रेणीकरण नहि रहि, बालपाठकक ग्रहण-प्रक्रिया आ कथावाचनक कलामे कोना रूपान्तरित होइत अछि। विशिष्ट दृश्य, पात्रक क्रिया आ कथाक परिणतिसँ कसौटी जोड़ेबाक स्थानपर केवल रस-नाम लिखि देब प्रमाण नहि होयत।

समग्र आलेखक सर्वाधिक फलदायी औजार रचनासभक परस्पर तुलना अछि। सलहेसक दू रूपक समक्ष-वाचन, चूहडमल आ कृष्णारामक नामगत आ कथागत सम्बन्ध, चौहडमल-रेशमा आ मूँगा-जालिमसिंहक प्रेमकथाक विपरीत परिणति, ‘शोनितक सिनूर’क पुनरावृत्त छवि—ई सभ उदाहरण पाठककें एकहि लोकजगतक अलग सामाजिक नैतिकता बूझयबाक अवसर दैत अछि। विशेषतः मूँगा आ रेशमाक कथामे प्रेम, सामाजिक दण्ड, सहयोगीक बलिदान आ परिणामक अन्तर एहि बातकें उघाइत अछि जे लोकगाथा एके नैतिक शिक्षा

नहि दोहरबैत अछि। एहि अन्तर्वाचनक बिनु सैंतीस पोथीक चर्चा केवल क्रमागत सारांश बनि रहितय।

समालोचक लेखकक कथा-संवरण-शैलीपर सेहो ध्यान दैत छथि: कठिन, हिंसक अथवा अन्तिम घटनाक विस्तार कखनो प्रसङ्गक नैतिक गुरुत्वकें कम कऽ सकैत अछि; आन ठाम संक्षिप्त वाक्य बालपाठककें स्वयं अर्थ गढ़बाक अवकाश दैत अछि। महुआघटवारिनक प्रसङ्गमे स्त्रीक बिक्री आ धारक संघर्ष बालसाहित्यक कठोर सामाजिक प्रश्नक रूपमे आबैत अछि। एकर पाठकीय प्रभाव केवल करुणा नहि; ककर अधिकार बोलैत अछि, ककर निर्णय अन्तिम होइत अछि, आ बालपाठक कतय प्रतिरोध देखैत अछि—एहि तीन प्रश्नसँ शिल्पक समुचित जाँच होयत।

आलेखक 'एक वाङ्मय' वाली स्थापना आवर्ती शैली, अन्तर्पाठीय सूत आ परस्पर द्वन्द्वात्मक मूल्यक आधारपर अछि। क्षमा आ प्रतिशोध, गुरुक आदेश आ नायकक प्रतिरोध, भक्तिक रक्षा आ भक्तक मृत्यु, अन्तर्जातीय प्रेमक अलग परिणति—एहि विरोधास्पद जोड़ीसभकें एकहि नैतिक निष्कर्षमे पगहा दऽ देब समीक्षा-सिद्धान्तक त्रुटि होयत। एकर बदला मूल आलेख बहुल नैतिक संसारक सम्भावना देखबैत अछि। तथापि प्रत्येक कथा ऐहि सैद्धान्तिक नक्शामे समान रूपसँ फिट होइत अछि वा नहि, ओकरा घटना-आधारित स्वतंत्र परीक्षण चाही।

समीक्षाशास्त्रीय सीमामे दूटा बात विशिष्ट अछि। पहिल, एहि लेखमे आलोचक आ अनेक समीक्ष्य रचनाक लेखकक भूमिका एकहि साहित्यिक परियोजनासँ सम्बद्ध अछि; तें आत्मालोचना आ स्वयं-प्रशंसा बीचक विभाजक रेखा स्पष्ट आवश्यक अछि। दोसर, लोकआख्यानक बाल-रूपान्तरण लेल मूल लोकपाठ, उपलब्ध कथाभेद आ बाल-संस्करणक तुलनाक बिना 'मौलिक' अथवा 'परम्परा-निष्ठ' शब्दक निर्णय सावधानीसँ करब चाही। लेखकक मूल सैंतीस कृतिक पृथक पाठ-पञ्जी, शब्द-साम्य आ अन्तरसंस्करणीय परिवर्तन उपलब्ध होएबाक बादे ई निर्णय निर्णायक बनत।

अन्ततः ई आलेख मैथिली बालसाहित्यक आलोचनाकें नैतिक उपदेशक सहज कसौटीसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। एहिमे बालक केवल सुधरबाक पात्र नहि, लोकइतिहास, भाषा, कलात्मक विस्मय आ कठिन नैतिक निर्णयक सक्रिय पाठक मानल जाइत अछि। एहि पक्षक आलोचनात्मक बल अस्वीकार नहि कयल जा

सकैत अछि। मुदा पोथीक पूर्ण प्रभावक इतिहास लिखबाक लेल पाठकक आयु, भाषागत बोध, किछु दृश्यसँ उत्पन्न भय अथवा करुणा आ विद्यालयीय उपयोगपर स्वतंत्र साक्ष्य आवश्यक रहत। प्रस्तुत आलोचना स्रोतमे अन्तर्निहित ३७-समीक्षा-विधानक परीक्षण अछि, स्वतंत्र रूपसँ ३७ मूल पुस्तकक पूर्ण पुनर्समीक्षा नहि।

२२. संस्कृतसँ मैथिली अनूदित तेरह पुस्तक : तुलनात्मक कसौटी आ अनुवादक प्रमाण

‘तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन’ मूलतः संस्कृत साहित्यक विभिन्न विधाकँ एकहि मैथिली अनुवाद-परियोजनाक अन्तर्गत पढ़बाक प्रस्ताव अछि। एकर सूचीमे चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णवप्रहसनम्, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक काव्य-समूह, पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास प्रहसनम् आवैत अछि। तेरह पुस्तक-समूह भीतर अनेक स्वतंत्र रचना समाहित अछि; विशेषतः चतुर्भाणी आ काव्य-त्रयीकँ एकल कृति मानब उचित नहि। एहि गणना-विधिक स्पष्टता अनुवाद-आलोचनाक पहिल पाठसूचीगत कर्तव्य थिक।

समीक्ष्य आलेखक केन्द्र रस, ध्वनि, औचित्य आ रंगमंचीय रूपान्तरक व्याख्या अछि। शाकुन्तलमे शृंगार आ स्मृति, उत्तररामचरितमे करुणा, मुद्राराक्षसमे नीतिपरक संघर्ष, कादम्बरीमे बहुस्तरीय आख्यान आ प्रहसनसभमे संस्थागत व्यंग्यक अलग भूमिका चिन्हित कयल गेल अछि। मुदा हर प्रहसनकँ समान हास्य-कोटिमे राखला पर ओकर नाटकीय बुनावट बिसरि सकैत अछि। भगवदज्जुकमे देह-आत्मा विपर्यय स्वयं हास्यक तर्क बनैत अछि; मत्तविलासमे हेरायल कपाल आ धार्मिक आरोपक घटनाक्रम हास्यक यन्त्र अछि; दामकमे कर्णक महाभारतीय पृष्ठभूमिक संग पेढू अनुचरक व्यवहार टकराइत अछि। शिल्पक ई भेद सैद्धान्तिक श्रेणीसँ बेसी निर्णायक अछि।

मूल आलेख भाणक ‘आकाशभाषित’ कँ मुखर रंगमंचीय प्रयोग मानैत अछि: एक पात्र अनदेखा पात्रसभसँ गप करैत, हुनकर उत्तर स्वयं पुनरावृत्त करैत, पूरा

नागर समाजकें श्रोताक कंठमे साकार करैत अछि। एहि प्रयोगक तुलना पाश्चात्य नाटकीय एकांलापक संग कयल गेल अछि। तुलना उपयोगी अछि, मुदा एकर अर्थ कालक्रमक सीधा वंशसम्बन्ध नहि। संगहि मधुर संवाद अथवा नागर भाषाक मैथिली रूपान्तरकें केवल 'देशज' कहि सफलता प्रमाणित नहि कयल जा सकैत अछि; विशिष्ट संस्कृत वाक्य, अनूदित मैथिली पद आ नाट्यक्रियाक क्रमक मिलान चाही।

प्रहसनसभक केन्द्रमे संस्थागत पाखण्ड, नीतिगत विरोधाभास आ सामाजिक स्थानक उलटफेर अछि। हास्यार्णवक दरबारी व्यंग्य, पालाण्डुमण्डनक व्याज-प्रशस्ति आ मत्तविलासक सम्प्रदायगत आरोप अलग-अलग राजनीतिक परिस्थितिमे उत्पन्न रचनात्मक युक्ति अछि। एहि लेखमे बाख्तिन अथवा पाश्चात्य व्यंग्य-विचारक सहायतासँ तुलनात्मक दरवाजा खोलल गेल अछि; मुदा ऐतिहासिक 'पहिल' होएबाक अतिविस्तृत दावाक लेल अलग दिनाङ्क, पाण्डुलिपि-परम्परा आ विधागत परिभाषाक प्रमाण अपेक्षित अछि। 'ब्राउनिंगसँ पहिने', 'मोलियरसँ पहिने' सन तुलना आलोचनात्मक सन्दर्भ भऽ सकैत अछि, स्वतः प्रभावक प्रमाण नहि।

अनुवादक सफलताक दावामे विशेष सावधानी राखब अनिवार्य अछि। स्रोत आलेख कादम्बरीक समासयुक्त गद्य, जयन्त भट्टक दार्शनिक पदावली, शूद्रकक पात्रानुकूल वाणी, भवभूतिक करुणा आ भगवदज्जुकक देह-आत्मा-सम्बन्धी संवादक मैथिली क्षमतापर जोर दैत अछि। मुदा मूल संस्कृत पाठक प्रमाणित प्रति आ मैथिली संस्करणक पाँति-दर-पाँति समक्ष उपस्थित बिनु शब्दार्थ, अर्थ-क्षति अथवा लय-सफलताक निर्णायक घोषणा नहि करब चाही। अलग संलग्न तेरह पुस्तकक संयुक्त मैथिली संस्करण एहि तुलना लेल लक्ष्य-पाठ उपलब्ध करैत अछि; संस्कृत मूलक स्वतंत्र प्रमाणित प्रति आगाँक विस्तृत अध्ययनमे जुटायल जाय।

दार्शनिक प्रहसनक अध्ययनमे भगवदज्जुकक देहक अदला-बदली पहिचानक प्रश्न खोलैत अछि, जखन कि आगमडम्बरममे विभिन्न दार्शनिक-धार्मिक मतक परस्पर विवाद नाटकीय गतिशीलता पैदा करैत अछि। एतय आधुनिक 'व्यक्ति-पहिचान' अथवा 'धार्मिक सहिष्णुता'क अवधारणा लगा देब उपयोगी व्याख्या होइतहुँ पाठक ऐतिहासिक वातावरणसँ पृथक प्रभाव सेहो उत्पन्न कऽ सकैत

अच्छि। तें प्रत्येक तुलनाक संग मूल दृश्य, पात्रक वक्तव्य आ पाठक समयक दूरी चिन्हित होय। ई पद्धति ग्रन्थकें सार्वकालिक बनबैत, मुदा काल-विभेद नष्ट नहि करैत अच्छि।

एकर स्थायी उपलब्धि संस्कृत साहित्यकें केवल राजदरबारक महानाट्य धरि सीमित नहि मानि, भाण, प्रहसन, व्यंग्य, गद्यकाव्य आ राजनीतिक नाटकक बहुल परम्परा मैथिली पाठकक आगाँ खोलब अच्छि। एकर प्रमुख सीमा अतिदूरस्थ साहित्यिक तुलना आ अनुवाद-सफलताक किछु दावामे लक्षित संस्कृत-मैथिली पाठ-युग्मक अनुपस्थिति अच्छि। आगाँ खण्ड ४३मे प्रत्येक पुस्तक-समूहक स्वतंत्र समीक्षा करैत ओहि सीमा मेटेबाक प्रयास कयल जाय; मुदा वर्तमान समीक्षा केवल एहि समेकित आलोचनात्मक आलेखक तर्क, प्रमाण आ स्थापत्यपर केन्द्रित अच्छि।

२३. जगदानन्द झा 'मनु'क 'माटिक बासन' : कारीगरी, पीढ़ीक संवाद आ कथाक अपूर्ण सामाजिक प्रश्न

एहि मूल समालोचनाक विषय जगदानन्द झा 'मनु'क 'माटिक बासन' अच्छि। समालोचक कथाक बलिष्ठ बीआ माटिक बासनक ठाउँ धातुक बासन द्वारा लेबाक सामाजिक संक्रमणमे देखैत छथि। ओहि परिवर्तनसँ कुम्हारक आजीविका, पीढ़ीगत कारीगरी आ बाजारक बदलैत रुचिक संघर्ष उत्पन्न होइत अच्छि। मूल आलेख कथाकें लेखकक पूर्व बालरचना 'चोनहा'क परिप्रेक्ष्यमे पढ़ैत अच्छि, आ ओहि अपेक्षाक कारण 'माटिक बासन'क कथान्तपर कठोर असहमति प्रकट करैत अच्छि। आलोचनाक इमानदारी एहि बातमे अच्छि जे ओ विषयक सम्भावना आ वास्तविक कथात्मक निष्पत्ति एक वस्तु नहि मानैत अच्छि।

मूल आलेखक अनुसार कथामे पिताक सपनाक भङ्ग आ पुत्रक व्यक्तित्व-विकासक तनाव अन्तिम क्षणमे केन्द्रीय भऽ जाइत अच्छि। समालोचकक आपत्ति अच्छि जे धातुक बासनसँ उत्पन्न आर्थिक संकट, जाहि कारणेँ कथा खुलल छल, से अन्तिम निर्माणमे पर्याप्त विस्तार नहि पबैत अच्छि। ई एकटा ठोस संरचनात्मक प्रश्न अच्छि: कथा सामाजिक विषयसँ आरम्भ भेलापर की ओकर अन्त ताहि सामाजिक विषयक निर्णायक मोड़पर अवश्य होयब चाही? एहि प्रश्नक उत्तर एकरेखा नहि। पिता-पुत्रक सम्बन्ध सेहो बाजारक परिवर्तनसँ

उत्पन्न भयक निजी प्रतिध्वनि भऽ सकैत अछि; मुदा कथा जँ एहि सम्बन्धकें स्पष्ट रूपसँ नहि जोडय, तँ आलोचकक आपत्ति प्रासंगिक रहत।

समीक्षामे 'जिगरी' आ 'पण्डित ओ हुनक पुत्र'क उल्लेख तुलनाक रूपमे अछि। एहि शीर्षकसभक सहायतासँ समीक्षक अपन कलात्मक अपेक्षाक स्वर स्पष्ट करैत छथि, किन्तु कथाक दू अलग परम्पराकें प्रमाणित तुलना मे बदलय लेल मूल तुलनीय रचनासभक पाठ अनिवार्य अछि। केवल एक कृति दोसरा सन नहि भेल, एतेक आधारपर ओकर साहित्यिक मूल्य घटि नहि जाइत अछि। अधिक उचित कसौटी घटनाक कारण-परिणाम, पिताक आ पुत्रक निर्णय-क्रम, कुम्हारक श्रमक ठोस वर्णन आ बालपाठकक दृष्टिसँ संघर्षक बोध होयत।

एहि समीक्षाक उपलब्धि बालकथामे शिल्पगत कठोरता लेल आग्रह अछि। बालकथा लघु होइतहुँ कथ्यक अनुशासनक अधिकारी अछि; बाजारसँ हेरायल कारीगरी सन ठोस विषय केवल करुणा वा उपदेशमे समाप्त होएबाक चाही नहि। सीमा ई जे मूल एकाइ संक्षिप्त आलोचनात्मक प्रतिक्रिया अछि; पात्रक समस्त कथाविस्तार, घटनाक क्रम आ कालान्तरक स्वायत्त विश्लेषण एतय उपस्थित नहि। एहि कारण वर्तमान निर्णय मूल संकलनक समालोचनापर केन्द्रित अछि; स्वतंत्र 'माटिक बासन'क पूर्ण पुनर्पाठ मूल कथा-रूपक उपलब्ध प्रतिक संग करब अपेक्षित अछि।

२४. 'पाठक हमर पोथी किए पढ़थि' : आत्मप्रतिवेदन, पाठक-वितरण आ प्रमाणक प्रश्न

चौबीसम मूल लेख अपन शीर्षकहिसँ पुस्तक आ पाठकक सम्बन्धकें कठोर सार्वजनिक प्रश्न बनबैत अछि: पाठक रचना पढ़ताह कोना, जखन पुस्तक हुनका धरि पहुँचबे नहि करैत अछि? आलेखक आरम्भमे नेपाल, मिथिला आ विदेशक पाठकक प्रसङ्गसँ डाकखर्च, पुस्तकक उपलब्धता आ क्षेत्रीय पुस्तक-वितरणक असमानता उभरैत अछि। लेखक अन्तर्जालक माध्यमसँ अपन लेखनकें भौगोलिक सीमासँ मुक्त करबाक प्रयासक चर्चा करैत छथि। एहि प्रश्नक महत्त्व मात्र विपणन नहि, साहित्यिक लोकतन्त्रक अछि: उपलब्धताक बिना साहित्यक मूल्यपर सार्वजनिक संवाद सीमित पाठक-वर्गमे सिमटि सकैत अछि।

लेखक अपन मौलिक पद्य, गद्य, बालसाहित्य आ अनुवादक विभाग बनबैत छथि। ओकर बाद पूर्व प्राप्त प्रशंसा, आलोचना आ उद्धृत पाठक प्रतिक्रियासभक सहायता सँ लेखनक परिचय विस्तारसँ दैत छथि। एहन ग्रन्थ-पञ्जी लेखकक आत्मसाक्ष्य अछि, आ पाठककें रचनाक विकास-मानचित्र देबाक सामर्थ्य रखैत अछि। मुदा आत्मविवरण, बाहरी आलोचकक राय आ साहित्येतिहासक वस्तुनिष्ठ प्रमाण तीन स्वतंत्र स्तर अछि। उद्धृत प्रशंसाकें ज्यों-का-त्यों आत्ममूल्याङ्कनक निर्णय बना देलासँ आलोचनात्मक दूरी घटैत अछि।

आलेखमे कविता, गजल, हाइकू, हैबून आ अनेक काव्य-प्रयोगक नमूना-दृष्टान्त उपस्थित अछि। पद्यक चयनसँ लेखकक रूपगत विस्तारक संकेत भेटैत अछि, मुदा चयनित अंश पाठ-इतिहासक पूर्ण प्रतिचित्र नहि। कोनो पाँतिक नव सौन्दर्यगत विशेषता घोषित करबाक लेल रचनाक पूर्ण रूप, संग्रहमे ओकर स्थान आ पूर्व काव्य-परम्परासँ वास्तविक भेद परखब पड़त। विशेषतः लघु रूपमे वर्णक्रम, छन्द, दृश्य-बिम्ब आ विरामक अध्ययन विषय-प्रशंसासँ अधिक फलदायी अछि। आत्मसंकलनक एहि सामग्रीकें स्वतंत्र रचनावार समीक्षा लेल स्रोत-पञ्जी मानल जाय, अन्तिम समीक्षात्मक निर्णय नहि।

लेखक आ समीक्षकक बीच भेद एहि प्रबन्धक मूल पद्धतिगत चुनौती अछि। किछु पाठकक प्रशंसा रचनाक वास्तविक ग्रहणक संकेत दैत अछि, मुदा ओकर प्रतिनिधित्वक सीमा निर्धारित करब आवश्यक अछि। उपलब्ध प्रतिक्रियामे कौन पाठक-समूह सम्मिलित अछि, ककर आवाज अनुपस्थित अछि, प्रतिक्रिया कखन लिखल गेल, कृति पूर्ण पढ़ल गेल अथवा चयनित अंश—एहन प्रश्न उठेला पर आत्मप्रतिवेदन साहित्यिक समाजशास्त्रक उपयोगी दस्तावेज बनि सकैत अछि। सम्पूर्णक रूपमे ई लेखक-पाठक संवादक अभिलेख अछि; स्वतंत्र पाठकीय सर्वेक्षण नहि।

एहि आलेखक ऐतिहासिक उपलब्धि लेखनक डिजिटल वितरणकें कृतित्वक चर्चासँ जोड़ब अछि। साहित्यिक संस्था अथवा बाजारक बिनु पाठक धरि पहुँचबाक कोशिश मैथिली सन भाषाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि। सीमा स्रोतक असमान स्वरूप, अतिविस्तृत उद्धरण-शृंखला आ स्वयं प्रस्तुत रचनाक मूल्याङ्कनमे सम्भावित पक्षधरता अछि। आगामी अध्ययनमे मुद्रित आ

डिजिटल संस्करणक दिनाङ्क, पुस्तक-सूची, सार्वजनिक उपलब्धता आ पाठकीय प्रतिक्रिया अलग-अलग अभिलेखित करबाक चाही। एहिसँ ‘हमर पोथी किएक पढ़ी’क प्रश्न ‘पोथी उपलब्ध अछि की, के पढ़ैत अछि, आ कोन अर्थ प्राप्त करैत अछि’ धरि विकसित होयत।

२५. ‘सझिया रोपनि’ : ४३ लेखकक ८६ विहनि कथा आ सम्पादनक कसौटी

‘सझिया रोपनि’ सम्बन्धी पचीसम समालोचना संग्रह-समीक्षाक समुचित उदाहरण अछि। मूल आलेखक अनुसार डॉ. प्रमोद कुमार सम्पादित एहि संग्रहमे ४३ रचनाकारक ८६ विहनि कथा अछि। आलोचक कथाकार-पञ्जीमे २३ पुरुष आ २० महिला लेखकक उल्लेख करैत छथि। ई संख्या मात्र सांख्यिकीय सूचना नहि; मैथिली विहनि-कथामे विविध सामाजिक स्तर आ स्त्री-लेखनकें एकहि संग्रहमे स्थान देबाक सम्पादकीय प्रयत्नक साक्ष्य थिक। मुदा प्रतिनिधित्वक निष्पक्षता केवल संख्यासँ तय नहि होइत; चयन-प्रक्रिया, विषयगत अवसर, लेखकक पृष्ठभूमि आ रचनाक गुणस्तर सेहो अलग-अलग जाँचल जाय।

मूल आलोचनामे घनश्याम घनेरोक ‘अछोप’, मुन्नाजीक ‘फोकस!’, नारायणजीक ‘कुशल’ आ प्रमोद कुमार झा ‘गोकुल’क अलंकृत गद्यक चर्चा अछि। एहि उदाहरणसभसँ समीक्षक सिद्ध करय चाहैत छथि जे विहनि कथा छोट होइतहुँ कटाक्ष, सूक्ष्म कथानक आ भाषिक सज्जाक अलग-अलग स्वरूप धारण कऽ सकैत अछि। ‘कुशल’क एक पूर्व प्रकाशित कथासँ कथावस्तुगत साम्यक उल्लेख विशेष ध्यान खींचैत अछि; एकहि विषय पर अलग रचना सम्भव अछि, मुदा ओकर स्वतंत्रता घटनाक चयन, दृष्टिकोण आ अन्तिम मोड़सँ परखल जाय। केवल कथ्यक साम्य मौलिकता-विरोधी प्रमाण नहि।

संग्रहक सम्पादक विहनि कथाक रूप-निर्णय लेल संक्षिप्तताकें कठोर कसौटी बनबैत छथि—मूल समीक्षाक अनुसार लगभग सय शब्दमे दू मिनटक पठनीयता। एतहि आलोचक प्रासंगिक प्रतिपक्ष उठबैत छथि: शब्दक सीमा विधाक सार्वकालिक व्याकरण नहि। विहनि कथामे कथानकक बीआ, अर्थगत परिवर्तन, पाठकक सक्रिय सहभागिता आ अन्तिम ध्वनिक अपेक्षा शब्दसँ कम

महत्त्वपूर्ण नहि। हास्यकणिका, स्त्री-विमर्श, कोरोना वा सामाजिक मञ्चक अनुभव—सभ विषयक संक्षिप्त पाठ समानरूपेँ कथा बनत वा नहि, से रूपगत परीक्षण माँगैत अछि।

एहि समालोचनाक उपलब्धि संग्रहक विविधता पर ध्यान देब आ शब्द-संख्या केन्द्रित संकीर्ण नियमक आलोचनात्मक प्रतिवाद अछि। एकर प्रमुख सीमा ई जे ८६ कथाक पूर्ण कथानक, कथन-विधि आ समापनक व्यक्तिगत समीक्षा प्रस्तुत अंशमे समान विस्तारसँ उपस्थित नहि; चयनित उदाहरणक आधारपर समूचा संग्रहक सौन्दर्यगत निष्कर्ष स्थगित राखब चाही। सम्पूर्ण संग्रहक भविष्यक अध्ययनमे रचना-शीर्षक, लेखक, शब्द-संख्या, अन्तिम दृश्य, पात्रक निर्णय आ कथ्यक अर्थ-उत्पादकता सहित तुलनात्मक सारणी बनाओल जाय।

समग्र निर्णयमे ‘सझिया रोपनि’ एकटा साहित्यिक विधाक सार्वजनिक निर्माणमे सम्पादकक भूमिकाकेँ चिन्हबैत अछि। एतय सम्पादन मात्र सामग्री जोड़ब नहि, कोन प्रकारक संक्षिप्त कथाकेँ विहनि कथा नामसँ स्वीकार कयल जाय, एहि साहित्यिक प्रश्नक उत्तर देब सेहो अछि। मूल समालोचना एहि विवादकेँ स्पष्ट रूपेँ खोलैत अछि, आ तकर सबल बिन्दु विविध रचनाप्रकारक सहअस्तित्व अछि। कमजोर बिन्दु रूप-लक्षणक परीक्षण लेल किछु उदाहरणपर अत्यधिक निर्भरता अछि। स्वतंत्र कथा-वार पाठसाक्ष्य एहि निर्णयकेँ आओर कठोर बनाओत।

२६. जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘माटिक बासन’ : दोसर आलोचनात्मक टिप्पणीक पुनर्परीक्षण

छब्बीसम मूल प्रविष्टि पुनः जगदानन्द झा ‘मनु’क बालकथा ‘माटिक बासन’ आ ओहिपर गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक टिप्पणी समेटैत अछि। एकर पहिल अंशमे केदार प्रसादक कुम्हारी, माटिक घैल-ढाकनक घटैत माँग, आ हुनक पुत्र विभूक मूर्तिकला दिस बढ़ैत कौशलक विकास अछि। विभू दसम वर्गक बाद मूर्तिकला चुनैत अछि, प्रादेशिक प्रतिष्ठा कमबैत अछि आ अखिल भारतीय प्रदर्शनीक अवसर पवैत अछि। एतय कथाक भौतिक जगत मात्र पृष्ठभूमि नहि:

रोजी-रोटीमे तकनीकी प्रतिस्थापन, गुरु-शिष्य श्रम, आ नूतन बाजारक बीच कथा खुलैत अछि।

मूल आलोचना एक महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक अन्तर चिन्हैत अछि। कथाक आरम्भ माटिक बासनक स्थान धातुक बासन द्वारा लेबाक संकटसँ होइत अछि; अन्तिम दृश्य पिता द्वारा पुत्रक कलात्मक पूर्णताबोधपर चेतावनीमे समाप्त होइत अछि। केदारक 'मुदा' कहि कऽ मूर्तिमे सुधार बतायब आ विभूक आहत प्रतिक्रिया कथा केँ शिक्षाप्रद परिणति दैत अछि। मुदा आरम्भमे उठल पेशागत विस्थापनक सामूहिक प्रश्न, कुम्हार समाजक जीविका आ बासनसँ कलामे अर्थव्यवस्थाक बदलाव अन्त धरि विकसित नहि होइत अछि। मूल समालोचकक आपत्ति एहि कथ्यगत सरकावपर आधारित अछि, केवल उपदेशात्मक समापनपर नहि।

आलोचक तेलुगु उपन्यास 'जिगरी'क अंग्रेजी रूपान्तर 'Friends Forever'क उल्लेख करैत छथि; ओहिमे जनावर नचाबऽ वला परिवारक जीविका आ प्रशासनिक निषेधक सामाजिक परिणाम मुख्य अछि। एहि तुलनाक फलदायी पक्ष ई अछि जे दू पाठ लुप्तप्राय जीविकाक सामाजिक पुनर्वासकेँ कथागत केन्द्र बनाबि सकैत अछि। मुदा उपन्यास आ बाल-विहनि कथा आकार, विधा आ लक्षित पाठकमे भिन्न छथि। तँ 'जिगरी'क विस्तृत सामाजिक विवेचनकेँ 'माटिक बासन' लेल एकमात्र अनिवार्य प्रतिमान मानब विधागत न्याय नहि होयत; प्रश्न ई अछि जे छोट कथाभीतर मूल संघर्ष केँ कतेक कलात्मक तीक्ष्णता भेटल।

'पण्डित ओ हुनक पुत्र' आ जगदानन्दक 'चोनहा'क उल्लेखसँ आलोचक बालसाहित्यक भीतर शैलीगत अपेक्षा स्पष्ट करैत छथि। 'चोनहा'क प्रशंसा आ वर्तमान कथाक औसत उपलब्धिक तुलनामे मूल्य-निर्णयक आत्मविश्वास अछि, मुदा दुनू अन्य पाठक स्वतंत्र सूक्ष्म परीक्षण एहि प्रबन्धमे नहि प्रस्तुत कयल गेल अछि। स्रोत उद्धृत करैत समीक्षा-पद्धतिक एहि सीमा केँ चिन्हब आवश्यक अछि। विशेषतः 'माटिक बासन'क आलोचना मूल समालोचना क्रम २३क विषयसँ मिलैत अछि; दूटा मूल इकाईक उपस्थितिक अर्थ दूटा स्वतंत्र कथा नहि, एकहि कथापर अलग आलोचनात्मक विस्तार अछि।

एहि इकाईक स्थायी मूल्य सामाजिक संकट बनाम व्यक्तिगत नैतिक शिक्षाक द्वन्द्व स्पष्ट करब अछि। पिता अपन पुत्रकेँ सीख दैत छथि जे आत्मसन्तोष विकास रोकेत अछि; ई शिक्षा अपन स्थानपर प्रभावी भऽ सकैत अछि। मुदा युवा शिल्पीकेँ उपलब्ध सरकारी प्रदर्शनीक अवसर, कुम्हारक बदलैत बाजार आ उत्पादनक सामाजिक सन्दर्भ पर कथा अधिक आत्मविश्वाससँ लौटितय तँ आरम्भिक प्रतिज्ञाक कलात्मक प्रतिफल पैघ बनितय। समीक्षाक निर्णायक निष्कर्ष ई थिक जे शिल्पगत एकता केवल उपसंहारक मार्मिकतासँ नहि, आरम्भिक कारण-श्रृंखलाक परिपाकसँ निर्धारित होइत अछि।

२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला : मिथिला चित्रकला, अनुवाद आ सामाजिक शिक्षाक कृतित्व

सत्ताइसम प्रविष्टि अपना शीर्षकमे कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक कृतित्वक परिचय रखैत अछि, मुदा एकर पाठमे मिथिला चित्रकलाक सामाजिक शिक्षा, शैलीगत भेद आ श्वेता झा चौधरीक चित्रावली सेहो सम्मिलित अछि। स्रोत कृष्ण कुमार कश्यपक जन्म १५ सितम्बर १९४९ आ मृत्यु १२ अगस्त २०२० अंकित करैत अछि; १९६५क बालकक 'नाइट स्कूल' आ १९८१मे कला-आधारित शिक्षण लेल संस्था बनयबाक उल्लेख करैत अछि। ई जीवनी-तथ्य मूल पाठक अभिलेखित कथन छथि, स्वतंत्र अभिलेखीय सत्यापन एहि समीक्षाक सामग्रीमे उपलब्ध नहि।

कश्यप आ शशिबालाक संयुक्त कार्यक्षेत्रमे 'मेघदूत' आ 'गीतगोविन्द'क मैथिली अनुवाद, 'माछ-भात', मिथिला चित्र-प्रवेशिका, अरिपन आ गोदना-चित्रशैलीक प्रशिक्षण-सामग्रीक उल्लेख अछि। एहि सूचीसँ कला-शिक्षाक व्यापक धारणा बनैत अछि: रंगरेखा केवल सौन्दर्यक अभ्यास नहि, भाषा, हस्तकला, अध्यापन आ सामुदायिक रोजगारक मध्यस्थ बनैत अछि। तथापि नामक सूचीसँ प्रत्येक ग्रन्थक अनुवाद-निष्ठा वा कलात्मक उपलब्धि सिद्ध नहि होइत अछि; ताहि लेल संबंधित पाठ, चित्र आ संस्करणक प्रत्यक्ष तुलना आवश्यक रहत।

मूल लेखक कश्यपक साक्षात्कारक आधारपर 'मिथिला चित्रकला' केँ 'मधुबनी चित्रकला' कहबाक क्षेत्रीय सीमापर चिन्ता उठबैत छथि। बाहरी क्रेताक 'मूल स्थान'क धारणासँ दरभंगा आ अन्य क्षेत्रक कलाकारक पहचान कम होयबाक प्रसङ्ग प्रस्तुत अछि। एहि साक्ष्यक महत्त्व बाजारद्वारा निर्मित प्रामाणिकताक प्रश्नमे अछि। कला-परम्पराक नामकरण केकर अनुभव, केकर भौगोलिक प्रतिष्ठा आ केकर आजीविका केँ सामने रखैत अछि—एहि प्रश्नकेँ लेखक साक्षात्कारक माध्यमसँ मूर्त बनबैत छथि। मुदा एक साक्षात्कारक व्यावहारिक अनुभवकेँ समस्त बाजारक निश्चयात्मक इतिहास मानि लेब अनुपयुक्त होयत।

दलित-आदिवासी चित्ररेखा आ गोदना शैलीक समावेश, मुसहर समुदायसँ आवऽवला हस्तकला-प्रेरणा, चित्र बनबामे कठिनाई भेला पर टोकरी वा वस्त्र-कला दिस विकल्प, आ डोम तथा मुस्लिम छात्राक सहभागिता एहि आलेखक सामाजिक केन्द्र अछि। शशिबालाक भूमिका मात्र 'शिष्या'क नहि; अध्यापिका आ माध्यम-निर्मात्रीक रूपमे प्रस्तुत अछि। एहि दृष्टिसँ स्त्रीक कौशल, जातीय बहिष्करणक प्रतिरोध आ कलात्मक पद्धतिक विस्तार एहि विषयक तीन रूप बनैत अछि।

अगिला भागमे श्वेता झा चौधरीक परिचय आ एककीस क्रमांकित चित्रक संक्षिप्त प्रसङ्ग अछि। धानकटनीमे सामूहिक स्त्रीश्रम, राधाकृष्णक प्रेम, सावनक झूला, डोली-कहार, करिया झुम्मरि, साधु, दुर्गापूजा, काली, पनिभरनी आ सूर्यक प्रतीक कतेको दृश्य-विषयक रूपमे अबैत अछि। प्रत्यक्ष मूल चित्रक रंग-संतुलन, रिक्तस्थान, रेखागठन आ शैलिगत सूक्ष्मताक विश्लेषण एहि पाठ-आधारित अध्ययनमे निर्णायक रूपसँ नहि कयल जा सकैत अछि; वर्णनपर आधारित निष्कर्ष आ वास्तविक चित्रावलोकनक निष्कर्ष अलग राखब पड़त।

समग्र रूपेँ ई प्रविष्टि संस्मरण, साक्षात्कार, संक्षिप्त जीवनी, कृति-पञ्जी आ चित्र-सूचीकेँ एकत्र करैत अछि। एकर उपलब्धि मिथिला चित्रकलाकेँ प्रतिष्ठित कलादिर्घाक वस्तु नहि, बहुल समाजक जीवित शिक्षण-विधि मानब अछि। एकर पद्धतिगत कमी ई जे कश्यप-शशिबालाक कृतित्वसँ श्वेता झा चौधरीक अलग चित्र-परिचयपर संक्रमणक स्पष्ट आलोचनात्मक सेतु कम अछि। अध्यायकेँ

शोधात्मक रूपसँ समृद्ध करबाक लेल संस्करणवार ग्रन्थ-पञ्जी, साक्षात्कारक तिथि, चित्रक माध्यम-आकार आ कलाकारक श्रेय पृथक अभिलेखित होयबाक चाही।

२८. पं. बाल गोविन्द 'आर्य' : वर्ण-प्रकरण आ स्वाधीन मैथिली व्याकरणक प्रश्न

अठाइसम प्रविष्टि पं. बाल गोविन्द 'आर्य'क 'वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका'कें मैथिली व्याकरणक स्वाधीन चिंतनसँ जोड़ैत अछि। शुरुआत दिल्लीक एक साहित्यिक संगोष्ठीमे मैथिलीमे स्वकीय व्याकरण अभावपर उठल प्रश्नसँ होइत अछि। लेखकक आपत्ति ई अछि जे हिन्दी वा संस्कृतक व्याकरणमे किछु रूपबदल करब मात्र मैथिलीक पूर्ण व्याकरण नहि बनि सकैत अछि। मूल पाठक तर्क भाषाक स्वतन्त्र विश्लेषणपर केन्द्रित अछि, यद्यपि सम्पूर्ण व्याकरणग्रन्थक प्रतिपादन एहि संक्षिप्त प्रविष्टिमे उपस्थित नहि।

प्रथम सिद्धान्तक रूपमे ई आपत्ति संगत प्रश्न उठबैत अछि: मैथिलीक पुरुष, वचन, सम्मानसूचकता, रूपविकल्प, क्रियाकाल, वाक्य-क्रम आ बोलचालक स्थानीय विन्यासकें बाह्य भाषाक कोटिक माध्यमे कतेक ठीकसँ बुझल जा सकैत अछि? लेखक उदाहरण दैत छथि जे हिन्दीमे 'हम'क बहुवचन-प्रयोग आ मैथिलीमे एकवचन-प्रयोगक अन्तर बुझाबब पर्याप्त नहि। एहि उदाहरणसँ भाषा-पृथकताक प्रश्न आरम्भ होइत अछि, समाप्त नहि। प्रत्येक व्याकरणिक वर्गक प्रमाण प्राकृतिक प्रयोग आ विविध भाषिक समुदायसँ एकत्रित होयबाक चाही।

प्रबन्ध गोविन्दाचार्यक घुमक्कड़ स्वभाव कें पाणिनिक यात्रासँ तुलित करैत अछि आ भिन्न स्थानक शब्दस्वरूपकें व्याकरणिक स्वीकार्यता देबाक पक्ष रखैत अछि। संस्कृतमे 'नीर' आ 'जल'क उदाहरण पानि विषयक क्षेत्रीय शब्दावलीक भिन्नता स्वीकारबाक आग्रह अछि। मुदा शब्दावलीक क्षेत्रीय समावेश आ व्याकरणक नियम-निर्माण पृथक अध्ययन-क्षेत्र छथि; लोकशब्दक व्यापक संग्रहसँ मात्र वाक्य-विन्यासक सिद्धान्तक सत्यता प्रमाणित नहि होइत अछि।

एहि संक्षिप्त लेखनक साहित्येतिहासिक उपयोग 'मैथिलीक अपन व्याकरण'क सार्वजनिक माँग केँ अभिलेखित करब अछि। कोन पूर्व व्याकरणकार की विश्लेषण केलनि, गोविन्द 'आर्य'क वास्तविक परिभाषा आ उदाहरण कोन-कोन अछि, आ प्रस्तावित नियम भाषिक विविधताकेँ कतेक समेटैत अछि—ई सभ पर विस्तृत उत्तर लेल मूल 'वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका' आ अन्य मैथिली व्याकरणक तुलनात्मक पाठ अनिवार्य अछि। तँ वर्तमान प्रविष्टिक प्रशंसा केँ पूर्ण प्रामाणिक व्याकरणिक परीक्षणक पर्याय नहि मानल जाय।

२९. रमेशक 'कथा-समय' : विखण्डन, द्वन्द्व आ कथागत प्रमाणक समीक्षा

उनतीसम मूल प्रबन्ध रमेशक 'कथा-समय'केँ 'समानान्तर' (१९९७) आ 'समाड' (१९९१)क कथासभक समेकित पाठ मानि विखण्डनवादी दृष्टिसँ पढ़ैत अछि। आलोचनाक प्रतिज्ञा ई अछि जे कथा केवल सामाजिक यथार्थक प्रतिछवि नहि, अर्थ बनयबाक आ बिगाड़बाक भाषा-प्रक्रिया सेहो अछि। देरिदाक अर्थ-स्थगनक अवधारणाकेँ पिता-पुत्र, रक्षक-भक्षक, गाम-नगर आ विकास-विनाश सन द्वन्द्वक सहायतासँ लागू करबाक प्रयत्न भेटैत अछि। एहि प्रतिज्ञाकेँ प्रासंगिक मानितहुँ एकरा प्रत्येक कथापर एकहि तैयार सूत्रक रूपमे लागू करब जोखिमपूर्ण अछि।

'पलास्टी के खेलौना'मे पंडित रविशंकरक सितार आ बालकक पेस्तौल-आकर्षणक बीच संस्कारगत टकराव उभरैत अछि। हिंसा बालक लेल आधुनिक चपलताक चिह्न बनि जाइत अछि, जखन पिता कलाकेँ मानवीय मूल्य मानैत छथि। मूल प्रबन्ध एहि स्थानपर कला-हिंसा द्वन्द्व टूटब देखबैत अछि; मुदा कथाक वास्तविक शक्ति बालमनक आत्मनिर्भर अर्थनिर्माण, दृश्य-माध्यमक प्रभाव आ अभिभावकीय नियन्त्रणक विफलताक एकसंग प्रदर्शनमे सेहो अछि। एहि अतिरिक्त स्तरक बिना केवल 'द्वन्द्व-विघटन' कहि देब आलोचनाकेँ संकुचित करैत अछि।

'कनखी'मे १९९१ सँ २०१९ धरि बिजलीक अभावक पुनरावृत्ति आ अन्हारमे सेहो बिल भेटबाक प्रसङ्ग संस्थागत समयक ठहरावकेँ रूपायित करैत अछि।

‘नरमेध’ दहेजसँ जुड़ल जमीन-बिक्री आ पारिवारिक त्यागक हिंस्र अर्थशास्त्र खोलैत अछि। ‘नागदेसमे अएनाक व्यवसाय’मे परम्परा-आत्मदर्शनक टकराव, ‘दुधुआ’मे मातृत्व आ देहक उपयोग, ‘ऑक्टोपस’मे शहरी प्रदूषण, ‘प्रवेश-निषेध’मे यौनशिक्षासँ सम्बन्धित मौन, आ ‘ध्रुपद-धमार’मे महगीक बीच पेंशनजीवीक संकट प्रस्तुत अछि। एहि कथागत भिन्नता पुस्तकक वास्तविक व्यापकता देखबैत अछि।

मूल प्रबन्धक ‘एक सेर चाउर’, ‘सहानुभूति’, ‘लुट्टीस-केस’ आ ‘अक्ष आ वृत्तचक्र’ सम्बन्धी टिप्पणी सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। सम्मान-भूख, संरक्षण-शोषण, बान्ह-सुरक्षा आ प्रेम-आर्थिक हिसाबक विरोधी भाव एक-दोसरपर निर्भर सिद्ध होइत छथि। तथापि प्रत्येक कथा लेल पात्रक नाम, निर्णायक कथन, अन्तिम परिवर्तन आ पाठ-सन्दर्भ अलग नापले नहि होय तँ सैद्धान्तिक शब्दावली कथा-विशेषक भिन्नता धुँधला सकैत अछि। ‘रक्षक भक्षक बनल’ कहवाक संगहि ई देखायब आवश्यक अछि जे ई बदलाव कथाक कोन घटना आ कथन-युक्तिसँ साकार होइत अछि।

आलेखक अन्तमे देल सन्दर्भ-सूचीमे एकहि पाश्चात्य अवधारणा सम्बन्धी किछु वेबसाइट बारंबार दोहरायल अछि। सन्दर्भक संख्या ओकर गुणवत्ताक गारंटी नहि; देरिदाक अवधारणाक व्याख्या लेल प्राथमिक ग्रन्थ, सत्यापित संस्करण आ उपयुक्त पृष्ठक्रमक जरूरत अछि। लेखमे लेखकक कथानक-विवरण पर आधारित जखन ‘विखण्डन’क निर्णय बनैत अछि, ओ निर्णय तुलनात्मक समीक्षाक रूपमे फलदायी अछि; मुदा कतहु एहि एक सिद्धान्तक सार्वभौमिकता कथा-दृष्टिक आन सम्भावना, जेना दलित विमर्श, स्त्रीवादी आलोचना आ आर्थिक इतिहास, केँ उपेक्षित कऽ सकैत अछि।

एहि समालोचनाक उपलब्धि मैथिली कथा-विमर्शमे भाषा आ सत्ता-सम्बन्धक प्रश्नकेँ केन्द्रीय बनायब अछि। सीमा ई जे संकलित सब कथाकेँ एकहि दार्शनिक संज्ञासँ व्याख्यायित करब पर्याप्त नहि। एकर पूर्ण विकसित रूपमे मूल कथा,

समय-सन्दर्भ, कथावाचक, रूपक आ उद्धृत संवादक व्यक्तिगत सत्यापनक बाद फरक-फरक आलोचनात्मक निर्णय देल जाय; तखन 'कथा-समय' वास्तवमे अर्थक अस्थिरताक संग सामाजिक अनुभवक विशिष्ट इतिहास सेहो बनि सकत।

३०. उमेश पासवानक 'मुजरिम' : दोषारोपण, जाति-सत्ता आ लोकन्यायक प्रतिपाठ

तीसम मूल समालोचना उमेश पासवानक कथा-संग्रह 'मुजरिम'क ग्यारह कथाकें सामाजिक पदानुक्रमक उलट सम्बन्धसँ पढ़ैत अछि। संग्रहक शीर्षकक व्यंग्यार्थ—अपराध के करैत अछि आ 'मुजरिम' नाम केकरापर आरोपित होइत अछि—समीक्षाक मूल सूत्र अछि। 'सुनन्दा'मे रास्ताक कात भेटल नवजातकें घर अननिहार युवतीपर गामक अपवाद लगब आ बादमे शिशुक जन्म-परिचय खुलब सामाजिक सम्मानक लिंगगत असमानता देखबैत अछि। ओतय कथा नैतिक साहसक प्रशंसा करैत अछि; मुदा समाजक आरोप-प्रक्रिया पर प्रश्न ओकर अधिक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक पक्ष अछि।

'सोलकनमा पोखैर'क कथामे जातिभेदक कारणेँ अपवित्र मानल पानिक स्रोत अगिलगगीमे गामक जीवनरक्षक बनैत अछि। 'गिरहत घरपर गिद्ध'मे दलित श्रमिक मरल पशु उठेबासँ मना करैत छथि तँ जमींदारी सत्ता अपन दैनिक निर्भरताक सामने असहाय देखाइत अछि। ई दुनू कथा 'शुद्ध' आ 'अशुद्ध', 'स्वामी' आ 'सेवक'क सामाजिक कल्पनाक ठोस भौतिक आधार उजागर करैत अछि। मूल समालोचक सही स्थानपर देखैत छथि जे अपमानित लोकक श्रम पर सामाजिक प्रतिष्ठाक सत्ता टिकैत अछि। तथापि रूपकक नैतिक प्रभाव आ वास्तविक सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालिक परिणाम एकहि वस्तु नहि।

'पगला पुल'मे विनीत दासक साहस शिक्षित-अधिकारी लोकनिक असहायताकें उद्घाटित करैत अछि; 'तेतर दास'मे संस्कृतविद् साधुक धार्मिक पदपर पहुँचबाक बेरा जातिजन्य अवरोध सामने अबैत अछि। एहि दुनू कथामे ज्ञान वा क्षमता आ सामाजिक मान्यताक अन्तर प्रश्नवाचक रूपेँ ठाढ़ अछि। कतेक लोक बुद्धिमान छथि, से समाजक पदवीसँ नहि निर्धारित होइत; पात्रक काजक

नैतिकता ओकर वास्तविक परख बनैत अछि। मूल अध्ययनक उपलब्धि एहि पदानुक्रमकें कथानकक निर्णायक घटना जोड़ि स्पष्ट करब अछि।

‘कोदारि छाप’मे आरक्षित पंचायत सीट पर दलित महिला फेकनीक औपचारिक जीत वास्तविक अधिकारक सुनिश्चितता नहि दैत अछि, कारण प्रभावशाली फोल्टरक नियन्त्रण राजनीति कें मुखौटाधारी सत्ता बना सकैत अछि। कोदारि चिह्न खेत-मजूरी आ श्रमिक पहचानक संकेत थिक, मुदा चुनावी जीतक बाद ओकर अर्थ राजनीतिक प्रतिनिधित्वक विरोधाभासमे बदलैत अछि। ई कथा आरक्षणक संवैधानिक विचारक खण्डन नहि, प्रतिनिधित्व आ वास्तविक निर्णयाधिकारक बीचक अन्तरक आलोचना रूपमे पढ़ब अधिक तर्कसंगत अछि।

‘सहोदरा’मे जनक आ प्रेमक भाइचारा तथा पारिवारिक विवादमे स्त्रीपर दोष देबाक रूढ़ि साथे-साथे अछि; समालोचक एहि अन्तर्विरोधकें चिन्हैत छथि।

‘विधवा विवाह’मे सुशीलाक पुनर्विवाहक समर्थनक बीच पुरुष उद्धारकक भूमिका आ स्त्रीक देह-सौन्दर्यपर अधिक बल पड़बाक प्रश्न अछि। ‘श्रमदानी बान्ह’मे बाढ़िसँ रक्षाक सार्वजनिक श्रम आ स्थानीय पदाधिकारीक निजी लाभक टकराव राजनीतिक नाटक बनैत अछि। तीनू कथासभ अलग समुदाय आ लिंग अनुभव लऽ अबैत अछि; हुनका केवल जाति-सत्ताक एकहि व्याख्यात्मक डब्बामे राखि देब उचित नहि।

‘मुजरिम’ पर मूल प्रबन्धक बड़ उपलब्धि ई अछि जे कथाक नैतिक केन्द्रकें सामाजिक प्रतिष्ठाक केन्द्रसँ अलग करैत अछि। मुदा केवल ‘द्वन्द्व उलटि गेल’ कहब साहित्यिक मूल्याङ्कनक पूर्ण कसौटी नहि: प्रत्येक कथाक कथावाचक, घटनाक सम्भाव्यता, पात्रक आत्मनिर्णय आ समापनक कलात्मक तनाव पर सेहो निर्णय चाही। मूल संग्रहक समस्त पाठक स्वतंत्र प्रति उपलब्ध रहलापर समीक्षा-स्थितिक पुष्टि होयत; एतय वर्तमान विश्लेषण संयुक्त प्रबन्धमे प्रस्तुत कथा-वृत्तान्त आ तर्कक आलोचनात्मक पुनर्पाठ अछि।

३१. रा. ना. सुधाकरक 'दीयरि' : सीमा-भूगोल, स्त्री-अनुभव आ बहुपद्धतिगत आलोचना

एकतीसम मूल आलेख रामनारायण सुधाकरक 'दीयरि' कथा-संग्रहकें विराटनगर-जोगबनी सीमा, ग्रामीण मिथिला आ नेपालक शहरी जीवनक त्रिकोणमे रखैत अछि। स्रोत लेखनक कालविस्तार १९७६-२०२० धरि मानैत अछि। एहन समयक विस्तार कृतिक ऐतिहासिक महत्वक संकेत दैत अछि, मुदा विभिन्न कथा कोन वर्ष लिखल, संशोधित भेल वा पुनःप्रकाशित भेल—एहि तथ्यक पृथक सूची बिना कथाकारक वैचारिक क्रमविकासक निश्चित चित्र नहि बनत। स्रोत भूगोलक तीन विभाजन कथा-विश्वक प्रवेशद्वार अछि, पूर्ण आलोचनात्मक निष्कर्ष नहि।

'प्रदक्षिणा'मे गाम, मित्रता आ उजड़ैत अनुभव; 'दीयरि'मे सुशीला, बूढ़ ससुर आ प्रथमपुरुष पतिक बीच घरेलू निर्णयक कठिनता; 'चोलिया मे चोर बसे गोरी'मे देह-भाषा आ ग्रामीण यौवन; 'खुट्टी पर टाँगल ब्रा'मे आर्थिक विवशता आ वस्तु-देह सम्बन्ध; 'चान असोथकित अछि'मे वृद्धावस्था आ सामाजिक पाखण्ड—एहि मूल टिप्पणीक क्रम स्त्रीक देहकें एकमात्र कथ्य बनबैत नहि अछि, अपितु पारिवारिक सत्ता, बाजार आ आयुक्त स्थिति अनुसार बदलैत अर्थ देखबैत अछि। 'दीयरि'क शीर्षकक द्विपीय रूपककें घरेलू अवरोधक संग जोड़ि पढ़ब सफल आलोचनात्मक सम्भावना अछि; मुदा पात्रक आवाजसभ परस्पर कतेक स्वतंत्र छथि, से कथन-व्यवस्थासँ स्थापित होयबाक चाही।

'झखडल फूलक गाछ'मे बहुविवाह आ परित्यक्त स्त्री, 'घरमुँहा'मे शहरी एकाकीपन, 'उपहार'मे यशोधराक उपेक्षित अनुभव, 'चिल्होडि उडि रहल अछि'मे बेरोजगारी आ भरोसाक क्षरण, 'नुक्का चोरी'मे सामाजिक निषेधक बीच प्रेम, 'कर्जखोर'मे ऋणक दबाव, आ 'रामपरी'मे पत्रात्मक आत्मस्वरक चर्चा मूल समालोचनाकें विषयगत विविधता दैत अछि। विविधताक अर्थ साहित्यिक

समान गुणवत्ता नहि। प्रत्येक कथामे घटनाक दृष्टिबिन्दु, भाषा-गति, अन्तिम निर्णय आ कथात्मक मौनक परख सँ तखन कलात्मक अन्तर स्पष्ट होयत।

‘अस्तित्व’क तीन भाइ आ वृद्ध पिता, ‘सुनगैत करज’क महेशवा, ‘थकुचल मासुक बुट्टी’क कलाकार-समाज सम्बन्ध, ‘खण्डित लोक’क पीढ़ीय संघर्ष, ‘छागर’क स्त्री-प्रतिरोध, ‘परिवेश’क राजनीतिक महत्वाकांक्षा, ‘छाहरि तर क काँट’क न्याय-विवाद, ‘संधि’क सीमा-जीवन, ‘स्वप्न-भंग’क कल्पना आ ‘कोनो एक दिन’क महामारीजनित अकेलापन संग्रहकें एकमात्र ‘स्त्री-संघर्ष’क परिभाषा सँ बचबैत अछि। आलोचकक कथासूत्र-प्रधान सार्थकता एतय देखाइत अछि, मुदा बाइस कथाक समग्र चर्चा जखन लम्बा सामान्यीकरणमे बदलैत अछि तखन छोट कथाक विशिष्ट भंगिमा हेराय सकैत अछि।

मूल आलेख गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्यायसँ व्याप्ति, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ उपाधिक शब्दावली लऽ कथा-परीक्षण करैत अछि। उदाहरणार्थ आर्थिक अभाव सँ पारिवारिक विघटनक व्याप्ति मानबाक प्रयास अछि। किन्तु किछु कथा मे आर्थिक अभाव आ विघटन संग-संग भेटब सार्वत्रिक सम्बन्धक सिद्धि नहि; प्रत्यक्ष उदाहरण, विपरीत उदाहरण आ उपाधिक पहचान बिना व्याप्तिक दार्शनिक अर्थ शिथिल भऽ जाइत अछि। साहित्यक कथात्मक सत्य आ औपचारिक ज्ञानमीमांसाक सिद्धान्त एक-दोसरकें प्रकाशित करथि, एक-दोसरक स्थान नहि लेथि—एहि भेदक आग्रह जरूरी अछि।

आलेख भारतीय रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, चीनी आलोचनाक संकेत, बास्तन, लुकाच, ग्राम्शी आ उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तनक सहायतासँ बहुपद्धतिगत विस्तार करैत अछि। मैथिलीक नेपाली क्षेत्रीय प्रयोग, संवाद आ बिम्ब-निर्माणक चर्चा विशेष सम्भावनायुक्त अछि। मुदा अनेक सिद्धान्तक नाम गनेनाइ स्वयं विश्लेषणक गहराई नहि: कोन कथा मे कोन पद/दृश्य कोन अवधारणाकें आवश्यक बनबैत अछि, ओकर प्रत्यक्ष आधार चाही। स्रोतक ‘जतऽ सुधाकरक कथा, ततऽ मनुष्यक सत्य’ सन व्याप्तिमूलक अन्तिम दावा काव्यात्मक प्रशंसा अछि, तार्किक सार्वत्रिक निष्कर्ष नहि।

समग्र अध्ययनक उपलब्धि सीमा-पार मैथिली कथा-संसारक सामुदायिक अनुभवकें स्त्री, आयु, श्रम, अर्थ-संकट आ भाषा-विन्यासक बहुस्तरीय प्रश्नमे रखब अछि। मूल समीक्षक कथाक शिथिल संरचना, पुरुष-वाचक केन्द्र आ अपूर्ण समाधानक सीमा स्वयं चिन्हैत छथि; एहि आत्मालोचनाक स्पष्टता मूल्यवान अछि। एहि खण्डक अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय ई अछि जे 'दीयरि'क समाजबोधकें सम्मान दैतहुँ सर्वश्रेष्ठता वा प्रतिनिधित्वक निर्णय पाठ-प्रमाण, कथा-विशेषक विरोधाभास आ समुचित संस्करण-साक्ष्यसँ समर्थित होयबाक चाही।

३२. परमेश्वर कापड़िक कथा, पद्य आ नाट्य-संसार : समेकित आलोचनाक व्याप्ति आ सीमा

बतिसम मूल इकाई शीर्षकमे 'परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा' कहल गेल अछि, मुदा वास्तविक पाठ केवल लोककथापर समाप्त नहि होइत अछि। पहिल खण्डमे कथा-खिस्सा; तकर बाद कविताक विस्तृत परीक्षण, रचनासंसारक बहुविध परिचय आ 'रेड-रेड' तथा 'गहन उगरास' नाटकक अलग नाट्यशास्त्रीय विवेचन सम्मिलित अछि। मूलक एहि व्यापक वास्तविक सीमाकें पहचानब समीक्षा-प्रक्रियाक प्रथम आवश्यकता अछि। एकहि अनुक्रम-इकाई भीतर अनेक स्वतंत्र विधा रखल गेल अछि, तँ केवल लोककथाक मूल्याङ्कन करब मूल पाठक अधूरा प्रतिनिधित्व होयत।

लोककथाक परिचयमे 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा', 'लछमिनिजा कनिजा', 'यज्ञ-सीता', 'छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न', 'हृदयवासी ईश्वर', 'लक्ष्मी-बलि', 'तप आ सत्संग', 'शिक्षा आ दीक्षा', 'नम्बर', 'कुत्ता-बिलाइ-मूस' आ 'गोनूबाबू घरेपर'क चर्चा अछि। स्रोत धार्मिक-पौराणिक आख्यान, शिक्षामूलक लघुकथा आ मौखिक खिस्साक भेद बनबैत अछि। 'लछमिनिजा कनिजा'मे अपमानित बहू, पक्षी/प्राणीसँ प्राप्त सहाय, साहसपूर्ण परीक्षा आ अन्तिम परिवर्तनक क्रम लोककथाक क्रिया-रचनाक संग मिलाओल गेल अछि। एहि पाठक 'सर्वश्रेष्ठ'

होयबाक प्रशंसा अपन तर्क पबैत अछि, मुदा सन्दर्भित रूपात्मक कसौटी आन कथासभपर समान रूपेँ लगाइत कतेक फरक निर्णय दैत अछि, से स्पष्ट करब शेष रहैत अछि।

‘यज्ञ-सीता’ आ ‘छाँड़ी-छाँडा सुद्युम्न’ जेहन पुनराख्यानमे प्राचीन कथा-परम्पराक पात्रक परिवर्तित अर्थ महत्वपूर्ण अछि। एहि कथासभमे लिङ्ग, पहचान, लोकभक्ति आ धर्मक अनुशासनक प्रश्न उठबैत साहित्यिक सम्भावना भेटैत अछि। मुदा आधुनिक लिङ्ग-अनुभवक सिद्धान्त सीधे पौराणिक आख्यानपर आरोपित करबाक बदला पाठमे बोलनिहार स्वर, परिवर्तनक कारण आ सामाजिक परिणति देखब आवश्यक अछि। ‘कुत्ता-बिलाइ-मूस’ आ ‘गोनूबाबू घरेपर’क लोकहास्यक स्वाधीन शिल्प सेहो धर्मक पुनर्व्याख्यासँ अलग परखल जाय।

पद्यसम्बन्धी विभागमे ऋग्वेदक नासदीय सूक्तक मैथिली ‘तत्त्वबोध’, संस्कृत श्लोकक भावानुवाद, राजनीतिक दोहा, माय-विषयक मुक्तक, ‘हमर जनकपुरधाम’, ‘सीता अवतार’, ‘रेड-रेड’क गीत-फकड़ा आ आन कविक गजलपर कापड़िक टिप्पणी सम्मिलित अछि। एहि अलग-अलग रचनामे रचनाकार, अनुवादक, समीक्षक आ उद्धृत कविक भूमिका भिन्न अछि। मूल आलेख कतेको स्थलपर एहि विविध भूमिकाकेँ एकहि ‘कापड़िक कवित्व’ कहल रूपमे जोड़ैत अछि; समेकन उपयोगी होइतहुँ प्रत्येक पाठक मूल रचनाकारक स्पष्ट श्रेय आवश्यक अछि। विशेषतः नासदीय सूक्तक अनुवाद-निष्ठाक निर्णय संस्कृत मूल आ प्रकाशित मैथिली पाठक क्रमवार मिलानसँ मात्र होयत।

राजेन्द्र विमल आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक गजल सम्बन्धी कापड़िक टिप्पणी आलोचकक रूपमे हुनक स्वर स्पष्ट करैत अछि। ओतय राजनीतिक प्रतिरोध, धार्मिक प्रतिमा आ शाब्दिक व्यंग्यक अनेक स्वर अछि; मुदा मुक्तक, गीत, छन्दोबद्ध व्यंग्य आ गजलक विधागत अन्तर पर कठोर ध्यान चाही। ‘आ रे कौआ’ सन बालगीतक प्रसङ्गमे मूल प्रबन्ध स्वयं गजलक श्रेणीकरणपर आपत्ति करैत अछि। एहि उदाहरणसँ महत्वपूर्ण सिद्धान्त निकलैत अछि: लोकलयक आकर्षण आ शब्दक

पुनरावृत्ति मात्र गजल बनबाक पर्याप्त शर्त नहि; शे'रक स्वायत्तता, काफिया-रदीफ आ बहरक वास्तविक गठन अलग जाँचल जाय ।

नाटक 'रेड-रेड'क विस्तृत विभागमे श्रीधर, अनवर, हमाल, अक्षरा आ अन्य पात्रसभक माध्यमसँ बेरोजगार कलाकार, बहुभाषिक सार्वजनिकता, आर्थिक संकट आ धार्मिक प्रतीकक नाट्यात्मक उलट अर्थ देखाओल गेल अछि । आलेख एपिसोडिक गठन, स्वर-परिवर्तन, नाटकक भीतर नाटक, लोकगीत आ ब्रेख्तीय दूरीकरणक शब्दावली प्रयोग करैत अछि । नाट्यशास्त्रीय समालोचनाक दृष्टिसँ एहि स्थलपर अभिनेताक क्रिया, दृश्य-परिवर्तन आ मंचीय संकेतक वास्तविक अनुकूलता अधिक उपयोगी होयत । केवल 'मेटाथिएटर' अथवा 'दूरीकरण'क संज्ञा देब पर्याप्त नहि, जँ दर्शक-पात्रक सम्बन्धमे ओकर कार्य प्रमाणित नहि कएल जाय ।

'गहन उगरास'क समीक्षामे फुलगेन सिंहक जीर्ण जमींदारी परिवेश, फुलो खतबे, दुखिया सादा, सुभद्र मण्डल, ज्वाला प्रसाद सिंह, विद्यापति यादव आ दोसर पात्रसभक राजनीतिक तनावक चित्रण अछि । प्रथम भागमे वर्ग-जाति-सत्ताक सामाजिक संघर्ष आ दोसर भागमे बाबा अभेलबा आ बकलेलबा चेलाक रूपकात्मक यात्रा प्रस्तुत अछि । समीक्षक एहि नाटककें अरस्तू, ब्रेख्त, स्तानिस्लावस्की, चीनी रंगपरम्परा आ विस्थापनक पाश्चात्य प्रतिमानसँ तुलित करैत छथि । एहि तुलनाकें विचार-प्रेरक मानि सकैत छी; मुदा प्रत्येक बाह्य सिद्धान्तक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ मैथिली दृश्यरचनाक वास्तविक प्रमाण बिना 'सफल समन्वय'क फैसला समयपूर्व होयत ।

एहि लम्बा इकाईक सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक क्षेत्रीय रचनाकारक विभाजित कृतित्वकें अनेक साहित्यिक विधामे देखबाक साहस अछि । एकर प्रमुख पद्धतिगत सीमा विधागत खण्डनक कमी, पाठक अप्रत्यक्ष उद्घरणक अनिश्चितता आ अतिशय सार्वत्रिक मूल्याङ्कन अछि । लोककथा, भावानुवाद, मूल कविता, आन कविक समीक्षा, आ नाटकक स्वतंत्र उपविभागसँ अन्तिम संस्करण बनितय तँ विषयानुसार प्रमाण-सारणी, ग्रन्थसूची आ प्रतिपक्षक विवेचन

सुस्पष्ट भऽ सकैत छल । विशेष रूपसँ बहुधार्मिक मिथिला आ मधेशक नाट्येतिहासक दावाक स्वतंत्र अभिलेखीय परीक्षण शेष मानल जाय ।

३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक : स्मृति, फिल्म, पुरस्कार आ साहित्यिक सार्वजनिकता

तेतीसम मूल प्रविष्टि केदारनाथ चौधरी विशेषांकक सम्पादकीय रूपमे ‘कथा १-१०’ नामक क्रम प्रस्तुत करैत अछि । रातिक ड्यूटीक दौरान मैथिलीमे दूरभाष-वार्ताक मिठास सुननिहार तमिलभाषी सहकर्मी सँ आरम्भ कयल गेल आत्मपरक प्रसङ्ग पाठककें भाषा-स्नेह आ सामाजिक आलोचनाक बीच अनैत अछि । एहि आरम्भक प्रभाव कथन-स्वरक आत्मीयतामे अछि; ओकरा प्रमाणित साहित्येतिहासक विवरणसँ अलग रखब चाही ।

केदारनाथ चौधरीकें ‘ममता गाबय गीत’ मैथिली फिल्मक निर्माता-द्वयमे एक मानबाक उल्लेख, जन्म-परिवारक परिचय आ फिल्म निर्माणमे निजी आर्थिक जोखिमक प्रसङ्ग एहि विशेषांकक मूल धुरी अछि । एहन प्रयासक सांस्कृतिक महत्त्व अछि, कि एक तँ भाषायी फिल्मक इतिहास केवल प्रदर्शित चित्र नहि, निवेशक, तकनीकी कर्मी आ निर्माणक संस्थागत कठिनता सेहो अछि । मुदा निर्माता सम्बन्धी कालक्रम, उपलब्ध प्रति, प्रदर्शन-विवरण आ वित्तीय तथ्यक स्वतंत्र प्रमाणक जरूरत शेष अछि; स्रोतक अभिमतकें अभिलेखीय निष्कर्षक रूपमे नहि रखल जाय ।

डॉ. कल्पना मणिकान्त मिश्र सम्बन्धी जीवन-परिचय आ केदारनाथ चौधरीक साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रभावक स्मरण ‘व्यक्ति-विशेषांक’ कें एकहि व्यक्तिक सम्मानक सीमा सँ आगाँ लऽ जाइत अछि । दोसर कथा-खण्डमे काव्यात्मक स्मृतिलेखन आ पत्रक प्रयोग, तेसर भागमे पारिवारिक सम्बन्धक भावधारा आ चौथम भागमे पुरस्कार-व्यवस्थाक विमर्श—एहि सभसँ दस्तावेजी सामग्री आ सम्पादकीय मत मिलैत अछि । प्रत्येक प्रकारक स्रोतक प्रमाणिकता अलग अछि:

प्रत्यक्ष पत्र, उद्धृत कविता, व्यक्तिगत स्मृति आ सार्वजनिक संस्थापर आरोपक पुष्टिक विधि एक नहि।

पाँचम-सातम भागमे तमिल साहित्यिक घटनाक उदाहरण, विद्वत्ता सम्बन्धी सूक्तिसंग्रह आ भाषण-परम्पराक प्रसङ्ग अछि। संस्कृत सुभाषितक दीर्घ अनुक्रमा साहित्यिक मूल्यशिक्षाक उद्देश्य देखबैत अछि, मुदा जँ पाठककें केदारनाथ चौधरीक विशिष्ट कृतित्व बुझबाक अछि तँ ई अंश मूल चरित्र-विश्लेषणसँ कतेक सम्बन्ध बनबैत अछि, प्रश्न उठैत अछि। व्याख्याक बिनु उद्धरणक दीर्घ सूची विशेषांकक केन्द्र-रेखाकें शिथिल कऽ सकैत अछि।

आठम भाग 'चमेली रानी' आ 'माहुर'क सन्दर्भ अनैत अछि; नौम आ दशम भागमे साकेतानन्दक कथन पर प्रत्युत्तर आ संस्थागत उपेक्षाक प्रतिवाद अछि। आलोचककें स्मृति-प्रशंसा आ प्रतिपक्ष-आलोचनाक बीच अन्तर स्पष्ट रखबाक चाही। विरोधी मतक मूल सम्पूर्ण पाठ, तिथि आ सन्दर्भ देखब जरूरी अछि; केवल उद्धृत अंशसँ व्यक्तिक उद्देश्य निर्धारित करब न्यायोचित नहि। ओना ई बहस समानान्तर साहित्यिक पाठकीय पहुँच आ मान्यता प्रश्नक अभिलेख बनैत अछि।

समग्र उपलब्धि ई जे विशेषांक मिथिलाक फिल्म-निर्माण, भाषिक गर्व, साहित्यिक संस्था आ व्यक्तिगत त्यागकें परस्पर जोड़ैत अछि। एकर सीमा सामग्रीक असमान गठन अछि: कहीं जीवनी, कहीं पत्र, कहीं श्लोक, कहीं उपन्यासक संक्षेप, कहीं विवाद। विषयगत अनुक्रम, उद्धरणक पुनर्संस्थापन आ कालक्रमक एकल सारणी होइतय तँ शोध-सामर्थ्य बढ़ैत। समीक्षा-निर्णय मूल लेखकक सहानुभूतिपूर्ण रुखकें सुरक्षित मानैतहुँ हर ऐतिहासिक दावाक प्रमाणगत दर्जा पृथक रखैत अछि।

३४. केदारनाथ चौधरीक आत्मकथात्मक उपन्यासक पुनर्पाठ : फिल्मी शिल्प आ स्मृतिनिर्माण

चौतीसम मूल पाठ 'केदार नाथ चौधरी—हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ'मे हास्य, आत्मकथात्मक स्मृति आ फिल्म-निर्माणक अनुभव जोड़ि कथाक अध्यायवार यात्रा करैत अछि। मैट्रिक परीक्षाक असफलताक बाद एकमी पुलक कात आत्महत्याक विचारसँ आरम्भ भेल प्रसङ्ग भोजनक सुगन्धि आ रोजगारक अवसरक बीच अचानक दिशा बदलैत अछि। एहि कथात्मक उलटावमे विडम्बना आ जीवित रहबाक आकस्मिक प्रेरणाक शिल्प अछि। स्रोतक एहि दृश्यकें आत्मकथ्यक कथात्मक अंश मानल जाय; स्वतंत्र घटनात्मक इतिहासक रूपमे बिना पुष्टिक नहि रखल जाय।

कलकत्ता पहुँचना, उच्चशिक्षा, नौकरी, मैथिली फिल्मक उद्देश्य, आर्थिक जोखिम, मुम्बई यात्रा, पटकथा, गीत-संगीतक चयन आ राजनगरमे फिल्मांकनक प्रसङ्ग समीक्षाक मूल क्रम अछि। मूल आलोचक फिल्मक 'शूट' आ 'एडिट'क अनुभवकें गद्यरचनाक तीक्ष्ण गति सँ जोड़ैत छथि। एहि चिन्तनमे एक सृजनात्मक सम्भावना अछि: फिल्मक कट, दृश्य-स्थानान्तर आ संवादक संक्षिप्तता उपन्यासक गद्य-लयकें प्रभावित कऽ सकैत अछि। मुदा लेखक स्वयं ई सम्बन्ध स्वीकार करैत छथि कि आलोचकक व्याख्या मात्र अछि, ई प्रश्न स्रोत-सन्दर्भक सहायता सँ स्पष्ट करब चाही।

कथात्मक 'हम' आ ऐतिहासिक केदारनाथ चौधरीक जीवनमे कतेक मेल अछि—एहि प्रश्न पर आलोचक पाठकें 'आत्मकथात्मक आ संस्मरणात्मक' कहैत छथि। एहि विधा-निर्णयक केन्द्र ई अछि जे पाठमे घटनाक क्रम, व्यक्तिनाम आ फिल्म-इतिहासक संकेत अछि। मुदा प्रथमपुरुष वाचकक प्रत्येक प्रसङ्गकें लेखकक वास्तविक आत्मानुभव मानि लेब साहित्यिक अनुशासन नहि; कथावाचक आ रचनाकारक बीच न्यूनतम विश्लेषणात्मक दूरी अपेक्षित अछि। गायनक पारिश्रमिक, फिल्मी चुनाव, प्रदर्शन आ दूरदर्शनपर पुनर्प्रसारणक जे विवरण मूल आलोचना दैत अछि, से विशेष रूपसँ अभिलेखीय जाँच चाहैत

अच्छि। स्रोत एकर किछु अंश स्वयं मूल उपन्यासमे अनुपस्थित कहैत अच्छि; तँ समीक्षक द्वारा जोड़ल जानकारी आ मूल कथा-वृत्तान्तक मिश्रण स्पष्ट चिह्नित करबाक चाही। ओहि भेदसँ पुस्तकक साहित्यिक मूल्य कम नहि होइत अच्छि, बल्कि शोधक विश्वसनीयता बढ़ैत अच्छि।

मूल आलोचक सरल भाषा आ तीक्ष्ण रचनागत गति केदारनाथ चौधरीक शिल्पगत शक्ति मानैत छथि। एहि निर्णयक सूक्ष्म परीक्षण कथावाक्यक काट, पात्र-संवाद, हास्यक अवकाश आ दृश्य-परिवर्तन पर आधारित होएबाक चाही। एहि छोट आलेखक मौलिक आग्रह ई अच्छि जे फिल्मक सामाजिक इतिहास आ मैथिली गद्यक अंतःसम्बन्ध सम्भव अच्छि; एकर सीमा ई जे उपन्यासक मूल सम्पूर्ण अध्यायक प्रत्यक्ष उद्धरण अपेक्षाकृत कम अच्छि। अन्तिम मूल्याङ्कन एहि सम्भावना आ प्रमाणगत कमी दुनूकें संग रखैत अच्छि।

३५. साहित्य अकादेमी युवा आ बाल पुरस्कार २०२२ : संस्थागत आलोचना आ प्रमाणक मर्यादा

पैंतीसम मूल प्रविष्टि साहित्य अकादेमीक मैथिली युवा आ बाल पुरस्कार २०२२क चयन-प्रक्रियापर तीक्ष्ण सम्पादकीय प्रतिक्रिया अच्छि। मूल लेखक मुन्नी कामतक कविता-संग्रह 'अंततः'क प्रतिस्पर्धामे अंतिम चरण धरि पहुँचबाक उल्लेख करैत छथि आ ओकर चयन नहि होयबाक प्रश्न उठबैत छथि। पुरस्कार-विमर्शक साहित्यिक सार्थकता ई अच्छि जे सार्वजनिक मान्यताक संग कृतित्वक विविधता, चयनक कसौटी आ संस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्न जुड़ेले रहैत अच्छि।

बाल-साहित्य पुरस्कारक प्रसङ्गमे मूल लेख चयन-समितिक ग्रन्थसूची, प्राथमिक सूची बनबयवला लोकनिक नाम आ निर्णायक कसौटीक सार्वजनिकता चाहैत अच्छि। समीक्षा-पद्धतिक स्तरपर ई प्रश्न वैध सार्वजनिक पारदर्शिताक माँग छथि। मुदा जूरीक पक्षपात, जानबूझि कऽ साहित्यकारकें हराएब अथवा समूहगत नियोजित बहिष्कार सन कड़ा आरोपकें उपलब्ध मूल आलेखक एकल

मतसँ सिद्ध मानल नहि जा सकैत अछि। हुनका अभिलेख, नियम, पात्रता-तालिका आ निर्णय-प्रक्रियाक सत्यापित दस्तावेज चाही।

मूल स्रोत जगदीश प्रसाद मण्डलक 'पंगु'क सम्मानित होयबाक प्रसङ्गकें समानान्तर साहित्यक सार्वजनिक स्वीकृतिक रूपमे पढ़ैत अछि। ई दावाक ऐतिहासिक महत्व रहलहुँ ओकर तिथि, पुरस्कार-श्रेणी आ आधिकारिक सूचीसँ मिलान अलग अपेक्षित अछि। एहि मूल आलेखमे स्त्री लेखन, दलित साहित्य आ क्षेत्रीय समुदायसम्बन्धी नैतिक आग्रह प्रखर अछि; परन्तु कतेको स्थानपर व्यक्तिसमूहक लेल प्रयुक्त मूल्यन्यायक भाषा शोधात्मक निष्पक्षता सँ दूर पड़ैत अछि। समीक्षाक अपन गद्य ओहि भाषा कें तथ्यक रूपमे दोहराएब नहि चाही।

एहि छोट सम्पादकीयक उपलब्धि संस्थागत चयनकें आलोचनासँ परे नहि मानबाक लोकतान्त्रिक आग्रह अछि। एकर कमी साहित्यिक तुलना आ प्रमाणित निर्णय-प्रक्रियाक विवरणक अभाव अछि। उचित अगिला कदम चयनवर्षक आधिकारिक पुरस्कार-सूची, उपलब्ध पात्र पुस्तक, समिति-नियम आ सार्वजनिक दावाक दस्तावेजी पुनर्परीक्षण होयत। पुरस्कार नहि भेटब अपने आपमे निकृष्ट मूल्याङ्कनक प्रमाण नहि; एकर विपरीत पुरस्कार भेटब सेहो कृतिक सर्वोच्च साहित्यिक गुणक अन्तिम सिद्धि नहि।

३६. विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरी : भक्ति-पद, रागविधान आ पाण्डुलिपिक इतिहास

छत्तिसम मूल प्रविष्टि पं. रामजी चौधरी (स्रोतानुसार १८७८-१९५२)क जीवन-वृत्त, वंशक्रम आ विस्तृत भजनावलीकें एकत्र करैत अछि। जन्मस्थान रुद्रपुर, परिवारक पञ्चोभसँ स्थानान्तरण, दरभंगा राजक अधीन जेठ-रैयतक पद, पितामहक गायन-परम्परा आ बादक भक्तिमय जीवनक जे विवरण देल गेल अछि, से काव्यक सामाजिक पृष्ठभूमि बुझयमे उपयोगी अछि। मुदा वंशावलीक प्रस्तुति आ जीवनीक तिथिसभ स्रोतक कथन छथि; अभिलेख वा स्वतंत्र प्रमाणक तुलना एतय उपलब्ध नहि।

रचनावलीमे 'विविध भजनावली' शीर्षकसँ अनेक गीत, 'विनय', 'राग ध्रुपद', 'राग संगीत', 'तिरहुत', 'भजन भैरवी', 'राग विहाग', 'चैतक ठुमरी', 'महेशवानी', 'समदाउन' आ दोसर राग-आधारित पदक क्रम प्राप्त होइत अछि। मूल लेखक एकटा प्रकाशित पुस्तक आ एकटा लिखित पाण्डुलिपिक आधारक उल्लेख करैत छथि। एहि विवरणसँ मौखिक गायन आ लिखित पाठक बीचक सम्बन्ध चिन्हबाक अवसर अछि: गीतक लय परम्परामे बाँचैत अछि, जखन कि हस्तलिपि ओकर शब्द-रूप आ रचनाक क्रम बचबैत अछि।

रामजी चौधरीक पदमे शिव, सीता-राम, राधाकृष्ण, विरहिणी नायिका, भक्तक आत्मसमर्पण आ लोकजीवनक आर्त स्वर बारंबार अबैत अछि। 'तिरहुत'क नायिका-कथन आ 'चैतक ठुमरी'क मौसमी स्वर सँ बुझाईत अछि जे ई काव्य केवल आराधनाक औपचारिक उच्चारण नहि, रस, लोकधुन आ वैयक्तिक आकांक्षाक मिश्रण अछि। अलग-अलग रचनामे 'रामजी' भनिताक उपस्थिति रचनाकारक एक पहिचान बनबैत अछि, मुदा केवल भनिता-साम्यसँ सभ गीतक प्रमाणित लेखकीयता स्थापित नहि कएल जा सकैत अछि; पाठान्तर आ पाण्डुलिपिक परीक्षण आवश्यक अछि।

मूल संकलनमे ब्रजबुली, मैथिली आ भक्ति-गीतक मिश्रित शब्दरूप पाओल जाइत अछि। एहि बहुभाषिक गठनक निष्पक्ष परीक्षण लेल पाठक स्रोत-रूप, लिपिक हस्तक्षेप, गायन-परम्पराक रूपान्तरण आ मुद्रणक संभावित त्रुटि अलग करबाक चाही। छन्द वा रागक शीर्षक मात्रसँ वास्तविक गान-संरचना प्रमाणित नहि होइत अछि; ताल, मात्रा, ध्वन्यात्मक लय आ उपलब्ध ध्वनि-परम्परा अलग जाँचल जाय। एहि विधिसँ काव्यक सांगीतिक इतिहासक विश्वसनीय पुनर्निर्माण सम्भव अछि।

एहि मूल प्रविष्टिक सबसे मूल्यवान उपलब्धि लोपोन्मुख साहित्यिक सामग्रीक पुनर्प्रस्तुति अछि। 'विस्मृत कवि'क पुनःस्थापन केवल प्रशंसात्मक विशेषणसँ नहि, दृष्टिसँ संभव अछि: प्रमाणिक पाठ-सम्पादन आ साहित्यिक उपलब्धिक आलोचनात्मक मापन। मूल पाण्डुलिपिक लेखन-तिथि, हस्तलेख, भिन्न प्रतिक

पाँति-भेद, सम्भावित प्रतिलिपिकारक हस्तक्षेप आ रागक वास्तविक परम्परा बिना सर्वश्रेष्ठता वा अनिवार्य स्थानक निर्णय स्थगित राखब उचित अछि। ई सावधानी रामजी चौधरीक काव्य-मूल्यकें घटबैत नहि; ओकरे शोधक विषय बनबैत अछि।

३७. 'विद्यापतिक पिआ देसाँतर' : पदावलीसँ रंगमंच धरि रूपान्तरणक समीक्षा

सैंतीसम मूल रचना विद्यापतिक पदसभक आधारपर 'पिआ देसाँतर' नामक नाटिका रचैत अछि। आरम्भमे भोजपुरीक भिखारी ठाकुरक 'बिदेसिया'क सन्दर्भ लऽ मैथिलीमे प्रवास, विरह आ जनपदीय मंचपरम्पराक सम्भावना पर विचार कएल गेल अछि। एहि सम्बन्धकें सीधी कथानक-उधारी वा एक भाषा-दोसर भाषासँ श्रेष्ठ होयबाक प्रमाण नहि मानल जाय; तुलना ओतबे धरि सार्थक अछि, जतय मंचपर प्रवासी जीवनक अनुभव, गायन आ जनसहभागिताक समान प्रश्न भेटैत अछि।

नाटिकाक पहिल दृश्ये सँ बिदेस जाइत पुरुष, प्रतीक्षारत युवती, पथिक, चोर आ कोतवालक सामाजिक व्यवस्था स्थापित होइत अछि। नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावलीक धनछ्ठी रागक पदकें मंचपर देल गेल स्थिति आ मैथिली भावार्थसँ जोड़ल गेल अछि। स्त्रीक अकेलापन केवल प्रणय-विरह नहि रहैत; गामक असुरक्षा आ न्याय-व्यवस्थापर अविश्वासक कथन ओकर सामाजिक विस्तार करैत अछि। कोतवालक पक्षपातक दृश्य पदक अन्तर्निहित संकेतकें नाटकीय क्रियामे बदलैत अछि, मुदा पदक मूल अर्थ आ निर्देशकक नव अर्थ स्पष्ट अलग राखब चाही।

दोसर सँ पाँचम दृश्यधरि दोकान खोलि बैसल युवती, राहगीरक आतिथ्य, सासु-ननदिक अनुपस्थिति, प्रणयक दुविधा आ गामक प्रतिष्ठाक भयक कारण गीतक वैकल्पिक अर्थ खुलैत अछि। 'हम एकसरि, पिआ देसाँतर' सन कथन पदावलीमे नायिका-स्वर अछि; मंचक प्रसङ्ग ओकरा दर्शकक सोझाँ सामाजिक निर्णयक संवाद बनबैत अछि। राग बदलला पर परिस्थिति आ मनोदशाक सम्बन्धे

नाटिकाक संरचनाक बल अछि। मुदा भिन्न मूल पदक युग, पाठक्रम आ संस्कृतिक व्यवहारकें एकहि लगातार कथानक मानब रूपान्तरक कलात्मक निर्णय अछि, मूल पदावलीक प्रमाणित ऐतिहासिक क्रम नहि।

नाट्य-विधाक दृष्टिसँ एहि प्रयोगक एक विशेषता ई जे कविक प्रवेश, गीतक अर्थोच्चारण, नायिकाक मौन आ रंगमंचक अनेक कोण परस्पर तनाव बनबैत अछि। मूलक पद आ आधुनिक सरल मैथिली व्याख्या एकसाथ दैत लेखक प्राचीन पद कें दर्शक-गम्य बनायब चाहैत छथि। मुदा हर पदक तत्काल व्याख्या मंचीय गति रोकि सकैत अछि; चयनित स्थलक गीत, दृश्य-निर्देश, अभिनय आ मौनक सन्तुलन लेल स्वतंत्र प्रस्तुति-परीक्षण आवश्यक अछि।

प्रमुख आलोचनात्मक सीमा पाठसिद्धि अछि। 'नेपालसँ प्राप्त' कहि देल पदावलीक संस्करण, सम्पादक, पृष्ठ आ पाठान्तरक सटीक पहचान चाही।

तिरहुत, धनछ्ठी, मालव आदि रागनिर्देश स्रोतसँ उठाओल गेल कि रूपान्तरक नूतन संयोजन—ई भेद अभिलेखित होयबाक चाही। एहि सीमाकें स्पष्ट रखैत 'पिआ देसाँतर'कें मैथिली पदावलीक आधुनिक रंगस्वरूप बनयबाक महत्त्वपूर्ण प्रयोग मानल जा सकैत अछि; एकरा पदावलीक मूल ऐतिहासिक नाटक घोषित करब उचित नहि।

३८. विद्यापति सम्बन्धी प्रचलित दावाक परीक्षण : पहचान, पञ्जी आ लोकपरम्परा

अइतीसम मूल प्रबन्ध विद्यापति नामसँ सम्बद्ध बहुस्तरीय ऐतिहासिक पहचानपर प्रश्न उठबैत अछि। लेखक संस्कृत-अवहट्टक विद्यापति आ मैथिली पदावलीक विद्यापतिक एकत्वपर सन्देह प्रकट करैत छथि, पाग आ जातिगत परम्पराद्वारा सांस्कृतिक अधिग्रहणक प्रतिपक्ष रखैत छथि, आ विद्यापति नाचक दीर्घ लोकस्मृतिक महत्त्व रेखांकित करैत छथि। ई प्रतिज्ञा मैथिली साहित्येतिहासक बड़ मुदा अछि; मुदा प्रतिज्ञाक साहस ओकर स्वतः सत्यता नहि।

मूल प्रबन्ध बंगालक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय आ नगेन्द्रनाथ गुप्त, राजकीय पद, पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका आ पञ्जीक बहु प्रविष्टिक प्रसङ्ग अनैत अछि। नाम 'विद्यापति'क आवृत्ति, भिन्न गोत्र वा पारिवारिक उल्लेख आ अलग ग्रन्थक लेखक-नाम सम्भाव्य ऐतिहासिक बहुलता देखबैत अछि। तथापि समान नामक अनेक अभिलेख भेटब स्वयं एहि तथ्यक प्रमाण नहि जे प्रसिद्ध पदावली आ प्रामाणिक संस्कृत ग्रन्थ निश्चित रूपसँ अलग व्यक्तिक रचना छथि। एहन निष्कर्ष लेल हस्तलिपिक तिथि, अन्तःसाक्ष्य, भाषा-विकास, पाठपरम्परा आ समकालीन बाह्य साक्ष्यक एकत्रित तुलना चाही।

बिदापत नाच, खेतिहर समुदाय आ लोकगायनक पीढ़ीगत सततता लेखकक समावेशी साहित्य-दृष्टिक केन्द्र अछि। फणीश्वरनाथ रेणुक लोकस्मृति-आधारित टिप्पणी एहि प्रसङ्गमे महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ शास्त्रीय वंशावलीसँ बाहरक जनसमुदाय कविता केँ अभिनय आ गीतद्वारा जीवित रखैत छथि। मुदा मौखिक परम्पराक निरन्तरताकेँ शताब्दीक अविच्छिन्न प्रमाणित कालक्रम मानबाक लेल क्रमशः संग्रहित प्रस्तुति, ऐतिहासिक उल्लेख आ क्षेत्रीय पाठान्तरक अभिलेख आवश्यक अछि।

पाग, जातिसूचक उपनाम, देवता-परम्परा आ सामाजिक समूहक ऐतिहासिक स्थान सम्बन्धी लेखकक अनेक कथन प्रचलित व्याख्याक तीव्र प्रत्युत्तर छथि। आलोचनात्मक समीक्षामे एहि कथनसभ केँ लेखकक स्थापना नामे चिन्हित करब उचित अछि; कोनो जाति-समुदायक नियोजित षड्यन्त्र अथवा प्रसिद्ध व्यक्तिक जातीय पहचानकेँ स्वतंत्र स्रोतक बिना निर्णायक घोषणा करब नहि। साहित्येतिहासक न्याय स्थापित करबाक लेल उपलब्ध प्रमाण सभक बहुशाखीय परीक्षण आवश्यक अछि, केवल प्रतिपक्षीय सामान्यीकरण नहि।

वर्तमान आलेखक उपलब्धि एतय अछि जे पाठककेँ प्रसिद्ध नामक एकरेखीय जीवनीक स्थानपर अनेक पाठ, श्रेणी आ सामाजिक ग्रहणशीलताक प्रश्न पूछय बाध्य करैत अछि। एकर सीमा अनुमान, आख्यान, पञ्जी-नमूना आ व्याख्याक बीच आवश्यक प्रमाण-सोपान पूर्ण नहि होयब अछि। आलोचनाक अगिला

विकसित रूपमे प्रत्येक दावाक अलग साक्ष्य-पत्र, स्रोत-तिथि, पाठभेद आ निष्कर्षक विश्वास-स्तर देल जाय। तखने समानान्तर इतिहासक पुनर्लेखन सुदृढ शोध बनत।

३९. रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' : जनकाव्यक 'झारू' आ सार्वजनिक प्रतिरोध

उनचालीसम मूल आलेख रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क रचना-संसारकें 'झारू' नामक नव जनकाव्य-विधाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि आ हुनक तुलना भोजपुरीक भिखारी ठाकुरसँ करैत अछि। खेतक आड़ि, गामक बाट आ श्रमिकक अनुभवमे रचल गीतक उदाहरणक माध्यमसँ लेखक लोककाव्यक सामाजिक भूमिका उजागर करैत छथि। 'पहिल जनकवि' अथवा 'सर्वप्रथम झारू-विधा' सन व्यापक दावाकें ऐतिहासिक तुलनात्मक कृति-पञ्जीक बिना निश्चित मानल नहि जाय; मुदा काव्यक अपन नामकरण स्वयं अध्ययन योग्य साहित्यिक घटना अछि।

'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'क आत्मविश्वासी स्वर व्यक्ति आ समाजक पुनर्निर्माणक सामर्थ्यक उद्घोष करैत अछि। कविता अन्धविश्वास, स्वार्थ, आर्थिक लालच आ कुरीतिक विरोधमे सीधे जनभाषा प्रयुक्त करैत अछि। 'कलमकें रामक तीर कमान' बनयबाक आग्रह मिथकीय नायकक प्रतीक्षाक बदला वर्तमान समाजक नैतिक क्रियाशीलता पर बल दैत अछि। एहि रूपकमे धार्मिक प्रतीक आ लौकिक प्रतिरोध एक-दोसरक विरोधी नहि रहैत, बल्कि सामाजिक जागृतिक भाषिक साधन बनैत अछि।

एकता लेल अपन भूल स्वीकारब, नारीक सामाजिक स्थान आ राजनीतिक सहभागिता, प्रदूषण-विरोध, वन-झील-नदीक संग वनवासीक सुरक्षा, दहेजक आर्थिक संकट आ मिथिलाक विकासक सार्वजनिक माँग—एहि विविध विषयसँ 'झारू'क उद्घोषात्मक विस्तार स्पष्ट अछि। पाँतिक सीधी लय आ लोक-सम्बोधन कविताकें श्रोताक निकट अनैत अछि। मुदा अनेक कवितामे नारा आ

काव्यात्मक अनुभवक अन्तर धुंधला सकैत अछि; प्रत्येक विषयमूलक कथनकें स्वतः उच्च कोटिक कविता मानब आलोचनात्मक न्याय नहि।

मूल लेख 'झारू'कें बौद्ध शून्यवाद अथवा अद्वैतक खोजसँ बचैत प्रत्यक्ष सामाजिक परिवर्तनक विचार मानैत अछि। एतय आलोचकक आरम्भिक विडम्बना ई अछि, जे रूपकक स्थानीय अर्थ कें दूरस्थ दार्शनिक उपमानक अधीन नहि कएल जाय। एहि पद्धतिक मूल्य अछि। संगहि झारू विधाक विशिष्टता चिन्हबाक लेल छन्द-रचना, पाँति-विस्तार, आवृत्ति, वाचिक प्रसंग, सामूहिक प्रस्तुति आ गीतसँ अन्तरक परीक्षण होयबाक चाही।

रामदेव प्रसाद मण्डलक काव्यक मूल उपलब्धि भाषाक नागरिक प्रयोग अछि: जनक दैनिक श्रम, स्त्रीक प्रश्न आ पर्यावरणक चिन्ता कविताक विषय बनैत अछि। एकर समीक्षा सामाजिक लोकहितक आधारपर प्रशंसा मात्र नहि, कथ्य आ रूपक द्वन्द्वक परीक्षण सेहो करैत अछि। भिखारी ठाकुरसँ तुलना प्रभावक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा दुनू रचनाकारक नाटक, गायन आ प्रसार-पद्धतिक प्रत्यक्ष तुलना शेष मानल जाय।

४०. रामविलास साहुक 'रथक चक्का उलटि चलै बाट' : लघुपद्य, प्रकृति आ किसानक भाषा

चालीसम मूल प्रविष्टि रामविलास साहुक 'रथक चक्का उलटि चलै बाट'क कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनकाक संयुक्त विवेचन अछि। स्रोतक शुरुआती पाँचपाँतिक रचनामे 'रथक चक्का' आ 'चाक'क बिम्ब गति, श्रम आ वस्तुक उलटवाँ सम्बन्ध खोलैत अछि। लघु पाँतिक बीच अर्थक अन्तराल बनबैत कवि निकट वस्तुक दार्शनिक आश्चर्य उत्पन्न करैत छथि। एकर लघु आकारकें स्वतः हाइकू वा टनकाक विधागत निश्चय नहि मानल जाय; मूल जापानी संरचनाक संग मैथिली रूपान्तरक सम्बन्ध स्वतंत्र विवेचन चाही।

सावनक बुन्नद, बेंगक बाजा, खन्ता-डबरा, करिया कोइली, करिया बादल आ चैतक रौदक चित्र कविक ऋतु-ज्ञानक लोकपरक सौन्दर्य उद्घाटित करैत अछि। एकहि रंग 'कारी'क प्रसङ्ग काजर, पक्षी आ मेघमे भिन्न प्रभाव उत्पन्न करैत

अच्छि; एहि रूपान्तरणमे बिम्बक ऊर्जा अच्छि। कोनो रचनाकेँ बाशोक समान स्तरपर राखबाक प्रशंसात्मक तुलना करैत समय क्षणानुभूति, दृश्य-परिवर्तन, विराम आ कथ्यक अप्रत्यक्षता जाँचब अनिवार्य अच्छि।

मूल समीक्षामे कोसी धारक हिलोर, झौआ-पटेर-काशक उल्लेख, अन्धविश्वासक व्यवहार, खेतक गजार कदबा, हरवाहक बिरहा आ गहुमक खेतीक क्रम समान रूपेँ उपस्थित अच्छि। एहि विषयसभक साहित्यिक मूल्य ई अच्छि जे प्रकृति केवल शृंगारक दृश्य नहि; किसानक जीविका, विपत्ति आ ऋतु-अनुभवक साझा पदार्थ बनैत अच्छि। लोकशब्दक घनत्व क्षेत्रीय सामाजिक इतिहासक भाषिक अभिलेख बनि सकैत अच्छि। मुदा एकेका शब्दक अर्थ, रूपभेद आ स्थानीय प्रयोगक पुष्टि बिना बाह्य पाठकक लेल अर्थक अनिश्चितता रहि जाइत अच्छि।

‘हाटक चाउर बाटक पानि’ सन कहबी, देशज भोजन आ स्वास्थ्यसम्बन्धी कथन कविक मौखिक परम्परासँ निकट सम्बन्ध देखबैत अच्छि। भोजन वा रोगनिवारणक उल्लेखकेँ लोक-सांस्कृतिक विश्वास रूपमे पढ़ब उचित अच्छि; ओकरा चिकित्सकीय वैज्ञानिक प्रमाण मानल नहि जाय। एहि भेदसँ कविता प्रति सम्मान बनल रहैत अच्छि आ स्वास्थ्य-विषयक अप्रमाणित आश्वासनक जोखिम घटैत अच्छि।

एहि कृतिसमीक्षाक उपलब्धि लघुपद्य आ किसानक अनुभव बीच पुल बनब अच्छि। मूल लेखक कविक ‘खाँटी’ शब्दचयन आ मौलिक दृश्यावलिक प्रशंसा करैत छथि; एहि प्रशंसाक संग विधागत सूक्ष्मता आवश्यक अच्छि। हाइकू, शेनर्यू, टनका, चैतावर आ सामान्य कविता प्रत्येकक अलग रूप-सिद्धान्त, लय, हास्य-दृष्टि वा अनुभूतिक केन्द्र अच्छि। एहि रूपसभक प्रमाणपूर्वक भेद कयला परे ‘रथक चक्का उलटि चलै बाट’क वास्तविक आधुनिक योगदान निर्धारित होयत।

४१. उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह

‘निशुकी’क आलोचनामे उमेश मण्डलक आयु अथवा प्रतिष्ठाक स्थानपर हुनकर रचनात्मक प्रयोगकेँ मूल्याङ्कनक आधार बनाओल गेल अछि। मूल प्रबन्ध कविता, लघुकविता, हाइकू, टनका आ गजल सभकेँ एकहि संकलनमे राखैत अछि; मुदा एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ ई सभ विधा नहि परखल जा सकैत अछि। टनकाक पाँच पाँतिक मितव्ययिता, गजलक लय-काफिया आ मुक्तकक स्वतंत्र अर्थक परीक्षा भिन्न चाही।

मूल आलोचक ‘समस्याँ आप्त’ सन छोट पाँति उद्धृत कऽ शब्दक अर्थगत संकोचक उदाहरण अनैत छथि। एहि प्रयोगक सामर्थ्य केवल छोट आकार नहि, सघन संकेत-संबन्ध अछि। समीक्षामे सामाजिक न्याय आ अग्रगामी चेतनाक आग्रह उचित अछि, मुदा कविताक नाटकीय बोलनिहार, विराम, ध्वनि आ बिम्बक स्वतंत्रता सेहो तुलनीय प्रमाण माँगैत अछि।

एहि समालोचनाक उपलब्धि नव विधागत मिश्रणकेँ गम्भीर साहित्यिक काज मानब अछि। एकर सीमा ई जे रचनासभक पूरा क्रम, प्रकाशन-सन्दर्भ आ छन्दगत विचलनक नमूना बिना संग्रहक समग्र उपलब्धि अन्तिम रूपसँ निर्धारित करब कठिन अछि।

४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”

‘वर्णित रस’क समीक्षामे उमेश पासवानक ‘हम युवा’ आ ‘जीतक झण्डा’क बीच वैचारिक सम्बन्ध खोजल गेल अछि। आतंकवाद-विरोध आ राष्ट्रप्रेमक तेज स्वरक बीच मूल आलोचक ‘दुश्मन’क कल्पना आ हिंसक रूपकक राजनीतिक मूल्य पूछैत छथि। एहि प्रश्नसँ कविता देशभक्ति मात्र नहि, नागरिक भावनाक बनावट बनि उठैत अछि।

संग्रहक शब्दचित्रमे गोली, बारूद, खंजर, तलवार आ फूलक माला एकहि वक्ताक दू सम्भावित रूप अछि। आक्रोश आ मैत्रीक ई द्वैत एहि पद्यक

अध्ययनक केन्द्र होयबाक चाही; एकटा पाँति अलग कऽ कविक स्थायी विचार प्रमाणित नहि होयत। 'हम' कहनिहार युवा सामूहिक पात्र अछि वा विशिष्ट व्यक्ति, से सेहो रचनाक लय आ सम्बोधनसँ जाँचबाक अछि।

मूल समालोचना सामाजिक प्रतिरोधक काव्यात्मक कसौटी अनैत अछि; मुदा राष्ट्रीय नारा आ साहित्यिक उपलब्धिक बीच भेद लेल बिम्बक मौलिकता, आन्तरिक तनाव आ पाठकीय बहुअर्थकता पर अधिक सूक्ष्म चर्चा जरूरी अछि।

४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस

रामलोचन शरणक 'मैथिली रामचरितमानस' सम्बन्धी आलेख महाकाव्यक परम्परागत सर्ग-संख्या आ उच्चकुलीन नायकक कसौटीपर प्रश्न उठबैत अछि। लेखक एकरा गीत-प्रबन्धक रूपमे बुझबाक आग्रह करैत छथि। चन्दा झा आ लालदासक रामायणक संग तेसर मैथिली रामकथाक उपस्थितिक चर्चा साहित्यिक पञ्जीक महत्त्वपूर्ण सुधारात्मक प्रस्ताव अछि।

सुन्दरकाण्डक 'जामवंत केर वचन सोहाओल' सन गेय अंशक सहायतासँ मूल विवेचन पद्यक उच्चारण, सामूहिक पाठ आ कथा-गति पर बल दैत अछि।

छन्दक गणना, पाँतिक पुनरावृत्ति आ पात्रक कथनक भिन्नता देखला पर गीत-प्रबन्धक वर्गीकरण अधिक सुसंगत बनि सकैत अछि। मूलक लोकप्रिय अखण्ड पाठ आ लिखित प्रमाण एक-दोसराक पूरक हो सकैत अछि, पर्याय नहि।

समीक्षाक मुख्य उपलब्धि मैथिली रामकथाक बहुलताकेँ सामने अनब अछि। दावे केँ पुष्ट करबाक लेल मूल प्रकाशन-वर्ष, पूरा पाठ, संस्करणान्तर आ चन्दा झा-लालदाससँ विशिष्ट प्रसंगक तुलनात्मक सारणी जरूरी अछि।

४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन

बूचजीक 'जेठी करेह'क पाठमे नदीक उधिआएब, बान्हक आशंका आ डीहक विनाश एकहि बिम्ब-व्यवस्थामे जुड़ैत अछि। मूल प्रबन्ध पहिने साधारण अर्थ पढ़ैत अछि, फेर संरचनावादी आ ऐतिहासिक अर्थ-परीक्षण करैत अछि। विधि-

परिवर्तनक एहि स्पष्ट प्रयोगसँ पाठक बूझि सकैत छथि जे एकहि कविता अलग सवालक उत्तर किएक दैत अछि।

‘स्वागत गान’क समारोह-परिस्थिति आ मैथिली क्षेत्रक बाढ़ि-पलायनक अनुभव मिलेलासँ औपचारिक स्वागत आ स्थानीय विपत्तिक विपर्यास प्रकट होइत अछि। मुदा काव्यरूपमे मौजूद विरोधाभासकें समकालीन सामाजिक इतिहासक प्रत्यक्ष दस्तावेज मानबाक पहिने कविता लिखबाक तिथि आ सार्वजनिक प्रसंगक प्रमाण देखबाक चाही।

मूल आलोचना बहुपद्धतिगत दृष्टि अपनबैत अछि; समस्या तखन उठैत अछि जखन सिद्धान्तक नामक विस्तार विशिष्ट शब्द वा पाँतिक ठोस अर्थसँ आगाँ निकलि जाइत अछि। कविता-विशेषक मूल प्रतिलिपि, पाठान्तर आ संरचनागत संकेतक संग निष्कर्ष जोड़ब एकरा आरो मजबूत करत।

४५. विदेहः लोगोः विद्यापतिः उगनाः मिथिलाः मैथिली

‘विदेहः लोगोः विद्यापतिः उगनाः मिथिलाः मैथिली’ प्रतीक, पताका आ साहित्यिक पहिचानक सम्बन्धपर रचित सांस्कृतिक प्रबन्ध अछि। महाभारतक विभिन्न पात्रक ध्वजा, विष्णुक गरुड, शिवक नन्दी आ लोकपूजाक सामग्रीक उदाहरण देबैत लेखक पूछैत छथि जे मिथिलाक दृश्य प्रतीक कोन साझा स्मृति सँ बनि सकैत अछि।

ध्वजाक शास्त्रीय उदाहरण आ आधुनिक साहित्यिक संस्थाक लोगो-दुनू एकहि प्रकारक प्रमाण नहि अछि। पहिलक आश्रय पाठ-परम्परा आ पुराणक वर्णन, दोसरक आश्रय दृश्य-संकेत, लोकग्रहणशीलता आ प्रकाशन-परिचय थिक। एही अन्तरकें स्पष्ट करब मूल प्रबन्धक मौलिक प्रस्तावक शक्ति बढ़बैत अछि।

एहि पाठक उपलब्धि ई अछि जे उगना-विद्यापति सन्दर्भकें मात्र पूजनीय प्रतिमा नहि, सांस्कृतिक संप्रेषणक प्रश्न बनबैत अछि। किंतु विशिष्ट प्रतीकक इतिहास, स्रोतग्रन्थक संस्करण आ समुदाय-विशेषक ग्रहणक साक्ष्य बिना एकरेखीय मैथिली प्रतीक-व्यवस्था निश्चित नहि मानल जाउ।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

एक्के काव्यवर्गक पाँच अध्ययनमे लोककवि, राजनीतिक प्रतिरोध, गायन-परम्परा आ दृश्यप्रतीकक प्रमाण-पद्धति अलग अछि। भिन्न कृतिक अन्तिम मूल्याङ्कन एउटहि विधागत आदर्शसँ नहि, प्रत्येक विधाक आन्तरिक अपेक्षासँ होयबाक चाही।

४६. 'बज्जिका गीत-संगीत': समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा

डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत'पर मूल पुस्तकक समेकित अध्ययन अत्यन्त विस्तृत अछि। प्रकाशकीय सन्दर्भमे किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर आ प्रथम संस्करण २००० अंकित अछि। पाठमे बज्जिका आ मैथिलीक निकटता, गीतक स्वरसंसार, बोलीक स्वायत्तता, लोकस्मृति आ आधुनिक आलोचनाक अनेक स्तर एकत्र भेल अछि। एहि विषयमे पहिल सैद्धान्तिक आवश्यकता ई अछि जे भाषा-सम्बन्धकें भाषिक आधिपत्यक प्रस्तावमे नहि बदलल जाय।

मूलक 'चतुर्आयामी आलोचनात्मक अनुशीलन'क एक-एक कोण अलग जाँचला पर पदक स्थानीय रूप, वाचिक परम्परा, गायन-स्थितिक सामाजिक प्रसंग आ मुद्रित सम्पादनक हस्तक्षेप पहिचानल जा सकैत अछि। मैथिली-बज्जिका तुलना उपयोगी अछि, जँ शब्दसाम्यकें स्वतः समान सांस्कृतिक अर्थक प्रमाण नहि मानल जाय। गीत लोकसमाजक भीतर बदलैत अछि; मुद्रित पाठ ओकर एक ऐतिहासिक अवस्था मात्र अछि।

विशाल विवेचनक आलोचनात्मक सफलता बहुत सिद्धान्त उद्धृत करब नहि, बल्कि चयनित गीतक वास्तविक पद, उच्चारण-भेद, लय आ गायन-परिस्थितिक साक्ष्यसँ निष्कर्ष स्थापित करब होयत। एकरा लेल मूल गीत-संकलनक पृष्ठ, संग्राहक आ स्थल-तिथि-पञ्जी उपयोगी रहत।

४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग

लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलियाक दुर्लभ प्रयोगकेँ केन्द्र बना कऽ मूल लेखक चौपाइ, रूपमाला, गीतिका, दोहा आ रोला पर विचार करैत छथि। दोहा-रोलाक संयोग, आरम्भ-पदक पुनरागमन आ मात्रिक अनुशासन कुण्डलियाक मूल्याङ्कनक प्रधान औजार अछि। प्रूफरीडरक हस्तक्षेपसँ छन्दोभङ्गक दावामे पाठान्तरक साक्ष्य विशेष आवश्यक अछि।

मूल प्रबन्ध उमर खय्यामक रुबाइ-संग तुलना करैत अछि; ई सर्जनात्मक उपमा भऽ सकैत अछि, मुदा दुनू विधाक ऐतिहासिक उद्भव अथवा छन्दानुशासन एक घोषित करबाक प्रमाण नहि। एकहि पदक पुरान पाण्डुलिपि, पहिल छापा आ नव संस्करण साथ रखि कऽ मात्रा गनला पर वास्तविक पाठ-दोष आ कविक स्वतंत्र प्रयोगक भेद खुलत।

एकर उपलब्धि छन्द-सम्पादनक नैतिकता पुनः केन्द्रमे अनब अछि। आलोचनाक सीमा एतय अछि जे ‘अज्ञानतावश’ सन दोषनिर्धारक कथनक लेल सम्पादकक पहिचान आ दू प्रमाणित पाठरूपक साक्ष्य अनिवार्य अछि।

४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता

पैटर्न-कविता आ आकार-कविताक विवेचनमे मूल लेखक पाँतिक दीर्घता आ पुनरावृत्तिक क्रमकेँ ध्वन्यात्मक पुनरुक्तिसँ अलग करैत छथि। ई अन्तर महत्वपूर्ण अछि: कविताक दृश्यरचना श्रवणकेँ पूरा नहि बदलैत, मुदा पृष्ठपर अर्थक दोसर व्यवस्था बनबैत अछि। आकार-कवितामे शब्दक स्थान स्वयं व्याख्याक अंग बनैत अछि।

‘मैथिलीमे पहिल बेर’ सन ऐतिहासिक दावा सावधानीसँ जाँचबाक अछि; प्रकाशित उदाहरणक तिथि, आगूक हस्तलिखित/पत्रिकागत सामग्री आ छापाखानाक तकनीकी सम्भावना देखल बिना प्रथमत्व निश्चित नहि होयत।

एहि विधाक आलोचना केवल अक्षरक आकृतिक प्रशंसा नहि; रूप आ विषयक अन्तर्सम्बन्ध, दृश्य-पाठक क्रम आ सामान्य उच्चारणमे अर्थक परिवर्तन देखबाक चाही।

मूल पाठक महत्त्व नूतन काव्य-प्रयोगक पञ्जीकरणमे अछि। भविष्यमे वास्तविक उदाहरणक चित्रसहित संस्करण आ देवनागरीक अक्षर-मात्राक स्थान-सत्यापन एहि तर्ककें प्रमाण-सक्षम बनाएत।

४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुर:

विद्यापति नामसँ जुड़ल अनेक ऐतिहासिक पहिचानक विवाद एहि प्रबन्धक विषय अछि। लेखक संस्कृत-अवहट्टक ‘विद्यापति ठक्कुर’ आ लोकपदावलीक विद्यापतिक एकत्वपर प्रश्न उठबैत छथि; बिदापत नाच, पाग, जातीय स्वामित्व आ बंगालक शोध-इतिहासकें प्रतिवादक स्रोत बनबैत छथि। ई स्थापना साहित्यिक इतिहासमे ज्ञान-सत्ताक सम्बन्ध पर विचार खोलैत अछि।

मुदा समान नामक अनेक व्यक्तिक अस्तित्व सम्भव होयब आ कोनो विशिष्ट ग्रन्थक लेखक दू अलग व्यक्ति हेबाक दावा अलग प्रमाण माँगैत अछि। रचनाक काल, भाषिक रूप, पाण्डुलिपिक वंश, समकालीन अभिलेख, कोलाफन आ लोकगायकक परम्परा परस्पर जाँच योग्य अछि। ज्योतिरीश्वरक ‘वर्णरत्नाकर’ सम्बन्धी साक्ष्य कें ओकर वास्तविक मूल पदसँ पढ़ब अत्यावश्यक अछि।

मूल प्रबन्धक मूल्य पदावलीकें प्रतिष्ठित वंशक संपत्ति बनबाक विरोधमे लोक-समुदायक संरक्षण-भूमिका दर्शाएब अछि। एकर सीमा निर्णायक इतिहासलेखन आ साहित्यिक-सामाजिक प्रतिरोधक भाषामे कखनो-कखनो दूरी कम भऽ जाएब अछि; एहि दुनूकें अलग राखब चाही।

५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा)

ओमप्रकाश झाक 'कियो बूझि नै सकल हमरा'क विवेचन मैथिली गजलक बहर, शेरक भाव-समाप्ति आ लोकभाषाक स्वाभाविक सम्बन्धपर केन्द्रित अछि। मूल समीक्षकक आरम्भ भदवारिक मेघ आ स्थानीय लोकोक्तिक चित्रसँ होइत अछि, जाहिसँ शास्त्रीय उर्दू-प्रविधि आ मैथिली कथन-रसक तनाव उभरैत अछि।

'करेजासँ शोणित बहाबैत रहलौ' सन कथन गजलकारक आत्मपीडा आ सामाजिक अनुभव दुनू दिशामे खुलैत अछि। एक शेरक प्रभाव पूरा संग्रहक निर्णय नहि; अलग शेरमे बहक निर्वाह, रदीफ-काफियाक संगति आ समग्र गजलक स्वर-विन्यास जाँचबाक चाही। मूल आलोचकक 'सर्वश्रेष्ठ' मूल्यनिर्णय सम्भवतः हुनकर प्रबल साहित्यिक रुचि थिक, तुलनात्मक विस्तृत पञ्जी नहि।

एहि आलोचनाक उपयोगिता मैथिली गजलमे स्थानीय शब्दक सौन्दर्य पहिचानब अछि। तथापि कोनो कविक श्रेष्ठत्वक दावा विभिन्न समकालीन गजलकारक प्रकाशित शेरक बराबर मात्रामे छन्द-परीक्षणसँ प्रमाणित होएत।

५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी

'माँझ आंगनमे कतिआएल छी' नामक गजल-रूबाइ संग्रहक समीक्षा 'बीच रहितो किनाराक अनुभव' पर केन्द्रित अछि। मूल आलोचक एहि शीर्षकक कबीरक उलटबासी अथवा गजलक चमत्कार मात्र नहि, सामाजिक यथार्थक सूचक मानैत छथि। 'कतिआएल'क दोसर अर्थ साहित्यिक संस्थाक उपेक्षासँ बनैत अछि।

मूल निबन्ध मुन्नाजीक गजलकारक स्वभाव आ हुनकर विहनि-कथाकार रूपक अन्तर स्पष्ट करबाक प्रयास करैत अछि। दुनू विधामे संक्षिप्तिकरण अछि, मुदा गजलक शेर स्वतंत्र बन्दक रूपमे पूर्ण भऽ सकैत अछि; विहनि कथामे अन्तिम दृश्य पाछू पुरान सूचना नव अर्थ पवैत अछि। एहि भेदसँ लेखकक समग्र रचना-यात्रा समझब सम्भव अछि।

समीक्षाक उपलब्धि साहित्यिक प्रतिभा आ मान्यता-वितरणक खाइकेँ चिन्हब अछि। सीमा ई जे सामाजिक अवहेलना सम्बन्धी मूल्यनिर्णयकेँ वास्तविक प्रकाशन, समीक्षा-इतिहास आ चयन-पद्धतिक तथ्यसँ अलग जाँचबाक अछि।

५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

‘कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक’ विधागत पहचानक परिवर्तनक दस्तावेज अछि। मूल प्रबन्ध १९८६क ‘चक्रव्यूह’ आ ओही साल प्रकाशित संयुक्त कथा-संग्रह ‘त्रिकोण’क उल्लेख करैत अछि। एहि लेखकेँ ‘कथाकार’ नामसँ सीमित करबाक प्रवृत्तिक विरोधमे पहिल कविता-संग्रहक प्रमाण आलोचनाक उचित आरम्भ अछि।

अशोकक रचनाक समय-क्रम आ बहुत कम लिखबाक स्वभावपर मूल लेखकक टिप्पणी महत्वपूर्ण अछि, मुदा रचनाक मात्रा ओकर साहित्यिक प्रभावक पर्याप्त मापक नहि। ‘त्रिकोण’मे तीनू लेखकक पाँच-पाँच कथा होयब सामूहिक लेखनक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य दैत अछि; एहि तथ्यसँ अशोकक एकल कथा-दृष्टि निर्धारित नहि होयत।

मूल समालोचनाक शक्ति विधाक सीमान्त-पार यात्रा चिन्हब अछि। विशिष्ट कविताक बिम्ब, कथाक कथन-दृष्टि आ कथेतर गद्यक तर्क-रचना अलग-अलग देखलापर ई परिचय एक सुनियोजित लेखकीय विकास-इतिहास बनि सकैत अछि।

५३. बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

बूचजीक कविता पर ई दोसर मूल अध्ययन 'जेठी करेह' आ 'स्वागत गान'कें मार्क्सवादी, ऐतिहासिक, संरचनावादी, नारीवादी, उत्तर-आधुनिक आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिसँ पुनः पढैत अछि। इकाई ४४ सँ एकर स्पष्ट विषयगत पुनरावृत्ति अछि; मुदा एहि पुनरावृत्तिक आलोचनात्मक मूल्य तखने अछि जखन दोसर विवेचन पहिले विश्लेषणसँ नव प्रमाण वा नूतन प्रश्न जोड़य।

'जेठी करेह'क उफनैत पानि श्रम, जोखिम आ राज्यक संरचनाक प्रतिमान बनि सकैत अछि; तथापि प्रतीकक राजनीतिक अर्थ पदक मौलिक भाषिक क्रियासँ उत्पन्न होएबाक चाही। 'स्वागत गान'मे औपचारिक समारोह आ अभावग्रस्त लोकजीवनक विरोधाभास साहित्यिक व्यंग्यक एक सशक्त आधार अछि।

एहि प्रबन्धक मुख्य सीमा सिद्धान्त-सूचीकें स्वयं आलोचनात्मक निष्कर्ष मानबाक आशंका अछि। दू चुनल कविता पर प्रत्येक पद्धतिक प्रमाणित निष्कर्षक तुलना कऽ समानता आ असहमतिक सार बनाओल जाए तँ बहुविध अध्ययन वास्तविक फल देत।

५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

नचिकेताक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश'क मूल समालोचना चारि कल्लोलक कथासंरचना खेलैत अछि। स्वर्ग-नरकक द्वारपर मृत लोकनिक पंक्ति, चोर, सैनिक, अभिनेता, नेता आ भिखमंगनीक आगमन मिथिला रंगमंचमे मृत्यु-पश्चात् प्रशासनक असंगत हास्य रचैत अछि। प्रवेश-द्वार पर पात्रक समान प्रतीक्षा सामाजिक पदक विडम्बनाक मंचीय उपकरण अछि।

दोसर कल्लोलमे कलाकारक पहिचान आ वर्गगत पूर्वाग्रह, तेसरमे राजनैतिक गठजोड़ आ समाचारक प्रदर्शन, चारिममे यमराजक खाता तथा बन्द प्रवेश-द्वारक

प्रश्न एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। एहि विस्तारमे हास्य केवल संवादक नहि, प्रतीक्षा आ टालमटोलक संरचनाक अछि। लेखक ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'सँ सम्बन्ध उठबैत छथि, यद्यपि 'वर्णरत्नाकर'क कल्लोल-रूप आ प्रहसनक अंक-रूप अलग अछि।

समीक्षाक उपलब्धि मैथिली व्यंग्यकें विश्व रंगमंचक 'अर्थहीनता'क संवादमे स्थान देब अछि। सीमाक प्रश्न मंचीय गति, अनावश्यक व्याख्या आ पात्रक बोलबाक बराबरी पर आधारित अछि; पाठक संग वास्तविक मंचनसाक्ष्य सेहो चाही।

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंगरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”

चारि नाटकक तुलनात्मक लेखमे बैकेटक 'वेटिंग फॉर गोडो', पिंगरक 'द बर्थडे पार्टी', बादल सरकारक 'एवम् इन्द्रजीत' आ नचिकेताक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' संग रखल गेल अछि। समय, प्रतीक्षा, पहचान, भय आ व्यवस्था-व्यंग्य सभमे भेटैत अछि, मुदा नाटकसभक ऐतिहासिक परिस्थितिक भिन्नता ओकर अर्थगठन बदलि दैत अछि।

बैकेटक अनन्त प्रतीक्षा आ नचिकेताक निषिद्ध प्रवेश एक स्तरपर तुलनीय अछि; पिंगरक घरेलू अन्तरिक्षमे हिंसक अनिश्चितता आ बादल सरकारक मध्यवर्गीय जीवनक चक्र दोसर स्तर प्रस्तुत करैत अछि। समान प्रतीक भेंटलासँ प्रभावक प्रत्यक्ष प्रमाण सिद्ध नहि होइत अछि। एहि तुलनामे भाषा, दृश्य-लय आ पात्र-विन्यासक ठोस प्रसंग अधिक निर्णायक अछि।

मूल आलेख पुरस्कार-सन्दर्भमे नचिकेताक कृतिक उपेक्षा उठबैत अछि। साहित्यिक संस्थाक निर्णय आ कलात्मक श्रेष्ठता दुनू अलग विवेचन माँगैत

अच्छि। ई प्रबन्धक मूल्य तुलनात्मक प्रश्न अनब अच्छि; निष्कर्षक शक्ति एकहि कसौटीपर चारू मूल पाठक दृश्यविशेष जाँचला पर निर्भर करैत अच्छि।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

नाट्य-विधामे प्रतीक्षा, शारीरिक अभिनय आ संरचनात्मक विडम्बना साथ-साथ चलैत अच्छि। क्षेत्रीय लोकनाट्य आ विश्व रंगमंचक तुलना साहित्यिक वंश-दावाक स्थानपर दृष्टिकोणक समानता-अन्तरक अध्ययन रूपमे अधिक विश्वसनीय अच्छि।

५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल

‘छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल’ शीर्षकक तीन रूपकेँ केन्द्र बना कऽ मूल लेखक महेन्द्र मलंगियाक नव नाटक आ ओकर भूमिकाक शब्दार्थ-विवाद उठबैत छथि। रमानन्द झा ‘रमण’ द्वारा सुझाओल रूप आ यात्रीक कवितामे प्रयुक्त ‘घैल’क उदाहरण एहि विवादकेँ जीवित लोकप्रयोग आ साहित्यिक भाषाक प्रश्न बनबैत अच्छि।

नाटकक नायिका कबूतरी देवीक पीडाकेँ शीर्षकक अर्थ-संग जोड़ब समीक्षाक महत्त्वपूर्ण दिशा अच्छि। मुदा ‘छुतहर’क लोक-व्युत्पत्ति, जातीय व्यवहार आ विशिष्ट सामाजिक सन्दर्भक बिना शब्द-रूपक विवादकेँ निर्णायक ठहरेबाक खतरा अच्छि। पाणिनीय व्याकरणक उल्लेख अर्थ-निर्धारणक एक सम्भावित संसाधन थिक, स्थानीय जीवित प्रयोगक विकल्प नहि।

एहि समालोचनाक उपलब्धि भाषा-सत्ता आ पात्रक गरिमाक प्रश्न एकत्र अनब अच्छि। वास्तविक नाटकक दृश्य-रचना आ भूमिका-दुनू अलग पढ़ला पर शब्दक शीर्षकात्मक प्रभाव आ रंगमंचीय प्रभावक तुलनात्मक निष्कर्ष निकलत।

५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

परशुराम झाक 'डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा'क सन्दर्भमे चारि अंग्रेजी नाटकक समीक्षा कएल गेल अछि: मार्लोक 'डॉक्टर फॉस्टस', मिल्टनक 'सैमसन एगोनिस्टेस', टी. एस. एलियटक 'मर्डर इन द कैथेड्रल' आ गल्सवर्दीक 'स्ट्राइफ'। चारू रचनामे शान्ति एकहि अवस्था नहि, बल्कि इच्छा, धार्मिक कर्तव्य, न्याय आ औद्योगिक संघर्षक बाद उठैत प्रश्न अछि।

फॉस्टसक ज्ञान-लालसा आ आत्मविनाशकें सामूहिक श्रमिक संघर्षक 'स्ट्राइफ'सँ एकहि नीतिकथा बना देब अनुचित होयत। 'सैमसन'क धार्मिक-राजनीतिक अस्मिता, आ कैथेड्रलक शहादतक प्रसङ्ग व्यक्तिगत आ सार्वजनिक धर्मसंकटक अलग संरचना दैत अछि। मूल प्रबन्धक तुलना तखने बलवती होयत जखन प्रत्येक नाटकक कथावाचक-स्थल, शोकात्मक अन्त आ दृश्य-गति अलग राखल जाय।

पुस्तक-आधारित आलोचनाक मूल कसौटी ई अछि जे द्वितीयक ग्रन्थकारक निष्कर्ष आ मूल चारू नाटकक पाठ-साक्ष्यकें अलग चिन्हल जाय; बिना मूल नाटकक पाठ मिलानक 'प्रभाव' वा समान राजनीतिक अर्थ अन्तिम नहि मानल जाय।

५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”

'मध्यमपुरुष एकवचन'क विवेचनमे नचिकेताक रचनाक पद्यत्व आ नाटकीय गद्यक सीमा प्रश्न बनैत अछि। मूल आलोचक संक्षिप्त पाँतिमे अधिक संकेत बनबाक पद्यात्मक सम्भावना पर जोर दैत छथि; ई विधागत सघनताक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा गद्यकें अर्थसघनतासँ वंचित मानब उचित नहि।

मध्यमपुरुषक व्याकरणिक सम्बोधन पाठक वा पात्रकें प्रत्यक्ष संबोधित करबाक अवसर दैत अछि। नाटकक संवाद-जगतमे 'अहाँ' वा 'तौ'क परिवर्तन सम्बन्ध,

प्रभुत्व आ प्रतिरोधक अर्थ बदलि सकैत अछि। एकर साहित्यिक अध्ययन शीर्षकक व्याकरणिक बोधसँ प्रारम्भ भऽ मंचक संवाद, शरीर, मौन आ पाठक-स्थितिधरि पहुँचेबाक चाही।

प्रस्तुत प्रबन्धक उपलब्धि कविता, नाटक आ समकालीन सामाजिक व्यंग्यक परस्पर सम्बन्धक प्रश्न अछि। सीमा ई जे पद्य-गद्यक सामान्य परिभाषा वास्तविक रचनाक क्रमिक दृश्य-अध्ययनपर हावी नहि होय।

५९. नाट्य-नवग्रह

‘नाट्य-नवग्रह’ एकहि पुस्तकमे विविध मैथिली नाट्यरचनाक आस्वादन प्रस्तुत करैत अछि। मूल प्रबन्धमे ‘कमलाक भगता’, ‘दानवीर दधीची’, ‘अपाला आत्रेयी’, ‘भऽ जाएब छू’ आ ‘जलोदीप’ सन शीर्षकसँ मिथक, लोकविश्वास आ सामाजिक आलोचनाक विभिन्न स्रोत खुलैत अछि। नवग्रह नामक संग्रहात्मक प्रतीक स्वयं नाटकसभक समान रचनाविधान प्रमाणित नहि करैत अछि।

‘कमलाक भगता’मे निशान, परम्परा आ अन्धानुकरणक हास्यक सम्बन्ध चिन्हल गेल अछि। एहन प्रसङ्गमे व्यंग्यक दिशा पहिचानब आवश्यक अछि: निशाना लोक-आस्थाक स्वीकृत व्यवहार अछि, अन्धविश्वासक स्वार्थी संचालक अछि, वा पात्रक सामाजिक विवशता? उत्तर मूल संवाद आ रंग-स्थिति दैत अछि।

प्रत्येक नाटकक आलोचनात्मक मूल्याङ्कन लेल पात्र-सूची, दृश्य, रंग-निर्देश आ अन्तिम निर्णायक मोड़क अलग लेखा चाही। मूल समालोचनाक विशेषता संग्रहकें सार्वजनिक प्रश्नक बहुरंगी मंच मानब अछि; सम्भावित सीमा सब नाटककें पूर्वनियत वैचारिक एकतामे समेटबाक प्रवृत्ति।

६०. मुन्नी कामतक ‘जिन्दगीक मोल’ आ ‘चुक्का’

मुन्नी कामतक ‘जिन्दगीक मोल’ आ ‘चुक्का’क अध्ययन रंगमंचक छोट रूप आ स्वीक जीवन-निर्णयक प्रश्नपर केन्द्रित अछि। मूल प्रबन्ध निमन्त्रित रचना, निमन्त्रित आलोचकक टिप्पणी आ विदेह-सदेहमे संचयनक प्रकाशन-प्रक्रिया

सेहो दर्ज करैत अछि। एहि प्रक्रियाक अभिलेख साहित्यिक सार्वजनिकताक इतिहास लेल महत्वपूर्ण अछि।

‘जिन्दगीक मोल’क शीर्षक मूल्य, मोलभाव आ व्यक्ति-गरिमाक सम्बन्धक प्रश्न खोलैत अछि। मुदा एहि शीर्षकसँ कथावस्तु अनुमान कऽ लेना समीक्षा नहि होयत; पात्रक वास्तविक कथन, मंचीय क्रिया आ द्वन्द्वक विकासक प्रमाण चाही। ‘चुक्का’क लोकप्रतीक सेहो मूल सन्दर्भमे दृश्यात्मक वस्तु, सामाजिक सम्बन्ध अथवा रूपक जेना कार्य करैत अछि, तदनुसार परखल जाय।

एहि खण्डक समीक्षा रचनाक साहित्यिक प्रभाव आ प्रकाशन-संस्थाक भूमिका अलग राखैत अछि। अभिनेताक उपयोग योग्य संक्षिप्त दृश्य, पात्रक स्वतंत्रता आ समाप्तिक असहज प्रश्न एहि दोसर पाठमे प्राथमिक मानदण्ड बनबाक चाही।

६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण

कुणालक ‘कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक’ सात नाटकक सामूहिक अध्ययन अछि। मूल पाठ लोकनाट्यक परम्परा, मिथकीय पुनर्पाठ, गीत-नृत्य आ आधुनिक पात्रक अन्तर्द्वन्द्वक एक संग्रहात्मक संरचनामे देखैत अछि। ‘कुसमा-सलहेस’क विस्तृत लोकमहागाथा आ संक्षिप्त प्रेमकथात्मक नाटिकासभ एकहि रंगविधान अपनबैत नहि अछि।

संग्रहक स्थापत्य जाँचबाक लेल नाटकसभक क्रम, कथाकाल, भूमिका आ मंचीय आवश्यकता अलग चिह्नित करब जरूरी अछि। गीतक पुनरागमन आ सूत्रधारक हस्तक्षेप लोक-समुदायक स्मृति जीवित करैत अछि, मुदा अत्यधिक कथावाचन पात्रक दृश्यात्मक स्वतंत्रता घटा सेहो सकैत अछि।

मूल समालोचनाक मूल्य सातो रचनाक बीच वैचारिक सेतु खोजब अछि। एकर सीमा नाट्यकारक ‘युगप्रवर्तक’ सन स्थान देबाक दावाक प्रमाणगत विस्तार अछि; ग्रन्थक वरीयता वास्तविक प्रदर्शन, भाषिक प्रयोग आ प्रतिवादी रंगमंचक तुलनाक बाद तय होएत।

६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाट्य-समीक्षा

‘चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा’क मूल समालोचना बुद्धि, छल, लोककथा आ कलाकारक जीविकाकेँ एक मंचपर अनैत अछि। भाँटक कथन-परम्परा आ मेटाथिएटर—जतय नाटक अपन प्रस्तुतिक प्रक्रिया खोलैत अछि—हास्यकेँ केवल मनोरञ्जन नहि रहय दैत अछि।

गोनूझाक बुद्धि यदि शक्तिशालीक चाल उलटबैत अछि, तँ हास्य सामाजिक प्रतिरोध बनि सकैत अछि; जँ ई केवल कमजोर पात्रक मजाक बनि रहैत अछि, तँ रंग-राजनीति उलट दिशामे चलि जाइत अछि। अतः मूल मंचीय संवादमे हास्यक लक्ष्य, दर्शकक जानकारी आ पात्रक अन्तिम सामाजिक स्थान जाँचबाक अछि।

भारतीय वक्रोक्ति आ कार्निवल-सिद्धान्तक तुलना रोचक अछि, मुदा सिद्धान्तक नामक जमघट पात्रक क्रियाक प्रत्यक्ष मूल्याङ्कन नहि करैत अछि। पाठमे हास्यक विशिष्ट मोड़, गीतक बीच संक्रमण आ शिल्पक पुनरावृत्तिक साक्ष्य एकरा अधिक प्रभावी बनाओत।

६३. “बिदापत”: लोकनाट्य, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच

‘बिदापत’क आलोचना विद्यापतिक लोकग्रहण, गायन, लखिमाक सक्रिय भूमिका आ समय-पार साहित्यिक स्मृतिक प्रश्न उठबैत अछि। नाटकक भीतर नाटकक व्यवस्था माध्यमक आत्मबोध उत्पन्न करैत अछि: कविता एकटा पोथीक बन्द पाठ नहि, अभिनयमे फेर जन्म लेनिहार सामुदायिक कृति अछि।

एहि रूपान्तरणमे ऐतिहासिक विद्यापति आ लोक-विद्यापतिक भेद मूलभूत अछि। लखिमाकेँ केवल प्रेरणा-रूपक मानल जाय अथवा स्वतंत्र निर्णय करनिहार पात्र, से वास्तविक दृश्य आ संवादसँ स्पष्ट होयत। लोकगानक प्रस्तुति

पुरुषकवीक महिमा मात्र बढबैत अछि कि गीतक सामुदायिक स्वत्व सेहो देखबैत अछि—ई मूल समीक्षाक उपयुक्त प्रतिप्रश्न अछि।

समीक्षाक उपलब्धि लोकनाट्य आ इतिहास-स्मृतिक बहुस्तरीय मेल अछि। दृश्य-निर्देशन, संगीतक उपयोग आ मूल पदावलीक पाठभेद नहि देखलासँ नाटकक विशिष्ट मंचीय अभिव्यक्ति आ ऐतिहासिक दावाक दूरी अस्पष्ट रहि जाइत अछि।

६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव

‘सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव’ पूर्व प्रशंसात्मक आलेखसभक अनिवार्य प्रतिपक्ष अछि। मूल विवेचन संरचनात्मक असमानता, पात्र-विकासक दुर्बलता, सूत्रधारक पुनरावृत्ति, स्त्री-कर्तृत्व आ पितृसत्तात्मक अनुमोदनक तनावकें प्रकाशमे अनैत अछि। ई भेद उच्च कोटिक समालोचनाक परिचायक अछि, किएक तँ संग्रहक समय मूल्यांकन एकर विरोधात्मक अंशक परीक्षणबिना अधूरा रहत।

सूत्रधारक अत्यधिक व्याख्या दर्शकक स्वतन्त्र अर्थ-निर्माण सीमित कऽ सकैत अछि। तहिना गीत-विराम कखनो पात्रक मानसिकता गाढ़ करैत अछि, कखनो कथाक संकट टारैत अछि। स्त्री पात्रक स्वाधीन कथन नाटकक अन्तिम समाधानमे रहैत अछि कि फेर परम्परागत परिवारक सहमतिक अधीन होइत अछि—एहि बिन्दुपर दृश्यवार प्रमाण अपेक्षित अछि।

एहि प्रबन्धक आलोचनात्मक प्रामाणिकता तखने सशक्त बनत जखन ‘सीमा’ लिखबाक संग एकटा नाटकक विशिष्ट दृश्य आ ओकर वैकल्पिक मंचीय समाधान सेहो दर्शाओल जाय। समग्रता मतैक्य नहि, जटिलताक स्वीकार थिक।

६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता

कुणालक नाट्य-संसारक समग्र निष्कर्ष लोकनाट्य-त्रयी आ प्रेमक चारि नाटिकाकें बुद्धि, अभय, विश्वास, आत्मनिर्णय आ प्रेमक क्रमिक वैचारिक यात्रा रूपमे रखैत अछि। एहन रचनात्मक क्रम पाठककें एकल नाटकक सीमित दायरा

पार करबैत अछि, मुदा लेखकक विकासक रैखिक चित्र बनबैत समय प्रकाशन आ मंचनक वास्तविक तिथिक ध्यान जरूरी अछि।

लोकस्रोतक प्रति निष्ठा आ शास्त्र-सापेक्ष प्रयोग दोनू महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा लोककथा मंचपर एला मात्र ओकर सामाजिक अर्थ स्वतः प्रतिरोधात्मक नहि होइत अछि। हाशियाक पात्रकें बोलबाक अवसर, कथान्तक न्याय आ दर्शकसँ संवाद—ई तीन साक्ष्य समग्र विचारक वास्तविक परीक्षण करैत अछि।

संकलनक समेकित समीक्षा उच्च आ कम सफल नाटकसभक विषमता नहि मेटाउ। सातो नाटक स्वतंत्र साहित्यिक इकाई छथि; वैचारिक एकताक उल्लेख हुनकर भिन्नता सुरक्षित राखि कएल जाय।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

नाट्यसमूहक समेकित विवेचनमे प्रत्येक नाटकक कथावस्तु, अभिनय, लोकस्रोत आ आलोचनात्मक सीमाक स्वतंत्र अवलोकन बचाओल जाउ; संग्रहक वैचारिक एकताक नामपर भिन्न पात्रक विवाद नहि मिटाओल जाउ।

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल

ई इकाई 'छुतहर घैल' सम्बन्धी पूर्व मूल आलोचना ५६ सँ पुनः जुड़ैत अछि। फरक ई अछि जे एतय विशेष रूपसँ महेन्द्र मलंगियाक नाट्य-रचना, भूमिकाक भाषिक विवाद आ कबूतरी देवीक चित्रणक पुनर्पाठ प्रमुख अछि। समीक्षाक समीक्षामे पुनरुक्त सामग्री चिन्हल जाएब आवश्यक अछि, नहि तँ एकहि तर्ककें दू स्वतंत्र आविष्कार बुझबाक भ्रम रहत।

यात्रीक 'छुतहर' सम्बन्धी काव्यप्रयोग आ स्थानीय बोलचालक अर्थ नाटकक शीर्षकक मान्यता बुझबाक माध्यम अछि। तथापि भाषाक सामान्य रूप नायकाक पीडा वा सामाजिक उपेक्षाक पूर्ण अर्थ नहि दैत; से संवाद, रंगमंचक वस्तु-संकेत आ अन्तिम स्थितिसँ खुलैत अछि।

मुख्य सम्पादकीय सुझाव ई अछि जे आइयो प्रचलित स्थानीय रूप, नाटकक प्रामाणिक प्रथम प्रकाशन आ बादक पाठान्तरक तुलना कयल जाय। केवल 'कुन

शब्द सही'क विवादसँ बहार निकलि रचनाक सामाजिक आलोचना तक पहुँचनाइ उचित अछि।

६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकरपर मूल आलेख जीवनी, सामाजिक अपमानक अनुभव आ संवैधानिक परिवर्तनक वैचारिक मार्गकें जोड़ैत अछि। जन्म-सन्दर्भ, परिवार आ शिक्षा सम्बन्धी विवरण स्रोतक जीवनीपरक स्तर अछि, जखन कि जाति-व्यवस्थाक विश्लेषण आ लोकतन्त्रक कसौटी विचारक स्तर। दुनूकें मिलाओल उचित अछि, पर ऐतिहासिक तथ्यक स्वतंत्र स्रोत चाही।

आम्बेडकरक लेखनकें केवल जातीय पीड़ाक आत्मकथामे सीमित नहि कएल जा सकैत अछि। प्रतिनिधित्व, शिक्षा, सार्वजनिक न्याय, धर्म-सत्ता आ संवैधानिक नैतिकताक प्रश्न हुनकर चिंतनमे पृथक तर्कक्षेत्र बनबैत अछि। मैथिली साहित्यक सन्दर्भमे ई विचार कोन जातिगत भाषा-प्रयोग, पात्रक नागरिकता आ संस्थागत अवरोध उजागर करैत अछि, से स्पष्ट होयबाक चाही।

मूल आलेखक महत्त्व समानान्तर साहित्यिक दृष्टिमे आम्बेडकरक स्थान स्थापित करब अछि। आलोचनात्मक सीमा तिथि, उद्धरणक मूल संग्रह आ अनूदित विचारक स्रोत पहिचान बिना व्यापक जीवनी-दावाक निश्चयात्मक प्रयोग अछि।

६८. विदेह • समानान्तर साहित्य आन्दोलन

‘विदेह • समानान्तर साहित्य आन्दोलन’क आरम्भमे ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क अनेक खण्ड आ अध्याय-सीमाक उल्लेख भेटैत अछि। एहि कारण ई प्रबन्ध केवल घोषणापत्र नहि, ग्रन्थ-पञ्जी, समीक्षा, सम्पादनक वंशावली आ साहित्यिक सार्वजनिकताक मिश्र दस्तावेज बनैत अछि। संस्था आ कृतिक मूल्यांकन एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि, मुदा समानार्थी नहि अछि।

समानान्तर आन्दोलनक विचार पारम्परिक संस्थाक चयनाधिकार पर प्रश्न उठबैत अछि। तकर प्रमाण साहित्यिक कृति पढबाक नूतन कसौटी, नव लेखकक पहुँच, अभिलेखक संरक्षण आ भाषिक बहुलताक प्रभावसँ बनैत अछि; केवल मुख्यधाराक निषेधसँ नहि। सम्पादकीय स्वर स्वयं आन्दोलनक पक्षधर अछि, एहन स्थितिमे आलोचककें आत्मवर्णन आ बाह्य ऐतिहासिक सत्यापन अलग रखबाक अछि।

एहि इकाईक उपलब्धि प्रकाशित सामग्रीक दीर्घकालिक सन्दर्भ प्रस्तुत करब अछि। एकर सीमा पाठक सम्मुख अनेक पुस्तकक संक्षिप्त नाम आ उपलब्धिक दावे रखितहुँ स्वतंत्र प्रकाशन-साक्ष्यक अभावक सम्भावना अछि; विस्तृत अनुक्रम, संस्करण आ तिथि सुरक्षित राखब उपयोगी अछि।

६९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकक मूल विवेचन नेपालक मधेस आन्दोलन, लेखकक सार्वजनिक भूमिका आ साहित्यिक मान्यताक सम्बन्ध उठबैत अछि। किछु लेखकक असहमति वा विशेषांकमे अनुपस्थितिक सम्बन्धमे प्रबन्धकारक कथन व्यक्ति-सम्बन्धी मूल्यनिर्णय अछि; एकरा तैथिक दस्तावेज बिनु सार्वजनिक तथ्य नहि मानल जाय।

भ्रमरक लेखनक मूल्य राजनीति-साहित्य सम्बन्धक कारणेँ बढ़ि सेहो सकैत अछि, घटि सेहो; किन्तु काव्य-नाटकक वास्तविक सौन्दर्य-परीक्षण भाषा, पात्र, संघर्ष आ नाटकीय संरचनासँ अलग कयल जाउ। विशेषांकक सम्पादन-नीति, आमन्त्रण-पत्र आ प्राप्त सामग्रीक अभिलेख होय तँ एकर संस्थागत इतिहास स्पष्ट बनत।

मूल आलेखक योगदान सीमापार मिथिलाक सामाजिक संघर्ष आ साहित्यिक संवाद पर प्रकाश डालब अछि। आलोचनाक निष्पक्षता लेल अन्य पक्षक सार्वजनिक रूपसँ उपलब्ध वक्तव्य आ ऐतिहासिक समयरेखाक मिलान आवश्यक अछि।

७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

‘दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर’ मूल इकाई ६७क जीवनवृत्तसँ महत्त्वपूर्ण अंश साझा करैत अछि। एहि दोसर अध्ययनकेँ स्वतंत्र मूल्य देबाक लेल जीवनीक पुनर्कथनसँ आगाँ बढि आम्बेडकरक सामाजिक न्याय सम्बन्धी सिद्धान्त मैथिली साहित्यक आलोचनामे केना कार्य करैत अछि, ई प्रश्न उठएबाक अछि।

जाति-आधारित अपमानक कथा आ ओकर ऐतिहासिक विश्लेषण, साहित्यिक पात्रक आवाज आ वास्तविक राजनीतिक संस्थाक गतिविधि—तीनू अलग साक्ष्य-व्यवस्था अछि। लेखकक सामाजिक प्रतिरोधक भाषा सामाजिक अन्यायक चिरकालिक रूपकेँ उजागर करैत अछि, मुदा विशिष्ट जीवनी-तिथि आ दार्शनिक उद्धरणक स्रोत पहिचान चाही।

समीक्षाक शक्ति साहित्यकेँ समाजक नैतिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ब अछि। सीमा तब होइत अछि जखन सामाजिक प्रतिबद्धताक आधारपर कोनो रचनाक शिल्पगत सफलता स्वतः मानल जाय। दलित सौन्दर्यशास्त्रक अनुभव-प्रामाणिकता आ रचनात्मक गठन दुनू जाँचब आवश्यक अछि।

७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

कमलानन्द झाक ‘मैथिली उपन्यासः समय समाज आ सवाल’पर प्रबन्ध मूल लेखकक तीव्र असहमतिक दस्तावेज अछि। आरोप मुख्यतः चयनक संकुचितता, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ किछु उपन्यासकारक उपेक्षा पर केन्द्रित अछि। संग्रहमे जकरा स्थान नहि भेटल, ओकर सूची बनब आलोचनात्मक शोधक उपयोगी आरम्भ होयत; मुदा आलोचकक उद्देश्य अथवा जातिगत प्रेरणा स्वतः सिद्ध नहि होयत।

एहि विमर्शमे एक सार्थक प्रश्न ई अछि जे मैथिली उपन्यासक इतिहास लिखैत कोन विधा, काल, वर्ग, स्त्री-स्वर आ प्रादेशिक अनुभवकेँ सामने आनल जाए।

एकहि किताबक सीमित चयन आलोचनाक वैध निर्णय भऽ सकैत अछि, जँ चयनक कसौटी स्पष्ट हो। ओकरा 'छत्त' कहबाक लेल वास्तविक उद्धरण, पृष्ठ-आधार आ निष्कर्षक विरोधाभास देखेबा आवश्यक अछि।

मूल प्रबन्धक योगदान साहित्यिक कैनन निर्माणक राजनीतिक पक्ष खोलब अछि। एकर सीमा प्रतिपक्षक बौद्धिक ईमानदारीपर निर्णय देबाक स्थानपर लेखनक विशिष्ट त्रुटि आ चयन-बैज्ञानिक कमीकें प्रमाणसहित पहिचानब चाही।

७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

पंकज पराशर सम्बन्धी मूल आलेख साहित्यिक चोरी आ डिजिटल अपराधक गम्भीर आरोप करैत अछि। एहि दावाक प्रकृति आरोपात्मक अछि; आरोपक पुनरावृत्ति, पत्रिकामे छपल प्रतिवाद अथवा सम्पादकीय विश्वास अपनेमे अपराधक निर्णायक प्रमाण नहि। साहित्यिक पाठ-समानता, प्रकाशनतिथि, वास्तविक लेखकाधिकार आ उपलब्ध न्यायिक सामग्री स्वतंत्र रूपसँ परखबाक अछि।

साहित्यिक समानता देखला पर उद्धरण, अनुकरण, साझा स्रोत, लोककथा आ अनधिकृत पुनर्प्रकाशनक बीच स्पष्ट अन्तर जरूरी अछि। अन्तर्जालक अभिलेखक दिनांक, सुरक्षित प्रति, मूल दस्तावेजक परिवर्तित इतिहास आ पत्राचारक प्रामाणिकता जाँचल जाए तँ शोध न्यायसंगत बनैत अछि।

एहि प्रबन्धक उपयोगी पक्ष साहित्यिक सम्पादकक स्रोत-परखक जिम्मेदारी सामने अनब अछि। सीमा तीव्र निन्दात्मक भाषाकें स्वतः निष्कर्षक रूपमे प्रयोगक जोखिम अछि। व्यक्तिपर असिद्ध दोषारोपणक पुनर्प्रकाशनसँ बचि कऽ केवल साक्ष्य-आधारित तथ्य स्पष्ट रखब उचित अछि।

७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि

'अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि' डिजिटल साक्षरता आ सम्पादकीय प्रमाण-रक्षाक संधिस्थलपर अछि। मूल पाठ पत्र, एसएमएस आ ई-

पत्रक माध्यमसँ डर-दबाव, छद्म पहिचान आ अनधिकृत सामग्री-प्रयोगक चर्चा करैत अछि। सन्देश प्राप्त होयब आ अपराध सिद्ध होयब दुनू अलग अवस्था अछि।

कुनो इलेक्ट्रॉनिक सन्देशकेँ जाँचैत मूल शीर्षक, प्रेषक-पता, पूर्ण हेडर, सर्वर-समय, उपलब्ध डिजिटल अभिलेख आ अनुक्रमणिका सुरक्षित राखब प्राथमिक आवश्यकता अछि। आन्तरिक अनुमान वा सामाजिक परिचयक आधारपर ककरो पहचान निश्चित करब जोखिमपूर्ण अछि। तकनीकी प्रमाणक अभावमे प्रक्रिया-सम्बन्धी आरोपक भाषा सशर्त रहबाक चाही।

एहि प्रबन्धक आधुनिक उपयोगिता डिजिटल सामग्रीक अखण्डता आ प्रकाशनक नैतिकता पर अछि। समयक संग तकनीक आ कानून बदलैत अछि; पुरान पद्धतिकेँ अद्यतन सुरक्षा-निर्देश नहि मानि ऐतिहासिक सूचना-संसाधन रूपमे परखल जाय।

७४. इन्फॉर्मेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

सूचना-समाज, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधानकेँ संयुक्त करैत आलेख डिजिटल पहुँचक नागरिक अर्थ पूछैत अछि। सूचना बनावब, बाँटब, उपयोग करब आ पुनर्रचना आधुनिक आर्थिक-राजनीतिक गतिविधि अछि। मुदा सूचनाक तीव्र वितरण अपनेमे लोकतन्त्र अथवा समान अधिकार सुनिश्चित नहि करैत अछि।

भाषिक अल्पसंख्यकक स्थानीय सामग्री, सुलभ लिपि, डिजिटल शिक्षाक अवसर आ अपंगतासँग अनुकूल पहुँच नागरिक समानताक वास्तविक परीक्षा थिक। संविधानक अधिकार आ अन्तरराष्ट्रीय घोषणाक सिद्धान्तक तुलनामे दस्तावेजक विशिष्ट अनुच्छेद, लागू अधिकार आ संस्थागत दायित्व पहिचानल जाए तँ आलोचना स्थूल घोषणा नहि रहत।

मूल आलेखक उपलब्धि मैथिली भाषाक डिजिटल प्रश्नकें सार्वभौम अधिकार-विमर्शमे स्थापित करब अछि। एकर सीमा घोषणा, न्यायालयमे लागू अधिकार आ सार्वजनिक नीतिक बीच कानूनी भेदक अस्पष्टतासँ निकलि सकैत अछि।

७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र

‘भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र’

बहुभाषिक साहित्यक समेकित अध्ययन अछि। मूल प्रबन्ध बोयी भीमन्ना सन तेलुगु दलित साहित्यकारक चर्चा कऽ व्यक्तिगत पीडा, सामूहिक प्रतिरोध आ रूपात्मक सौन्दर्यकें एकसाथ परखबाक प्रयत्न करैत अछि। एकर मूल प्रश्न ई अछि जे सामाजिक अनुभवक विशिष्टता अनुवादमे केना उपस्थित रहैत अछि।

एक भाषाक जातिसूचक पद, श्रम-वस्तुक स्थानीय नाम, सम्बोधनक स्तर आ लोकसंस्कृतिक रूपक दोसर भाषामे सहज पर्याय नहि पबैत अछि। अनुवादक समीक्षामे प्रत्यक्ष मध्यवर्ती स्रोत, पाँतिक स्वर, अलंकारक राजनीतिक अर्थ आ नीतिकथा बनि जेबाक सम्भावना अलग परखबाक चाही। भारतीय रस-ध्वनि पद्धति अपनबैत सामाजिक असमानताक ठोस इतिहासकें सौन्दर्यक सार्वभौम श्रेणीमे विलीन नहि करब।

आलेखक पैघ उपलब्धि दलित काव्यकें साहित्यिक पद्धतिक केन्द्रमे राखब अछि। एकर पूर्ण विश्वसनीयता मूल भाषाक प्रामाणिक रचना, गद्य/पद्यक लक्ष्य-पाठ आ अनुवादक भूमिकाक यथार्थ मिलानपर आश्रित अछि।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

दलित साहित्य, सार्वजनिक संस्था आ डिजिटल प्रमाणक प्रश्नपर स्वानुभव महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि, मुदा आरोप, निर्णायक इतिहास आ प्रत्यक्ष प्रमाणक श्रेणीकें स्पष्ट अलग राखब अनिवार्य अछि।

७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोषक चर्चा भाषा-अभिलेखन, विद्वत् परम्परा आ कोशक उपयोगिताकें जोड़ैत अछि। मूल प्रबन्ध मिश्रक जीवन-कर्मक प्रसङ्गसँ शब्दकोषक आवश्यकता दर्शबैत अछि। विद्वानक जीवन-वृत्त आ प्रकाशित कोशक सम्पादकीय गुणवत्ता अलग विषय अछि; पहिलक प्रतिष्ठा दोसरक प्रविष्टि-शुद्धताक स्वतः प्रमाण नहि।

कोशमे एकहि शब्दक भिन्न अर्थ, उपभाषिक चिह्न, व्युत्पत्ति, उच्चारण आ साहित्यिक प्रयोगक सन्दर्भ अनिवार्य अछि। मैथिलीमे देवनागरी आ तिरहुता, तत्सम-तद्भव, देशज भेद तथा अंग्रेजी समतुल्यक चयनक कसौटी सेहो जाँचबाक चाही। कोश-समालोचनाक उचित पद्धति व्यापक प्रशंसाक बदला प्रतिनिधि नमूनाक क्रमवार परीक्षण होयत।

एहि मूल लेखनक उपलब्धि साहित्येतिहासमे कोशकारक योगदानकें केन्द्रबिन्दु बनायब अछि। तथ्यगत अनुसन्धान लेल कोशक वास्तविक संस्करण, प्रकाशन-वर्ष, सम्पादकीय प्रस्तावना आ नमूनागत त्रुटि-सारणी जोड़ब उचित अछि।

७७. गङ्गेश उपाध्याय

गङ्गेश उपाध्यायक जीवन आ 'तत्त्वचिन्तामणि' सम्बन्धी मूल आलेख मिथिलाक नव्य-न्याय परम्पराक बौद्धिक महत्त्व पहिचानैत अछि। एकर मुख्य प्रश्न ई अछि जे ज्ञानक प्रमाणीकरण, पदक सूक्ष्म परिभाषा आ तर्कक संरचना केना समकालीन भाषिक आलोचनामे योगदान दैत अछि। दार्शनिक महानताक सामान्य घोषणा पर्याप्त नहि; प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दप्रमाणक तर्कविन्यास ठोस रूपमे चिन्हब जरूरी अछि।

गङ्गेशक जीवनीसम्बन्धी परम्परागत कथा आ लिखित दार्शनिक ग्रन्थक कालानुक्रम एके स्तरक प्रमाण नहि। नव्य-न्यायक तकनीकी पदक मैथिली व्याख्यामे 'अवच्छेदक', 'व्याप्ति', 'पक्षता' सन विशिष्ट संकल्पनाकें स्वतन्त्र

स्पष्टीकरण चाही। मूल समीक्षामे ऐतिहासिक मिथिला आ ग्रन्थकारक बुद्धिक विकासक सम्बन्ध आकर्षक अछि, मुदा एकर अभिलेखीय कसौटी स्पष्ट रहबाक चाही।

पहिनुक सम्पादकीय खण्ड २८मे 'तत्त्वचिन्तामणि'क स्वतंत्र समीक्षा सम्पन्न होयबाक कारण एतय पुनरावृत्ति नहि, बल्कि वर्तमान मूल प्रबन्धक दार्शनिक व्याख्या आ पूर्व मूलपाठ-परीक्षणक अन्तर केन्द्र होयत।

७८. भामती (चतुःसूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

'भामती (चतुःसूत्री)'क मूल आलोचनामे वाचस्पति मिश्रक अद्वैत-व्याख्याक दार्शनिक प्रश्न अनूदित मैथिली माध्यमसँ सामने अबैत अछि। अध्यास, ब्रह्म-जिज्ञासा, शास्त्रक प्रामाण्य आ मुक्ति-सम्बन्धी तर्कक मध्य सम्बन्ध क्रमिक अछि; एहि हेतु केवल ग्रन्थक कथासार देनाइ पर्याप्त नहि।

शंकराचार्यक सूत्रभाष्य आ वाचस्पतिक विवेचनक फरक स्तर पहिचानल जाए। मैथिली अनुवादमे यदि दार्शनिक पद सरल कएल गेल अछि, तँ सरलता तर्कक आवश्यक सूक्ष्मता नष्ट करैत अछि, कि नहि, से मूल सूत्र-भाष्य-टीकाक समानान्तर पाठमे जाँचबाक चाही। पश्चिमी आदर्शवादक तुलना उपयोगी भऽ सकैत अछि, जँ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रभावक दावा नहि कएल जाय।

एहि मूल प्रबन्धक समालोचनात्मक मूल्य पूर्व खण्ड २९क ग्रन्थाधारित परीक्षणसँ तुलनामे विशेष खुलत। पुनः दार्शनिक शब्दावलीक सूची नहि, बल्कि एतय मूल आलोचक कोन प्रतिज्ञा स्थापित करैत छथि आ किनकर प्रमाण दैत छथि, ओ प्रश्न मुख्य अछि।

७९. आत्मतत्त्वविवेकः एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

‘आत्मतत्त्वविवेक’क विस्तृत मूल आलोचना उदयनाचार्यक आत्मा-क्षणिकवाद-स्मृतिक प्रश्नक संग भारतीय आ पाश्चात्य दार्शनिक तुलनाकें जोड़ैत अछि। स्थिर आत्माक स्थापना आ अनुभवक निरन्तरता पर बौद्ध प्रतिपक्षक तर्क अलग जाँचब आवश्यक अछि। ‘स्मृति अछि, तँ आत्मा अछि’ सन संक्षिप्त सूत्र समग्र न्यायीय प्रतिपादनक स्थान नहि ले सकैत अछि।

मैथिली अनुवादक भाषिक क्षमता तखन परखल जा सकैत अछि जखन ‘प्रत्यभिज्ञा’, ‘समवाय’, ‘द्रव्य’ आ ‘क्षणिक’ सन पदक परिभाषाक समानता मूल पदानुक्रमसँ मिले। मूल प्रबन्ध अनुवाद-मीमांसा आ दार्शनिक मूल्याङ्कन दुनू करैत अछि, मुदा भाषिक सुगमता आ तर्कगत शुद्धता अलग कसौटी अछि।

पूर्व सम्पादकीय खण्ड ३०मे चारि मूल अनुवाद-खण्डक अध्ययन भऽ चुकल अछि। एहि इकाईक विशेष कार्य वर्तमान समेकित मूल समालोचनामे प्रयुक्त प्रमाण-पद्धति आ वैचारिक सीमाक परीक्षण अछि; पहिनुक निष्कर्ष केवल दोहराएब नहि।

८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

उदयनाचार्यक ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’पर मूल आलेख ईश्वरानुमान, कार्य-कारण, प्रमाण आ नास्तिक प्रतिपक्षक दार्शनिक क्रम पर केन्द्रित अछि। पाँच गुच्छक तर्क-विन्यासकें सामान्य श्रद्धापरक कथा बनेबाक बदला प्रत्येक प्रतिज्ञा, हेतु आ सम्भावित दोषक जाँच करबाक अछि।

मूल दार्शनिक तर्कमे ईश्वरक अस्तित्व, उपादानकारणक विश्लेषण आ व्याप्तिक स्थिति एक-दोसरासँ जुडल प्रश्न अछि; पश्चिमी प्राकृतिक धर्मशास्त्रसँ तुलना तखने उचित होयत जखन ‘प्रमाण’ शब्दक सांस्कृतिक-तार्किक अन्तर स्पष्ट

रह्य। मैथिली रूपान्तरक सटीकतामे न्यायीय लक्षण आ साधारण बोलचालक भेद महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड ३१मे ई ग्रन्थक विस्तृत स्वतंत्र समीक्षा सम्पन्न अछि। एतय लक्ष्य ई अछि जे वर्तमान मूल प्रबन्धक तर्क-प्रस्तुति, उद्धृत विपक्ष आ अनुमित निष्कर्षक सीमाक पुनर्परीक्षण हो; एकहि ग्रन्थक दू विवरणक पुनर्प्रकाशन नहि।

८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

‘तत्त्वचिन्तामणि’क अनूदित-विस्तारित संस्करणपर ई समेकित समीक्षा गङ्गेशोपाध्यायक प्रमाण-मीमांसाकेँ आधुनिक मैथिली पाठक लेल खोलैत अछि। ग्रन्थ उपन्यास वा काव्य नहि, तें ओकर साहित्यिक मूल्य मुख्यतः ज्ञान-विषयक भाषा, प्रतिज्ञाक संरचना आ व्याख्याक पद्धतिमे अछि।

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक पृथक् प्रमाणाधिकारक परीक्षणमे सामान्य उदाहरणसँ अवधारणाक सूक्ष्म सीमा मिटि जेबाक जोखिम अछि। तर्कक व्याख्यामे अवच्छेदक, संबंध, अभाव आ व्याप्तिक भेद राखल जाय। मूल प्रबन्धक आधुनिक तुलनाक उपयोग जँ केवल ‘दुनू एक्के बात’ कहबाक लेल हो, तँ ऐतिहासिक भिन्नता हेराइत अछि।

पहिनुक खण्ड २८क अध्ययन आ एहि मूल इकाईक पुनरावलोकनक बीच मूल पाठक पृष्ठ-प्रमाण आ अनुवादक निर्णयक मिलान आवश्यक अछि। एतेक भेलापर ई समीक्षा दार्शनिक लोकप्रियकरण आ कठोर न्यायीय पद्धतिक बीच न्यायसंगत सन्तुलन बनत।

८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

‘सीत-बसंत’क फील्डवर्क-आधारित खिस्सामे बहादुरगंज-किशनगंज क्षेत्रक सहयोगी श्री केशव महतो आ संकलनकर्ताक परिचय देल गेल अछि। लोककथाक एहि स्रोतस्थिति साहित्यिक मूल्यांकनक अनिवार्य अंश अछि:

कथाक पाठ केवल लिखित लेखकक कल्पना नहि, मौखिक परम्परा आ क्षेत्रीय स्मृतिक साक्ष्य होइत अछि।

फील्डवर्कक आलोचनामे कथावाचक, संग्रहक स्थान-तिथि, बोलीक वास्तविक उच्चारण, सांस्कृतिक मुहावरा आ रेकॉर्डिङ-प्रक्रियाक स्पष्ट विवरण अपेक्षित अछि। कथा लिखित रूपमे उतरलापर कथाकारक विराम, श्रोताक प्रतिउत्तर आ स्थानीय उपमानक कतेक भाग बदलल गेल, ई प्रश्न महत्वपूर्ण अछि।

मूल प्रबन्धक उपलब्धि लोकस्रोतक योगदानकर्ताकेँ नामसहित दर्ज करब अछि। एकर पूर्ण पाठसिद्धि विभिन्न कथारूपक तुलना आ जातीय/स्थानीय प्रसारक सहायक प्रमाणसँ स्थापित होएत; एकटा संस्करणकेँ समस्त लोकपरम्पराक अन्तिम रूप नहि मानल जाय।

८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”

मुन्नाजीक ‘माँझ आंगनमे कतिआएल छी’ पर मूल आलोचना रूबाइ-गजलमे साहित्यिक उपेक्षाक अनुभवकेँ काव्यात्मक विरोधाभास रूपमे पढ़ैत अछि। माँझ आंगनमे रहितहुँ कतियायल होयब घरक भीतर अधिकारहीनताक तीक्ष्ण बिम्ब अछि; एकरा केवल शब्द-चमत्कार मानल जाए तँ सामाजिक अर्थ घटि जाइत अछि।

मूल प्रबन्ध ‘कबीरक उलटबासी’सँ भिन्न साहित्यिक प्रसंग चिन्हैत अछि। एहि तुलनाक विश्वसनीयता गजलक संरचनागत स्वतंत्र शेर आ रूबाइक चारि पाँतिक अर्थ-समाप्तिक अलग परीक्षणसँ आएत। विरह, आत्मग्लानि वा संस्थागत बहिष्कारक विशिष्ट अर्थ पाँतिक अगिला-पाछिला सम्बन्धसँ खुलैत अछि, समीक्षकक सदिच्छासँ नहि।

इकाई ५१ आ एहि प्रविष्टिमे एकहि कृतिक उल्लेख अछि; एतय नव दृष्टि देबाक लेल मूल शेरक छन्दगत अनुशासन, आत्म-सम्बोधन आ व्यंग्यक ध्वनिक विश्लेषण विशेष उपयोगी रहत।

८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”

विनीत ठाकुरक ‘बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज’ दस गीतक संग्रह रूपमे प्रस्तुत अछि। मूल आलेख देवनागरीक संग मिथिलाक्षरक उपस्थितिक उल्लेख करैत अछि, जे पुस्तकक साहित्यिक सामग्रीसँ अतिरिक्त लिपिक सार्वजनिक पुनर्प्रयोगक प्रश्न खोलैत अछि।

‘दूधक कर्ज’क शीर्षक मातृत्व, परिवार, पोषण आ सामाजिक ऋणक अर्थसँ जुड़ि सकैत अछि; गीतसभक वास्तविक सम्बोधन, धुन आ संघर्षक परीक्षण बिना विशिष्ट वैचारिक निष्कर्ष अनुमान होयत। दुनू लिपिमे लिखित रूपक मिलान करैत मात्रा, संयुक्ताक्षर, विराम आ शब्दरूपक अन्तर शोधयोग्य अछि।

एहि समीक्षाक प्राप्त उपलब्धि गीत-संकलनक द्विलिपीय स्वरूपक पहिचानब अछि। लिपिक ऐतिहासिक महत्त्वक प्रशंसा आ साहित्यिक गीतक उपलब्धि अलग रहत; गीतक अन्तर्वस्तु, लय आ गेयता पर समान ध्यान अपेक्षित अछि।

८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”

संतोष कुमार मिश्रक ‘एना किए..?’ आ ‘पोसपुत’क मूल समीक्षा युवा कविताक प्रश्नवाचक स्वर आ मानवीय जीवनक विसंगतिपर केन्द्रित अछि। ‘एना किए..?’मे २४ कविता होयबाक विवरण मूल प्रबन्ध दैत अछि। संग्रहक प्रश्नसूचक शीर्षक न्याय, संबंध आ अनुभवक अनिश्चितता खोलैत अछि; केवल नैतिक समाधान ओकर अन्तिम लक्ष्य नहि।

‘पोसपुत’क नाममे परिवारक पोषण, सम्बन्धक वैधता आ सामाजिक मान्यताक संकेत अछि, मुदा प्रत्यक्ष कथानक देखेबा बिनु एतय ओ अर्थ निश्चित नहि मानल जाय। कविता आ कथागद्यक भाषा-विन्यास सेहो अलग आवश्यकताक अनुसार परखल जाय।

मूल आलोचकक आशावादी निष्कर्ष लेखकक नूतनतेक प्रति उत्साह देखबैत अछि। परन्तु युवा होयब स्वयं कलात्मक उपलब्धिक साक्ष्य नहि; विशिष्ट

कविता/कथाक संरचना, रूपकक अनिवार्यता आ पाठकीय अर्थक्षेत्र देखलापर मूल्याङ्कन अधिक ठोस बनत।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

दर्शन-समालोचना, लोकसाहित्य आ गीत-विवेचनमे एके अर्थबोधक पद्धति नहि चलत। प्रमाणमीमांसामे युक्तिक जाँच, लोकगाथामे क्षेत्रसाक्ष्य, आ पद्यमे भाषा तथा लय प्राथमिक अछि।

८६. दूर्वाक्षत

‘दूर्वाक्षत’ मूल प्रबन्ध यजुर्वेदीय मन्त्र, राष्ट्रभक्ति गीतक ऐतिहासिक दावा आ मिथिलाक दूब-अक्षत लोकरीतिक सम्बन्धपर चर्चा करैत अछि। शास्त्रीय मन्त्रक अर्थ, ओकर प्रयोजन आ लोकसमाजमे बदलल अनुष्ठान-दुनू अलग ग्रन्थीय इतिहास रखैत अछि।

‘विश्वक पहिल राष्ट्रभक्ति गीत’ सन प्रथमत्वक दावा आधुनिक राष्ट्रक अवधारणा पुरान मन्त्रपर आरोपित करबाक जोखिम रखैत अछि। यजुर्वेदक अध्याय-मन्त्र संख्या, शाखाभेद, प्राचीन भाष्य आ पाठान्तरक मिलान अनिवार्य अछि। मिथिलामे दूभि-अक्षतक प्रयोग लोकविधि होयब शास्त्रीय मन्त्रक एक मात्र व्याख्या नहि।

एहि प्रबन्धक मौलिक प्रश्न अनुष्ठानक सांस्कृतिक रूपान्तरण अछि। ओकर आलोचना शास्त्रीय प्रमाण, आधुनिक राष्ट्रवाद आ लोकक सामूहिक कार्य-प्रक्रियाकें अलग स्तरपर राखि करब अधिक न्यायपूर्ण अछि।

८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”

वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’क जीवन-कृतित्व सम्बन्धी मूल आलेख जन्मस्थान, स्थानीय संस्कार, मैथिली-हिन्दी साहित्यिक यात्रा आ सामाजिक चेतनाक परिचय प्रस्तुत करैत अछि। कविक सामाजिक सरोकारक मूल्य केवल जीवन-

संघर्षक घटनासँ नहि, वास्तविक पाँतिक भाषा, व्यंग्य आ लय-संरचनासँ निर्धारित होयत ।

यात्रीक बहुभाषिक लेखन आधुनिक मैथिली काव्यक सीमाकेँ हिन्दी साहित्यसँ जोड़ैत अछि, मुदा भाषा-अन्तरक अर्थबोधक फर्क महत्त्वपूर्ण अछि । मूल मैथिली कवितामे स्थानीय ध्वनि आ व्याकरण जकर अनुभव बनबैत अछि, ओकर हिन्दी रूपान्तर वा सामाजिक कथन अपन स्वतन्त्र असर रखैत अछि । मूल आलेखक उपलब्ध कविक लोकपरक जीवन-इतिहासकेँ साहित्यिक प्रश्नसँ जोड़ब अछि । तिथि आ जीवनीक स्रोतसँ सत्यापन, रचनाक प्रकाशनक्रम, आ भिन्न भाषाक पद्यक तुलनात्मक उदाहरण एकरा गहन इतिहास-विवेचन बनाएत ।

८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

हरिमोहन झाक जीवन-रचना सम्बन्धी मूल प्रबन्ध हास्य, सामाजिक व्यंग्य आ मैथिली आधुनिक गद्यक ऐतिहासिक विकासक प्रश्न उठबैत अछि । ‘कन्यादान’ सन कृतिक लोकव्याप्तिक कारण केवल विनोद नहि; परिवार, शिक्षा, विवाह आ सामाजिक प्रतिष्ठाक अन्तर्द्वन्द्व ओकर कथा-शिल्पकेँ गति दैत अछि ।

हास्यक वस्तु यदि स्त्रीक स्वाधीनता अथवा जातिगत व्यवहार हो तँ पाठककेँ ‘के हँसैत अछि’ आ ‘ककरापर हँसैत अछि’ प्रश्न अलग पूछबाक चाही । एहि प्रकार विशिष्ट दृश्यक समीक्षा लेखकक लोकप्रियता आ कृतिक सामाजिक आलोचना बीच भेद रखत ।

मूल आलेखक जीवनवृत्त उपयोगी आरम्भ अछि; पर प्रकाशित संस्करण, वर्ष, भाषा-रूप, कथाकारक मुखरता आ बाँचल सामाजिक प्रश्नक प्रमाणबद्ध विवेचन साहित्येतिहासमे ओकर टिकाउ योगदान बनत ।

८९. जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलपर मूल प्रबन्ध सामाजिक असमानता आ साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न ऐतिहासिक उदाहरणसँ खोलैत अछि । बंगालक अकाल आ

अमर्त्य सेनक तर्कक प्रसङ्गसँ लेखक गरीब जनक अनुभव आ आधिकारिक विवरणक मध्य दूरी देखेबाक प्रयत्न करैत छथि। मुदा अकाल-इतिहासक विशिष्ट कथनक तथ्यात्मक जाँच मूल शोध-प्रकाशनसँ आवश्यक अछि।

मण्डलक रचना-संसारकें जातीय वर्गीकरणक प्रतिनिधि मात्र कहब हुनकर कथाक विशिष्ट पात्र, स्थान आ भाषिक शिल्पकें कम कऽ देत। सामाजिक यथार्थ आ कल्पनाशील कथा-दुनूकें साथ राखैत लेखकक निर्णय-विधान, चरित्रक निज स्वार्थ आ गाँवक सार्वजनिक नियमकें परखबाक अछि।

एहि मूल लेखनक सामर्थ्य हाशियाक अनुभवकें साहित्यिक इतिहासक विषय बनायब अछि। जीवनी, सहस्र कथासंग्रहक उल्लेख आ ऐतिहासिक दावे अलग दस्तावेजीकरण पाओत तँ समीक्षा अधिक प्रमाणित होयत।

१०. प्रेमशंकर सिंह

प्रेमशंकर सिंहक 'मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी' सम्बन्धी प्रबन्ध साहित्यिक इतिहास लिखबाक पद्धतिक समीक्षा अछि। बीसम शताब्दी आ एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक कृतिसभकें आलोचनात्मक चयनमे रखबाक प्रश्न उठैत अछि। 'प्रिय-अप्रिय' मूल्याङ्कनक स्वतन्त्रता तखने साहित्यिक गुण बनैत अछि जखन लेखक अपन कसौटी समान रूपसँ लागू करथि।

काल-विभाजन, रचनाकारक सामाजिक स्थिति, भाषा-विधाक समन्वय आ प्रकाशित वर्ष साहित्यिक इतिहासक आधारभूत जानकारी अछि। एकहि लेखककें बहुत स्थान देब अथवा ककरो छूटि जाएब सामान्य रूपसँ दोष नहि, जँ ग्रन्थक घोषित सीमा प्रमाणित हो; छूटल कृतिमे विकासक्रम बदलैत हो तँ पुनर्विचार अपेक्षित अछि।

मूल प्रबन्धक महत्त्व समीक्षा-ग्रन्थकें इतिहासक स्वतन्त्र तर्क-विधान रूपमे देखब अछि। कृति-विशेषक निष्कर्ष आ स्रोत-उद्धरणक तुलनासँ एहन विमर्श मात्र लेखकीय सहमति-असहमतिसँ आगाँ जा सकैत अछि।

११. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

‘अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार’ अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीनक कथा-साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन अछि। मूल प्रबन्ध दुनू कथाकारकें पुरान रूपकात्मक ‘कनियाँ काकी’ सन पात्र-केन्द्रित परम्परासँ अलग आधुनिक सामाजिक अनुभवक लेखन रूपमे चिन्हैत अछि। कम लिखब साहित्यिक सर्जनात्मक विवशता अथवा चयन हो सकैत अछि; मात्रा अपनेमे मूल्यांकन नहि।

दुनूक कथामे कथन-दृष्टि, लोकभाषाक नाटकीय प्रयोग, दमनक अनुभव आ पात्रक आत्मनिर्णयक भिन्नता खोजब समीक्षाक फलदायी मार्ग अछि। शीर्षकक ‘हाथी चलए बजार’ लोकोक्तिक परम्परासँ सामाजिक विरोधक संदर्भ बनि सकैत अछि, मुदा उद्धृत कथा-दृश्यसँ एकर निश्चित अर्थ परखल जाय।

मूल आलोचनाक उपलब्धि कथेतिहासमे छूटल आवाजक पुनर्प्रवेश अछि। वास्तविक संग्रहक सूची, प्रथम प्रकाशन आ प्रतिनिधि कथाक पाठसिद्धि जोड़ल जाए तँ ऐतिहासिक स्थानक दावा अधिक विश्वसनीय बनत।

१२. मैथिलक वर्तमान समस्या

‘मैथिलक वर्तमान समस्या’ नामक मूल आलेख श्रम-पलायन, गामक बदलैत रूप, भाषा-स्मृति आ आर्थिक संकटकें सार्वजनिक विमर्शक प्रश्न बनबैत अछि। गाम सुनसान भऽ जेबाक बिम्ब लेखनकें भावनात्मक शक्ति दैत अछि, मुदा प्रदेशक जनगणना, रोजगार आ शिक्षाक आँकड़ा बिना सम्पूर्ण सामाजिक प्रवृत्तिक मापन नहि होयत।

मूल प्रबन्ध पलायनकें एक स्तरपर श्रमक अवसर आ दोसर स्तरपर सांस्कृतिक क्षतिक रूपमे देखैत अछि। एतय स्थलान्तरित लोकक वित्तीय सहयोग, स्त्रीक बदलैत कृषि-भूमिका आ शिक्षित युवाक नव संस्थागत संबंध सेहो जाँचबाक

अच्छि। एकरेखीय 'पलायन अभिशाप' कथन सामाजिक परिवर्तनक विविध रूप हेराए सकैत अछि।

समीक्षाक उपलब्धि भाषा-अर्थव्यवस्थाक अन्तरसम्बन्ध स्पष्ट करब अछि। युग-विशिष्ट साक्ष्य, मौखिक जीवन-वृत्त आ सामाजिक वर्गवार अनुभव जोड़ला पर ई निबन्ध इतिहासक मजबूत सामग्री बनत।

१३. विदेह सम्पादकीयसँ

'विदेह सम्पादकीयसँ'क मूल पाठ सहकर्मीसभक मैथिली भाषापर प्रतिक्रिया आ व्यक्तिगत अनुभवक माध्यमसँ भाषिक पहिचानक दैनन्दिन दृश्य रचैत अछि। गैरमैथिली श्रोताक 'मीठ भाषा'क टिप्पणी एक सामाजिक संपर्कक जीवित प्रमाण अछि, मुदा भाषा-श्रेष्ठताक वैज्ञानिक अथवा तुलनात्मक सिद्धान्त नहि।

व्यक्तिगत अनुभव सम्पादकीय लेखनमे सत्यनिष्ठ कहनिहारक उपस्थिति दैत अछि। तकर विपरीत प्रभाव ई हो सकैत अछि जे निजी संस्मरणक व्यापक जनमतक रूपमे प्रस्तुत कयल जाय। अलग पाठक-समुदायक आभासी पत्राचार, भाषिक राजनीति आ साहित्यिक पहुँचक दावे अभिलेखसँ जाँचबाक चाही।

एहि संकलनक मूल्य विदेह आन्दोलनक सम्पादकीय भाषा आ समयक्रमक इतिहासमे अछि। वास्तविक अंक, प्रकाशनतिथि आ लिखित पाठक-प्रतिक्रिया चिह्नित रहला पर साहित्यिक आत्मप्रतिवेदन विश्वसनीय सार्वजनिक दस्तावेज बनि उठैत अछि।

१४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका

<http://www.videha.co.in/> ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

ई दीर्घ मूल इकाई 'गजेन्द्र ठाकुर'क सम्पादकीय आत्मपरिचय आ विद्यापति-विमर्शसँ आरम्भ होइत अछि। एतय आत्मवर्णन, साहित्येतिहासक विवाद, विदेहक संस्थागत दावा आ सांस्कृतिक आलोचना अनेक स्तरमे उपस्थित अछि।

एहि प्रकारक संकलित लेखनकेँ एकरूप निबन्ध मानि पढ़लासँ विषयक परिवर्तन अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

विद्यापति नामक बहुलता, लोकपदावली आ संस्कृत-अवहट्टक ग्रन्थकारक पहिचान सम्बन्धी बहस मूल इकाई ४९ आ पहिनुक ३८सँ जुड़ैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक पृष्ठाधार मिलाओल जाए तँ नव प्रमाण आ पुरान स्थापना अलग देखबामे आएत।

लेखकक डिजिटल साहित्य-आन्दोलनमे भूमिका ऐतिहासिक अध्ययनक विषय अछि, मुदा कृतिक मूल्य, लेखकीय आत्मविश्वास आ संस्थाक इतिहास तीनू अलग प्रमाण माँगैत अछि। एहि दीर्घ दस्तावेजक उपयोग संकलित अभिलेख रूपमे करब, प्रत्येक दावेकेँ अन्तिम तथ्य मानब नहि।

१५. “प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!": स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल

‘प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!’ कुणालक प्रेम-चतुष्टयक पहिल नाटिका रूपमे पहिचानल गेल अछि। लोकनाट्यक गीत-नृत्य-बहुल विस्तारसँ हटि कम पात्र आ गहन मानसिक संघर्षक व्यवस्था एहि रूपक विशेषता अछि। श्रुवावतीक प्रेम-निर्णय सामाजिक अनुमोदनक प्रतीक्षा करैत अछि कि आत्मबलक आधार पर टिकैत अछि, ई मूल प्रश्न अछि।

पात्रक प्रेमक प्रतिज्ञा आ ओकर नैतिक परीक्षा एके बात नहि। नाटकीय संघर्ष विश्वासक कथन, बाहरी दबाव आ निर्णायक कर्मक मध्य भिन्नता बनबैत अछि। मूल आलेख ‘स्त्री-कर्तृत्व’पर बल दैत अछि; ओहि दावाकेँ पात्रक आवाजक वास्तविक विस्तार आ अन्तिम समाधानक संरचनासँ परखल जाय।

एहि समीक्षाक उपलब्धि प्रेमकथाकेँ आत्मनिर्णयक प्रश्न बनबैत अछि। नाटिकाक मितव्ययी रूपशिल्पमे मौन, दृश्य-परिवर्तन आ शास्त्रीय स्रोतक रूपान्तरणक प्रमाण सँ मूल्याङ्कन अधिक सुस्पष्ट होयत।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

आत्मकथन, सम्पादकीय साक्ष्य आ लोक-प्रेमक रंगमंच—तीनू रूपमे लेखकक दावे स्वयं ऐतिहासिक प्रमाण नहि। पाठगत निर्णय, अनुभव-स्थितिक पारदर्शिता आ स्वतंत्र जाँचक समन्वय आवश्यक अछि।

१६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा

केदारनाथ चौधरीक समीक्षा सम्बन्धी मूल आलेख निजी संस्मरणक एक श्रव्य प्रसङ्गसँ आरम्भ होइत अछि: रातिक फोनक मैथिली संवाद एक तमिलभाषी सहकर्मीकेँ आकर्षित करैत अछि। ई दृश्य मैथिली भाषाक लोकानुभूतिक प्रमाण अछि; ‘मीठ’ ध्वनिक प्रशंसा साहित्यिक कृतिक मूल्याङ्कनक पर्याप्त मापक नहि।

केदारनाथ चौधरीक रचनासँ जुड़ैत आत्मपरक स्वर समालोचनामे समीक्षकक उपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। निजी परिचय कृतिक संवेदनशील पाठमे सहायता करैत अछि, मुदा प्रशंसा अथवा अविश्वासक पूर्वनिर्णय बनेबाक जोखिम सेहो रखैत अछि। आलोचनामे उपन्यासक वास्तविक कथन-दृष्टि, पात्रक संकट आ सामाजिक दृश्यकेँ व्यक्तिगत स्मृतिसँ स्वतंत्र पढ़ब चाही।

मूल आलेखक मूल्य मैथिली भाषाक बोलल अनुभव आ साहित्यिक स्मृतिक संगम अछि। एहन प्रसङ्गक स्पष्ट स्रोत-चिह्न आ कृतिक पृष्ठसाक्ष्य जोड़ला पर जीवनकथा आ साहित्यिक मूल्याङ्कनक भेद सन्तुलित रहत।

१७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण

‘विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह’ पौराणिक आख्यानक नाट्यरूपान्तरणक आलोचना अछि। सुकन्या-च्यवनक कथा प्रेम, वयस्कत्व, देहक परिवर्तन, पहचान आ निष्ठाक प्रश्न उठबैत अछि। नायिकाक निर्णय केवल ‘आदर्श पत्नी’क प्रमाण मानल जाय तँ कथा स्त्रीक स्वतन्त्र विवेककेँ कम कऽ देत।

मूल विवेचन 'हृदय-दृष्टि' आ रूप-आत्माक भेदद्वारा बाह्य काया बदललाक बादो सम्बन्धक पहचानक समस्या खोलैत अछि। अभिनयक दृष्टिसँ भ्रम आ पहचान-प्राप्तिक क्षण विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ दर्शक जे जनैत अछि से पात्र कखन जनैत अछि, एहि अन्तरसँ रंगमंचीय तनाव बनैत अछि।

एहि समीक्षाक उपलब्धि मिथकीय कथा केँ आधुनिक नैतिक प्रश्नक परीक्षणमे बदलब अछि। मूल आख्यानक अलग-अलग संस्करण आ कुणालक नाट्यरूपक दृश्य-भेदक तुलना करब आवश्यक अछि, जाहिसँ पुनर्रचनाक स्वतंत्र रचनात्मकता स्पष्ट होय।

१८. केदार नाथ चौधरीक-अबारा नहितन

केदारनाथ चौधरीक 'अबारा नहितन' सम्बन्धी मूल आलेख उपन्यासक आरम्भमे जीवन-संकटक तीव्र आत्मानुभव अनैत अछि। मैट्रिक परीक्षामे असफलताक प्रसङ्ग, एकमी पुल आ बागमतीक किनारक स्मृति कथकक जीवन-वृत्तान्तकेँ नाटकीय धरातल दैत अछि। ई प्रसङ्ग उपन्यासक पात्रक कथन थिक कि लेखकक आत्मकथात्मक टिप्पणी, से वास्तविक पाठसँ स्पष्ट होयबाक चाही।

गामक भोजन-गन्ध, नदी आ परीक्षा-व्यवस्थाक संग स्मृतिक सम्बन्ध मैथिली आत्मकथात्मक गद्यक विशिष्ट शक्ति बनि सकैत अछि। मुदा तीव्र संकटपर आधारित रचनामे आलोचकक भूमिका अनुभवकेँ सनसनीक वस्तु नहि, पात्रक सामाजिक परिस्थिति आ कथन-विन्यासक प्रश्न बनेबाक अछि।

मूल समालोचनाक योगदान साहित्य आ आत्मवृत्तक सीमारेखा पर ध्यान अछि। 'अबारा नहितन'क प्रमाणित शीर्षक, संस्करण, वास्तविक कथान्त आ कथावाचकक अवस्थितिक जाँच बिना समग्र मूल्यांकन अधूरा मानल जाय।

१९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम

‘प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार’ कला आ प्रेमक नाटकीय तनावकें केन्द्रमे रखैत अछि। श्वेता आ अतिरथक सम्बन्धमे कलाकारक स्वतंत्र सृजन, प्रियकरक अपेक्षा आ आत्मनिर्णयक प्रश्न एकठाम अबैत अछि। कला-प्रेमक रूपककें सरल नीतिकथा बनाओल जाए तँ दुई पात्रक परस्पर विरोधक जटिलता हेराइत अछि।

मूल आलेख भारतीय रस-ध्वनि आ पाश्चात्य अस्तित्ववादी विचारक सहायता लैत अछि। एहि दृष्टिसभक अर्थ प्रभावी तखने अछि जखन नाटकक विशिष्ट दृश्य जाँचल जाय—श्वेता कोन निर्णय स्वयं लैत अछि, अतिरथ कला आ प्रेमक बीच कोन सीमा स्वीकार करैत अछि, आ अन्तिम रूपान्तरणमे के बदलैत अछि।

समीक्षाक उपलब्धि प्रेमकें स्वामित्वक रूपमे नहि, नव आविष्कारक सम्भावना रूपमे प्रश्न करब अछि। नाटकक मूल दृश्यक्रम आ कलाकार-दर्शक सम्बन्धक ठोस प्रदर्शन-संकेत एकर मूल्याङ्कनकें अधिक सघन बनाएत।

१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम

‘प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र’ पौराणिक पुनर्कथनक भीतर ज्ञान, रूप, श्राप आ दाम्पत्य-निष्ठाक परस्पर विरोध अनैत अछि। अष्टावक्रक देहगत भिन्नता आ ज्ञानक ऊँचाइ एक-दोसराक विकल्प नहि; नाटक यदि एहि द्वन्द्वक सहायता लैत अछि तँ परीक्षा देनिहार आ परीक्षा लेनिहार दुनू पात्रक नैतिक अधिकार जाँचबाक चाही।

मूल समीक्षा शास्त्रार्थ, उर्वशी-अस्वीकार आ रूपान्तरणक अर्थमे बहुविध भारतीय-पाश्चात्य तुलनात्मक दृष्टि अनैत अछि। एतय कथा-स्रोत, चरित्रक नाट्यपरिवर्तन आ आधुनिक व्याख्याक स्तर अलग राखल जाए। अलौकिक

घटना नाटकमे चरित्रक कर्मक स्थान लेत कि ओकर मानसिक निर्णयक प्रतीक बनत, एहि अन्तरपर निष्कर्ष निर्भर अछि।

प्रेम-चतुष्टयक एहि अन्तिम नाटकक शक्ति ज्ञानक मर्यादा आ प्रेमक परीक्षा पर संवाद उठबैत अछि। स्त्री पात्रकें स्वायत्तता देल गेल कि केवल पुरुष-ज्ञानक पुष्टि बनाओल गेल, से संवाद आ कथान्तक साक्ष्य सँ परखल जाय।

१०१. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' क बहन्ने

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' सम्बन्धी मूल आलेख भाषिक पहिचानक व्यक्तिगत संस्मरणसँ प्रारम्भ होइत अछि। पटना विद्यालयक सहपाठीक मैथिली सम्बन्धी श्रेष्ठताबोध आ अन्य भारतीय भाषा-भाषी मित्रक प्रश्न सांस्कृतिक पहिचानकें जटिल बनबैत अछि। प्रतिष्ठाक अनुभव सच्चा होइतहुँ ओकरा सार्वभौम सांस्कृतिक श्रेणी नहि मानल जा सकैत अछि।

'प्रेम'क साहित्यक मूल्यांकनमे लेखिकाक कविता अथवा गद्यक स्वतंत्र शैली, स्त्री-अनुभव आ भाषा-चयनक भूमिका प्राथमिक अछि। चित्रकला, सिक्की-कला अथवा सामाजिक परम्पराक प्रतिष्ठा साहित्यिक पाठक विशिष्ट शिल्प-सफलताक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। एहि बिन्दुपर मूल विमर्शक प्रारम्भिक संस्मरणसँ पाठक समीक्षा दिस स्पष्ट संक्रमण जरूरी अछि।

आलेखक उपयोगिता मैथिली भाषिक गौरवक सामाजिक संस्मरणकें साहित्यिक अनुभवक संग जोड़ब अछि। आत्मीय भाषाक भाव-विन्यास आ स्त्री लेखिकाक स्वतंत्र रचनात्मक स्थिति दुनूकें समान सम्मान देब चाही।

१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

'शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह' तीन भिन्न पुस्तकक एक साथ आलोचना अछि। मूल प्रबन्ध 'शेखर प्रसंग'कें सुधांशु शेखर चौधरी विषयक शोध-आधारित कृति, 'ओ दिन ओ पल'कें संस्मरणात्मक गद्य आ 'एहो

छली सिनेह'कें कथा-संग्रह रूपमे पहिचानैत अछि। कृतिसभक विधागत पृथकता एहि समीक्षाक पहिल शर्त अछि।

शोधकृति तथ्य-साक्ष्य, स्रोतक पारदर्शिता आ लेखकक अनुमानक सीमा माँगैत अछि; संस्मरण समयक दूरी आ स्मृतिक चयनपर निर्भर अछि; कथा कल्पनात्मक पात्रक आन्तरिक सत्यसँ मूल्याङ्कित होइत अछि। एहन तीनूकें 'मर्मस्पर्शी' सन एक विशेषणमे समेटब आलोचनात्मक अस्पष्टता बढ़ाएत।

मूल आलेखक उपलब्धि एक लेखकक विधागत बहुरूपता देखब अछि। प्रत्येक पुस्तकक प्रतिनिधि प्रसङ्ग, प्रकाशन-वर्ष आ व्यक्तिकथन-कथात्मक उपकरणक अलग विवरण एकरा सुदृढ तुलनात्मक अध्ययन बनाओत।

१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा

शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा मूल रूपसँ 'बात-बातपर बात'क चारि खण्ड, 'मर्मान्तक-शब्दानुभूति', 'हमर अभाग: हुनक नहि दोष' आ 'साक्षात्'क संस्मरणात्मक जगत पर विचार करैत अछि। समृद्ध स्मृति-वृत्तान्तक मूल्य ओकरा यथावत ऐतिहासिक घटना मानि लेने नहि, बल्कि कथनकारक चयन आ समयबोधक परीक्षणसँ खुलैत अछि।

संस्मरणकार ककरा याद करैत छथि, ककरा ओझरि दैत छथि, स्मरणक समय घटना कतेक बदलि जाइत अछि—एहि प्रश्नसभसँ आत्मपरक गद्यक नैतिक स्वर पहिचानल जा सकैत अछि। जीवनक सच्चाईक दावा आ साहित्यिक सत्यक अनुभव दू स्तर अछि।

मूल आलेखक उपयोगिता मैथिली संस्मरण साहित्यक दीर्घ रचनात्मक विस्तारक पञ्जी बनब अछि। इकाई १०५मे समान विषयक विस्तृत सामग्री अछि; अतः एहि अध्ययनक निष्कर्षसँ ओकर पुनरावृत्ति चिन्हि नव सामग्री अलग लिखल जाय।

१०४. नचिकेताक समीक्षा

नचिकेताक साहित्यसम्बन्धी मूल आलोचना पद्य-गद्यक अर्थसघनताक प्रश्नक संग आधुनिक नाट्य-संरचना पर पहुँचैत अछि। बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे अधिक अर्थ कहबाक सम्भावना पद्यक प्रमुख शक्ति भऽ सकैत अछि; मुदा गद्य आ रंगमंचमे मौन, विराम आ दृश्यक संयोजन सेहो सघन अर्थ बनबैत अछि।

‘मध्यमपुरुष एकवचन’ आ ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’ सन अलग कृतिमे सम्बोधन, प्रतीक्षा आ पात्रक अस्थिर पहचानक भिन्न प्रयोग जाँचबाक अछि। सामाजिक व्यंग्यक तीक्ष्णता कथनकारक मतक कारण मात्र नहि; दर्शकक समक्ष विरोधी पात्र कतेक देर एक मंचपर टिकैत छथि, एहि संरचनासँ ओकर परिणाम निर्धारित होइत अछि।

इकाई ५४, ५५ आ ५८क संग वर्तमान इकाईक स्पष्ट अन्तर्सम्बन्ध अछि। एकर अलग योगदान नचिकेताक समग्र लेखनक विधागत यात्रा चिन्हब होयत, सामान्य पद्य-गद्य परिभाषाक पुनरावृत्ति नहि।

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्यपर विस्तृत मूल प्रबन्ध ‘बात-बातपर बात’क चारि खण्डक विस्तृत आलोचना करैत अछि। ‘मर्मान्तक-शब्दानुभूति’ सन शीर्षक स्मरणमे शब्द आ भावनाक परस्पर सम्बन्ध उजागर करैत अछि; ‘हमर अभाग: हुनक नहि दोष’ आत्मदोषारोपण आ सम्बन्धक पुनर्व्याख्याक सम्भावना खोलैत अछि।

संस्मरणक समयरेखामे घटना, पुनर्स्मरण आ बादक नैतिक मूल्यनिर्णय तीन अलग बिन्दु अछि। ककरो जीवनक अभिलेख अपन कथा-पात्रक समान नहि; लेखकक प्रखर कथात्मक स्वातन्त्र्य रहितहुँ जीवित व्यक्तिक सन्दर्भमे सावधानी जरूरी अछि। मूल आलेखक समेकितता तखन प्रभावी अछि, जखन चारू खण्डक क्रमिक भाषा-परिवर्तन देखाओल जाय।

इकाई १०३क संक्षिप्त टिप्पणीसँ तुलना करैत एतय विशिष्ट संस्मरणक घटना, शैली, आत्म-उपहास आ सामाजिक स्मृतिक साक्ष्य अधिक गहिराईसँ परखल जाय। लेखकक विश्वसनीयताक सामान्य प्रशंसा साहित्यिक विश्लेषणक विकल्प नहि।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

संवाद, संस्मरण आ नाट्यप्रस्तुतिक विस्तार विभिन्न कथन-पद्धति माँगैत अछि। समान जीवन-घटना किछु लेखमे आत्मकथात्मक चिन्ह अछि आ किछुमे कला-रूपक; एहि भेदकेँ आलोचनामे सुरक्षित राखब चाही।

१०६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'पर मूल आलेख सामाजिक निम्नवर्गक गरिमापूर्ण प्रस्तुति आ मैथिली रंगमंचमे जातिसूचक हास्यक राजनीतिक अर्थ पूछैत अछि। प्रबन्ध लेखकक अनुसार 'भ्रमर'क लिखनाइ प्रतिष्ठित मंचीय हास्यक विरोधमे वंचित लोकक स्वतन्त्र स्वाभिमान रचैत अछि। ई स्थापना सामाजिक आलोचनाक उपयुक्त विषय अछि।

महेन्द्र मलंगिया अथवा अन्य रचनाकारक नाटकमे आपत्तिजनक शब्दक उपस्थिति आ लेखकक समग्र मनसाय एकहि बात नहि। विशिष्ट संवाद कथामे आलोचनात्मक रूपसँ प्रस्तुत अछि वा हँसीक निमित्त अनुमोदित, से संदर्भ, पात्र आ दर्शकक प्रतिक्रियासँ जाँचबाक अछि। एकर बिना 'भ्रमर' बनाम 'अन्य'क द्विभाजन अतिसरलीकरण बनि सकैत अछि।

मूल विमर्शक उपलब्धि भाषा-हिंसाक सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्न उठब अछि।

सकारात्मक रूपसँ 'भ्रमर'क पाठक मौलिक पात्र-संरचना आ मंचीय उपलब्धि पहिचानल जाए तँ तुलनाक वास्तविक आधार अधिक सशक्त बनत।

१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन

नरेन्द्र झाक काव्यपर मूल आलेख दृश्यात्मक प्रेमचित्र, देहक क्रिया आ विरहक भाषिक सौन्दर्यकेँ चर्चा करैत अछि। आरम्भक पद्यमे केश बाँधब-खोलब, शरीर

ढँकब-उधारब आ दृष्टिक स्थिरता बदललासँ व्यक्त मनोस्थितिक नाटकीय बिम्ब अछि। एहन पद्यक अध्ययनमे वक्ता आ वर्णित पात्रक नजरक भेद पहिचानब आवश्यक अछि।

श्रृंगारक बिम्बकें केवल रस-निष्पत्तिक सफल प्रयोग कहल जाए तँ स्त्री पात्रक स्वकीय अनुभव अदृश्य भऽ सकैत अछि। कोन उपमान अपन सामाजिक समयक रूढ़ि दैत अछि, कोन बिम्ब नव आत्मअनुभव रचैत अछि, से विशिष्ट पाँति पढ़ला पर स्पष्ट होयत।

मूल समीक्षाक उपयोगिता गेयता, भाव-परिवर्तन आ देहभाषाक अभिव्यञ्जना पर ध्यान दैत अछि। प्रत्यक्ष उद्धरणक स्रोत, रचनाक काल आ छन्द-विन्यासक पद्धतिगत जाँच जोड़ला पर कविक उपलब्धि-सीमा न्यायसंगत रूपेँ चिन्हल जा सकैत अछि।

१०८. रमानन्द झा ‘रमण’: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा

‘रमानन्द झा रमण: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा’ आलोचनात्मक मूल्यनिर्णयक अधिकार आ साहित्यिक मान्यताक आधार उठबैत अछि। मूल आलेख प्रसिद्ध प्रशंसा-वाक्यक सन्दर्भ अनैत पूछैत अछि जे पुरस्कार, विद्वता अथवा संस्थाक प्रतिष्ठा कृतिक वास्तविक गुणक कसौटी हो सकैत अछि कि नहि।

‘योग्य’ आलोचकक विचार महत्वपूर्ण अछि, मुदा योग्यता कोन विधागत ज्ञान, पाठ-साक्ष्य आ प्रतिपक्षक न्यायसँ निर्धारित होयत, से खुला प्रश्न अछि।

लेखकक वैचारिक असहमति वास्तविक भाषा-शिल्प अथवा रचनाक संरचनागत दोषक विशिष्ट प्रमाणबिना अन्तिम न्याय नहि बनि सकैत अछि।

समीक्षाक उपलब्धि साहित्यिक कैनेन पर प्रतिप्रश्न अछि। सीमा-रेखा खींचैत प्रत्येक निष्कर्षकें पुस्तक, संस्करण, पृष्ठ आ तुलना-साक्ष्यसँ जोड़ल जाए तँ व्यक्ति-केन्द्रित असहमति आलोचनात्मक पद्धति बनत।

१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)

हरिमोहन झा, जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह आ यात्रीक संयुक्त उल्लेख मैथिली साहित्यक अलग समय, विधा आ सामाजिक जीवन-जगतकेँ एक आलेखमे रखैत अछि। चारू व्यक्तिक प्रतिष्ठा अपन-अपन कारणसँ अछि: हास्य-उपन्यास, ग्रामीण कथा, साहित्येतिहासक विवेचन आ बहुभाषिक जनकाव्यक कसौटी एकरूप नहि।

संयुक्त जीवनवृत्तक उपयोग लेखकसभक बीच परस्पर सम्भावित विमर्श देखब अछि, नहि तँ विविध जीवनी केवल नाम-सूची बनि रहत। की हुनकर भाषा-चयन सामाजिक वर्गक अनुभवकेँ अलग प्रकारसँ चित्रित करैत अछि? लोकजीवनक प्रामाणिकता हेतु कथा, व्यंग्य आ संस्मरण कोन भिन्न उपकरण प्रयुक्त करैत अछि? एहि प्रश्नसभसँ वास्तविक तुलना बनत।

मूल संकलनक उपलब्धि समग्र साहित्यिक पञ्जीक दिशामे अछि। हर लेखकक निर्णायक कृतिक स्रोत, प्रकाशन-वर्ष, पाठकीय प्रभाव आ समीक्षात्मक प्रतिपक्ष अलग दर्ज होयब आवश्यक अछि।

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक मूल विस्तृत अध्ययन ‘घरदेखिया’ सँ ‘गुलो’ आ अन्य रचनाधरि लेखकीय विकासक समीक्षा करैत अछि। आरम्भिक कथा, पुनःलेखन आ राजकमल चौधरी सम्बन्धी मोनोग्राफक बीच सुभाषक लेखकीय स्वभाव बदलैत अछि। ‘बनैत बिगडैत’क पुनर्पाठ आ ‘गुलो’क सामाजिक सन्दर्भ केवल समयक्रम नहि, भाषा-शिल्पक गति पहिचानबाक अवसर दैत अछि।

मूल प्रबन्ध कमलानन्द झा सम्बन्धी विवाद सेहो जोड़ैत अछि। एहि स्थिति मे सुभाषक कृतिक कलात्मक विश्लेषण आ दोसर आलोचकक चयन-नीतिक आलोचना अलग अनिवार्य अछि। एक लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्धित उपेक्षाक प्रश्न उचित अछि, मुदा ककरो व्यक्तिगत मनसाय, जातिगत दृष्टि वा उद्देश्यक निश्चयात्मक दावा प्रत्यक्ष प्रकाशन-साक्ष्य बिना उचित नहि।

एहि विस्तृत पाठक मूल्य कथाक पात्रक सामाजिक स्वायत्तता, बदलैत कथन-भाषा आ आधुनिक मैथिली कथा-इतिहासमे बहुविध स्थानक अध्ययन अछि। 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव'क स्वतंत्र मूल ग्रन्थ सम्पादकीय खण्ड ५३मे अध्ययनक विषय रहत; अतः एतय ओकर समग्र व्याख्याक पुनरावृत्तिसँ बचि मूल समालोचनाक गुणवत्ता पर ध्यान दियौ।

१११. गोपाल झा 'अभिषेक' क 'आउ स्वप्न साझी करी': साहित्यिक अनुशीलन

गोपाल झा 'अभिषेक'क 'आउ स्वप्न साझी करी'क विस्तृत मूल आलेख समकालीन मैथिली कवितामे ग्रामीण स्मृति आ वैश्विक अनुभवक समन्वय खोजैत अछि। शीर्षकक 'साझी' शब्द कविक स्वप्नकँ एक निजी छवि नहि, पाठक आ समुदायसँ साझा संवाद बनबैत अछि। एहि प्रस्तावक साहित्यिक प्रमाण विशिष्ट कविता, बिम्ब आ वक्ताक स्वरसँ देखबाक चाही।

मूल समीक्षामे कविक उदात्त मूल्याङ्कन उपस्थित अछि। प्रश्न ई नहि जे कविक सामाजिक प्रतिबद्धता अछि कि नहि, बल्कि कविता केहन रूपमे अनुभवकँ भाषा बनबैत अछि—ग्रामीण लोकशब्द, अर्थक दोहराव, वैश्विक प्रतीक आ पद्यक लय परस्पर सहयोग करैत अछि अथवा केवल सजावटी सूची बनैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि कविता पढ़बाक एक खिड़की अछि, सम्पूर्ण कविता नहि।

खण्ड ४२क अन्तिम इकाई रूपमे एहि आलेखक एक विशिष्ट संकेत अछि: सम्पादकीय मूल्यांकनक पूरा क्रम लोक-अभिलेख, न्यायीय तर्क, विवाद, नाटक आ आधुनिक कवितासँ गुजरि साझा पाठकीय भविष्यक प्रश्नपर पहुँचैत अछि।

एहन समेकितता एकर उपलब्धि अछि; मूल पाठक दावाक स्रोत-परीक्षण लगातार आलोचनाक आधार रहबाक चाही।

अन्तरप्रकरणीय पाठ-सम्बन्ध

अन्तिम समूह जीवनी, कथा, संस्मरण, नाट्यरचना, कविता आ साहित्यिक इतिहासक बीच आवाजाही करैत अछि। लेखकक सांस्कृतिक भूमिका आ कृत्तिक वास्तविक शिल्पगत मूल्यांकन एकटा दोसराक विकल्प नहि बनय।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना : सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन। विदेह, संलग्न संयुक्त मूल-संस्करण; द्वितीय खण्डक अनुप्रयुक्त समालोचना १-111।

गजेन्द्र ठाकुर। संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण। विदेह, २०२६; मैथिली रूपान्तरक लक्ष्य-पाठ-सन्दर्भ।

समीक्षाक मूलाधार: गजेन्द्र ठाकुरक १६१०-पृष्ठीय संयुक्त प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना संस्करणक द्वितीय खण्ड। मूल पुस्तकक आन्तरिक सन्दर्भसभक स्वतंत्र बाह्य सत्यापनक स्थान एहि सम्पादकीय विश्लेषणमे निर्दिष्ट राखल गेल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त समालोचना



साहित्यक समीक्षाक पुनर्परीक्षण

मिथिलाक इतिहास, लोकसाहित्य, कथा-उपन्यास, कविता, नाटक, भाषाविज्ञान, दलित विमर्श आ दर्शनपर लिखल १११ मूल समालोचनाक एहि खण्डमे प्रतिज्ञा, पाठ-साक्ष्य, तर्क आ समीक्षात्मक सीमाक अलग-अलग परीक्षण कयल गेल अछि। ई सम्पादकीय ग्रन्थ साहित्यक समीक्षाकें सेहो गम्भीर पुनर्पाठक विषय बनबैत अछि।



विदेह वेबसाइट



विदेह डिजिटल अभिलेख

मूल कृतिकार : गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार